रांची एक्सप्रेस
62
साल से लगातार...
। जनपथ पत्रकारिता।
देसी अंदाज
नया मिजाज

रांची एक्सप्रेस

1963 से लगातार आपकी सेवा में

epaper.ranchiexpress.com | वर्ष-62 | अंक-60 रांची | गुरुवार 17 अक्टूबर 2024, संवत् 2081 | पृष्ठ -12 | मूल्य 4 रु.

इसरो बता रहा है कहां लगी आग, आप मना कर रहे हो

हरियाणा और पंजाब सरकार पर भड़का सुप्रीम कोर्ट, खूब सुनाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। एनसीआर में वायु प्रदूषण को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को कड़ा रुख अपनाया है। पराली जलाने के मामले में अदालत ने पंजाब और हरियाणा के मुख्य सचिवों को तलब किया है। शीर्ष न्यायालय ने दोनों राज्यों को कानून तोड़ने वालों के खिलाफ मुकदमा नहीं चलाने पर कड़ी फटकार भी लगाई। कोर्ट का कहना है कि पंजाब और हरियाणा ने बीते 3 सालों में उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सिर्फ मामूली जुर्माना लगाया। मामले की सुनवाई कर रहे जस्टिस अभय एस ओक, जस्टिस एजी मसीह और जस्टिस ए अमानुल्लाह ने वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग को भी फटकार लगाई है। कोर्ट ने आयोग को बगैर दांत वाला करार दिया और कहा कि यह अपने ही आदेश लागू नहीं करा पाया। जस्टिस ओक ने कहा, पंजाब और हरियाणा की तरफ से कौन पेश हुआ है। आयोग के

कोई भी सदस्य वायु प्रदूषण से जुड़े मामले से निपटने के योग्य नहीं है। आदेश का बिल्कुल पालन नहीं हुआ। हमारा पिछला और 10 जून का आदेश भी देखें। अब तक एक भी मुकदमा नहीं हुआ। सब कुछ सिर्फ कागजों पर है। इस पर वकील ने कहा कि इस साल 17 एफआईआर दर्ज की गई है। कोर्ट ने कहा,लेकिन यह सब आयोग के किसी प्रावधान में हुआ है। उस प्रावधान में नहीं, जिसकी जरूरत है। हम आपको 1 सप्ताह का समय देते हैं नहीं तो सीएस के खिलाफ अवमानना का आदेश जारी करेंगे।

2015 के केस में ईडी के रडार पर रेवंत रेड्डी

एमएलसी चुनाव में हेराफेरी के लग रहे हैं आरोप

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप लगे हैं। प्रवर्तन निदेशालय ने यह भी दावा किया है कि उसके पास यह साबित करने के लिए प्रयाप्त सबूत हैं। ईडी का आरोप है कि सीएम रेड्डी भ्रष्टाचार के जरिए 50 लाख रुपये की कमाई की है। ईडी के अधिकारियों ने जांच और कोर्ट के दस्तावेजों का हवाला देते हुए कहा कि धन

शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत दायर आरोप पत्र में आरोपी नंबर 1 के रूप में रेवंत रेड्डी का नाम है। आपको बता दें कि यह मामला 2015 का है। 1 जून 2015 को तेलंगाना विधान परिषद चुनाव से पहले रेवंत रेड्डी को तेलुगु देशम पार्टी के उम्मीदवार वेम नरेंद्र रेड्डी के पक्ष में वोट देने के लिए विधायक एल्विस स्टीफेंसन को 50 लाख रुपये का भुगतान करते हुए पकड़ा गया था। उस समय रेवंत टीडीपी के विधायक थे। 2018 में ईडी ने मामले की जांच शुरू की और एल्विस स्टीफेंसन के बयान दर्ज किए।

बाबा सिद्दीकी के हत्यारों ने यूट्यूब से सीखा गोली चलाना

इंस्टाग्राम पर करते थे कॉलिंग

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के दिग्गज राजनेता बाबा सिद्दीकी की हत्यारों को लेकर मुंबई पुलिस ने नए खुलासे किए हैं। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि बाबा सिद्दीकी को मारने की प्लानिंग पुणे में तीन महीने पहले से ही शुरू हो गई थी। हत्यारों ने यूट्यूब से गोली चलाना सीखा और उनकी स्नैपचैट और इंस्टाग्राम पर

ही आपस में बातचीत होती थी। मुंबई क्राइम ब्रांच की टीम सिद्दीकी मर्डर केस में चार लोगों को अरेस्ट कर चुकी है। चारों की 21 अक्टूबर तक पुलिस के पास कस्टडी है। बीते शनिवार को एनसीपी नेता बाबा सिद्दीकी को मारने आए शूटरों गुरमेल सिंह और धर्मराज कश्यप ने छह राउंड फायर किया था। अस्पताल ले जाते वक्त सिद्दीकी की मौत हो गई थी। फायरिंग के कुछ घंटों बाद ही दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया था। पुलिस यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि वे किस स्थान पर अभ्यास करते थे।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने की सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के साथ बैठक

उम्मीदवार निर्वाचन के दौरान 40 लाख रुपए तक ही खर्च कर सकेंगे: के रवि कुमार

संवाददाता रांची । राज्य के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के रवि कुमार ने कहा है कि विधानसभा आम निर्वाचन की घोषणा के साथ ही राज्य में आदर्श आचार संहिता लागू हो गई है। इस दौरान सभी राजनीतिक दलों एवं निर्वाचन में भाग लेने वाले प्रत्याशियों के लिए भारत निर्वाचन आयोग के जरिये कुछ आवश्यक दिशा निर्देश जारी किए गए हैं। इसका अनुपालन कर स्वच्छ, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण मतदान सुनिश्चित होगा। निर्वाचन प्रक्रिया में सभी के लिए समान अवसर प्राप्त हो, इस उद्देश्य से प्रत्येक प्रत्याशियों के जरिये निर्वाचन के दौरान 40 लाख रुपए की खर्च सीमा तय की गई है। प्रत्याशियों के खर्च में पारदर्शिता लाने के लिए खर्च के ब्योरा की पंजी जिला निर्वाचन पदाधिकारी के कार्यालय में जमा करानी होती है। इस पंजी का जिला निर्वाचन पदाधिकारी के द्वारा उनके कार्यालय की वेबसाईट पर सार्वजनिक की जाती है।

कुमार बुधवार को विधानसभा निर्वाचन के लिए आदर्श आचार संहिता लागू होने के बाद सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के साथ बैठक कर रहे थे। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को बताया कि निर्वाचन आयोग के जरिये सुविधा एप्प बनाया गया है, जिसके इस्तेमाल से प्रत्याशियों के जरिये नामांकन प्रक्रिया में उपयोग होने वाले सभी आवेदनों को भरा जा सकता है। साथ ही नामांकन के दिन के

लिए आरओ ऑफिस में अपॉइंटमेंट भी ली जा सकती है। इसके साथ इस माध्यम से अपना ब्योरा भरने एवं एफिडेविट बनाने में भी सहायता प्राप्त होगी। उन्होंने कहा कि सीङ्घविजिल एप्प के माध्यम से आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन मामलों पर त्वरित शिकायत भी दर्ज कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि सभी प्रत्याशियों से अपेक्षा की जाती है कि निर्वाचन संबंधित सभी निर्देशों को समझते हुए इससे अपने कार्यकर्ताओं को भी अवगत कराएं, जिससे निर्वाचन संबंधी व्यय की गणना में किसी प्रकार की कठिनाई उत्पन्न न हो। उन्होंने कहा कि निर्वाचन के दौरान प्रत्याशियों के जरिये प्रचार-प्रसार, निर्वाचन प्रक्रिया, स्टार कैंपेनर, राजनीतिक दल आदि के लिए राज्य द्वारा कुछ नियम बनाए गए हैं, साथ ही भारत निर्वाचन आयोग द्वारा भी ÷क्या करे, क्या नहीं करें÷ की निर्देशिका जारी की गई है। निर्वाचन के दौरान इनका अनुपालन एवं भारत निर्वाचन आयोग के दिशा निर्देशों का अनुपालन कर किसी प्रकार के संशय से बचा जा सकता है। इस अवसर पर सिस्टम एनालिस्ट एस एन जमील के जरिये निर्वाचन में उपयोग आने वाले ऑनलाइन एप्लीकेशन जैसे सीङ्घविजिल, सुविधा एप्प, केवाईसी आदि प्रत्याशियों के उपयोग में आने वाले विभिन्न एप्लिकेशनों के इस्तेमाल के विषय में बिंदुवार जानकारी दी गई।

राज्य में बदला मौसम का मिजाज, 17-18 को गरज के साथ होगी बारिश

रांची (हि.स.)। राजधानी रांची में मौसम का मिजाज बुधवार को बदला। आकाश में काले बादल छा गए और देखते ही देखते झमाझम बारिश होने लगी। बादल भी गरजने लगे। मौसम विभाग ने पूर्वानुमान में बताया कि राज्य के नौ जिलों में मौसम का मिजाज बदल सकता है। गरज के साथ बारिश हो सकती है। जिन जिलों के लिए पूर्वानुमान जारी किया है, उनमें रांची, खूंटी, लोहरदगा, रामगढ़, धनबाद, गुमला, पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी सिंहभूम और सरायकेला खरसावां जिले शामिल हैं। मौसम केंद्र ने बताया कि बंगाल की खाड़ी में डिप्रेशन की वजह से मौसम ने करवट ली है। इस कारण बादल छाए हुए हैं और बारिश भी हो रही है। इसका येलो अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग के अनुसार, 17 और 18 अक्टूबर को राज्य के विभिन्न हिस्सों में बारिश और वज्रपात की संभावना है। रांची सहित देवघर, धनबाद, गोड्डा, दुमका, गिरिडीह, जामताड़ा, पाकुड़ साहेबगंज, पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी सिंहभूम और सिमडेगा में 17 अक्टूबर को हल्के से मध्यम दर्जे की बारिश हो सकती है जबकि 18 अक्टूबर को भी बारिश की संभावना है। इसके बाद 19 अक्टूबर से मौसम साफ हो जाएगा।

भारत से रिश्ते मजबूत करने पर अड़े सभी पश्चिमी देश

ट्रूडो को अपनों ने दिखा दी औकात, खूब हुई किरकिरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के साथ रिश्ते बिगाड़ चुके जस्टिन ट्रूडो के करीबी देशों ने भी अब उन्हें औकात दिखा दी है। पश्चिमी देशों के समर्थन पर खूब उछल रहे कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो द्वारा लगाए गए गंभीर आरोपों के बावजूद अमेरिका और ब्रिटेन ने मोदी सरकार के साथ अपने संबंधों को और मजबूत करने का इरादा जाहिर किया है। पहले ट्रूडो ने दावा किया था कि भारतीय राजनयिकों ने कनाडा में रहने वाले सिख अलगाववादियों पर निगरानी रखी और उन्हें धमकाया, ब्लैकमेल किया या मार डाला। हालांकि, ट्रूडो के इन दावों की खिल्ली उड़ गई है, भारत बार-बार इस बेतुके बयानों के बारे में सबूत मांगता रहा है मगर कनाडा सरकार इस बारे में पुख्ता जानकारी मुहैया नहीं करा पाई है।

पहले पूरा करेंगे अपना वादा फिर शपथ का है इरादा

नायब सिंह सैनी का हरियाणा में रोजगार पर बड़ा ऐलान

शाह की मौजूदगी में चुने गए बीजेपी विधायक दल के नेता

पंचकूला (एजेंसी)। हरिणाया में एक बार फिर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ही सत्ता की बागडोर थामेंगे। सौनी को सर्वसम्मति से हरियाणा में भाजपा विधायक दल का नेता चुना गया। अब हरियाणा में नई सरकार के शपथ ग्रहण से पहले सैनी ने रोजगार को लेकर बड़ा ऐलान कर दिया है। उन्होंने कहा कि पहले 24 हजार युवाओं को नौकरी देंगे उसके बाद शपथ ग्रहण करेंगे। नायब सिंह सैनी ने एक्स पर पर एक वीडियो शेयर किया है, जिसमें उन्होंने कहा, मैंने संकल्प लिया था शपथ बाद में लूंगा पहले 24 हजार युवाओं को ज्वाइनिंग दूंगा। वादे को पूरा करते हुए कल नतीजे घोषित किए जाएंगे। भाजपा जो कहती है वो करती है। नायब सिंह सैनी ने बुधवार को हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय से राजभवन में मुलाकात की और राज्य में अगली सरकार बनाने का दावा पेश किया। इससे कुछ घंटे पहले ही पंचकूला में हुई बैठक में सैनी को सर्वसम्मति से हरियाणा में भाजपा विधायक दल का नेता चुना गया था।

उमर अब्दुल्ला बने जम्मू-कश्मीर यूटी के पहले मुख्यमंत्री

- भाजपा प्रदेश अध्यक्ष रैना को हराने वाले सुरेंदर चौधरी डिप्टी सीएम, कांग्रेस सरकार में शामिल नहीं

श्रीनगर (एजेंसी)। नेशनल कॉन्फ्रेंस के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला ने बुधवार को जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। इसके साथ ही वे इस केंद्र शासित राज्य के पहले सीएम बन गए। कार्यक्रम श्रीनगर के शेर-ए-कश्मीर इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस सेंटर में हुआ। नेशनल कॉन्फ्रेंस के साथ मिलकर विधानसभा चुनाव लड़ने वाली कांग्रेस सरकार में शामिल नहीं हुई है। हालांकि उमर के शपथ समारोह में राहुल और प्रियंका गांधी मौजूद रहे। कांग्रेस ने सरकार को बाहर से समर्थन दिया है। पार्टी का कहना है कि जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा मिलने तक उसकी लड़ाई जारी रहेगी। शपथ लेने

के बाद उमर ने कहा कि उनकी गाड़ी के लिए सड़क पर कोई भी ग्रीन कॉरिडोर या ट्रैफिक नहीं रोका जाएगा। उन्होंने अपने मंत्रियों से भी अनुरोध किया है कि वे भी ऐसा ही करें। उमर का कहना है कि वे जनता की सेवा के लिए हैं, न कि उन्हें तकलीफ देने के लिए। समारोह में 50 से ज्यादा वीआपी, केजरीवाल-ममता नहीं आए शपथ में इंडिया ब्लॉक के नेताओं में अखिलेश यादव, संजय सिंह समेत 6 पार्टियों के लीडर्स पहुंचे थे। संसद में विपक्ष के नेता राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, कांग्रेस प्रमुख मल्लिकार्जुन खड़गे, पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी, तमिलनाडु सीएम एमके स्टालिन, उद्धव ठाकरे, शरद पवार, लालू प्रसाद यादव और अरविंद केजरीवाल सहित करीब 50 वीआईपी को न्योता भेजा गया था। हालांकि केजरीवाल और ममता बनर्जी समारोह में नहीं पहुंचे। भाजपा बोली- उम्मीद है शांति स्थापित करेंगे :जम्मू-कश्मीर भाजपा अध्यक्ष रविंदर रैना ने कहा- मैं उमर अब्दुल्ला को बधाई देता हूं, जिन्होंने जम्मू-कश्मीर के नए मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली है। उनके मंत्रिपरिषद को भी बधाई देता हूं। मुझे उम्मीद है कि वे जम्मू-कश्मीर में शांति स्थापित करने और जनता के सामने आने वाले मुद्दों को हल करने के लिए काम करेंगे।

विस चुनाव में प्री-पोल ड्यूटी के लिए राज्य को मिली अर्धसैनिक बलों की 100 कंपनी

संवाददाता रांची । विधानसभा चुनाव के मद्देनजर झारखंड को चुनाव आयोग के निर्देश पर 100 कंपनी अर्द्धसैनिक बल प्राप्त हुआ है। इनमें सीआरपीएफ, सीआइएसएफ, बीएसएफ, एसएसबी और आइटीबीपी शामिल हैं। इन बलों को राज्य के सभी 24 जिलों में तैनात किया जाएगा। प्रत्येक जिले में 3 से 5 कंपनी अर्द्धसैनिक बल तैनात किए जाएंगे। ये बल फ्लैग मार्च, क्षेत्रीय डोमिनेशन, और चेकिंग जैसे कार्यों में लगाए जाएंगे, ताकि आम जनता में सुरक्षा का विश्वास बढ़े और चुनाव के समय व्यवस्था चाक-चौबंद रहे। झारखंड में 13 और 20 नवंबर को दो चरणों में मतदान होगा जबकि मतगणना 23 नवंबर को होगी। इस दौरान सुरक्षा व्यवस्था को सुनिश्चित करने के लिए झारखंड पुलिस ने चुनाव आयोग से 590 कंपनी अर्द्धसैनिक बल की मांग की है। हालांकि, अभी तक अंतिम निर्णय नहीं लिया गया है कि झारखंड को कितनी और कंपनी मिलेगी। उल्लेखनीय है कि पिछले लोकसभा चुनाव में झारखंड को 230 कंपनी अर्द्धसैनिक बल मिले थे।

आईएएस अलका तिवारी बन सकती हैं झारखंड की मुख्य सचिव

रांची (हि.स.)। आईएएस अलका तिवारी को झारखंड का अगला मुख्य सचिव बनाया जा सकता है। केंद्र सरकार ने आईएएस अलका तिवारी को केंद्रीय प्रतिनियुक्ति से उनके मूल कैडर झारखंड में वापस करने का आदेश जारी किया है। सूत्रों का कहना है कि उन्हें मुख्य सचिव के पद पर पदस्थापित किया जा सकता है। अलका तिवारी 1988 बैच की आईएएस हैं। वह झारखंड के कई जिलों में डीसी के पद पर भी काम कर चुकी हैं। वर्तमान में झारखंड में मुख्य सचिव के पद पर आईएएस एल ख्यांगते पदस्थापित हैं। एल ख्यांगते इसी माह 31 अक्टूबर को सेवानिवृत होंगे। झारखंड में अचार संहिता लागू हो गया है।

वक्फ बोर्ड पर जेपीसी की लड़ाई अध्यक्ष ओम बिरला के पास आई

विपक्षी सांसदों ने लोकसभा अध्यक्ष को लिखी चिट्ठी,लगाए गंभीर आरोप

नई दिल्ली (एजेंसी)। वक्फ विधेयक को लेकर हुई जेपीसी की बैठक लगातार दूसरे दिन हंगामेदार रही। इसके बाद विपक्ष के कई सांसदों ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को पत्र लिखकर आरोप लगाया कि वक्फ (संशोधन) विधेयक पर विचार कर रही संसद की संयुक्त समिति की बैठक में ''संसदीय आचार संहिता का घोर उल्लंघन'' हुआ। यह पत्र कर्नाटक राज्य अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष अनवर मणिप्पाडी के वक्तव्य पर कई विपक्षी सांसदों द्वारा समिति की बैठक का बहिष्कार करने के एक दिन बाद आया है।

मणिप्पाडी ने वक्फ संपत्तियों के कथित गबन में कांग्रेस अध्यक्ष

मल्लिकार्जुन खरगे और के रहमान खान सहित कई विपक्षी नेताओं का नाम लिया था। इससे पहले मंगलवार को विपक्ष के सांसदों ने वक्फ विधेयक पर संयुक्त संसदीय समिति की बैठक से यह कहकर वॉकआउट किया कि भाजपा के एक सदस्य ने उनके खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी की है। कल्याण बनर्जी, गौरव गोगोई, ए राजा, मोहम्मद अब्दुल्ला और अरविंद सावंत सहित विपक्षी सदस्य संसदीय समिति की बैठक से उठ कर बाहर चले गए।

संक्षिप्त

झंडा पोस्टर बैनर हटाए गए

अनगड़ा : झारखंड विधान सभा चुनाव की घोषणा के साथ हीं आदर्श अचार संहिता का पालन करते हुए प्रखंड प्रशासन ने विभिन्न राजनीतिक दल के बैनर पोस्टर और झंडे सार्वजनिक स्थानों से हटाए गए। कुछ राजनीतिक दल के कार्यकर्ता स्वंय और कुछ पोस्टर और झंडो को स्थानीय प्रशासन के द्वारा हटवाया गया।

विधानसभा चुनाव को लेकर सिल्ली में प्रशासन सक्रिय : अरूणिमा एक्का

सिल्ली : विधानसभा चुनाव 2024 की घोषणा होने के बाद विधानसभा चुनाव को लेकर सिल्ली में प्रशासन सक्रिय हो गया है। प्रशासन की ओर से बुधवार को मेन रोड सिल्ली में लगाया गया बैनर, होर्डिंग, झंडा आदि को हटाया गया। इसको लेकर अंचल पदाधिकारी सिल्ली ने मेन रोड सिल्ली समेत विभिन्न जगहों का दौरा किया। यह जानकारी अरूणिमा एक्का अंचल पदाधिकारी सिल्ली ने दी।

बीडीओ सिल्ली से झामुमो कार्यकर्ताओं ने औपचारिक मुलाकात की

सिल्ली : बुधवार को नव पदस्थापित प्रखंड विकास पदाधिकारी सिल्ली के अनिल कुमार से झामुमो कार्यकताओं ने औपचारिक मुलाकात की। मौके पर झारखंड मुक्ति मोर्चा के जिला कमेटी के युवा मोर्चा उपाध्यक्ष फलहारी महतो, महिला मोर्चा उपाध्यक्ष मंजू महतो, प्रखंड अध्यक्ष बलराम महतो उर्फ राधिका, संयुक्त सचिव अजीत कुमार महतो, प्रवक्ता मो फखरूद्दीन राय के अलावा मो मुहर्रम मोमिन, राजेश लोहरा, अंशु महली, हरिपदो महतो, मो रमजान मोमिन, दिलीप महतो आदि शामिल हुए। यह जानकारी जिला युवा मोर्चा उपाध्यक्ष फलहारी महतो ने दी।

विश्व ट्रॉमा दिवस के अवसर पर आकस्मिक दुर्घटनाओं से होने वाले ट्रॉमा पर जागरूकता फैलाने का आह्वान

रांची : विश्व ट्रॉमा दिवस के अवसर पर, मेदांता अब्दुर रज्जाक अंसारी मेमोरियल वीवर्स अस्पताल, रांची के प्रमुख न्यूरो सर्जन डॉ. आनंद कुमार झा ने आज सड़क दुर्घटनाओं और अन्य आकस्मिक दुर्घटनाओं से होने वाले ट्रॉमा पर जागरूकता फैलाने का आह्वान किया।

डॉ. झा ने कहा, भारत में हर साल लाखों लोग सड़क दुर्घटनाओं का शिकार होते हैं, जिनमें से एक बड़ा हिस्सा गंभीर रूप से घायल हो जाता है। समय पर उपचार और ट्रॉमा प्रबंधन से हजारों जिंदगियां बचाई जा सकती हैं। उन्होंने बताया कि ट्रॉमा की स्थिति में स्वर्णिम घंटे (गोल्डन ऑवर) का अत्यधिक महत्व है। यदि इस समय में उचित चिकित्सा सहायता

दी जाए, तो मरीज की जान बचाई जा सकती है और गंभीर स्थायी क्षति को रोका जा सकता है।

डॉ. झा ने कहा कि ट्रॉमा के प्रति जागरूकता और सही कदम उठाने से ही हम सड़क दुर्घटनाओं के कारण होने वाली मौतों और विकलांगताओं को कम कर सकते हैं। ₹सड़क सुरक्षा नियमों का पालन, हेलमेट और सीटबेल्ट का उपयोग, और सही समय पर चिकित्सा सहायता ट्रॉमा से बचाव के प्रमुख उपाय हैं, उन्होंने कहा। मेदांता अस्पताल, रांची में उपलब्ध अत्याधुनिक सुविधाओं और विशेषज्ञ टीम के साथ, हम हर प्रकार के ट्रॉमा मरीजों को सर्वश्रेष्ठ इलाज प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस विश्व ट्रॉमा दिवस पर, डॉ. झा ने सभी नागरिकों से अपील की कि वे सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक रहें और ट्रॉमा के लक्षणों को पहचानने और समय पर मदद लेने के लिए तत्पर रहें।

मेदांता अस्पताल, राँची में विश्व स्तरीय इमरजेंसी एंड ट्रॉमा केयर सुविधाः हॉस्पिटल डायरेक्टर विश्वजीत कुमार ने कहा की हर साल ४०० से भी ज्यादा लोगो की सड़क दुर्घटना में मौत होती है। उन्होंने ने लोगो से अपील की कि वे सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक रहे और ट्रैफिक रूल्स का पालन करें। मेदांता अस्पताल में इमरजेंसी एंड ट्रॉमा केयर की विश्व स्तरीय सुविधा है। यहां विशेष प्रकार का अल्ट्रासाउंड और एक्स-रे मशीन है जिससे मरीज की आसानी से स्क्रीनिंग हो जाती है।

संत जेवियर्स कॉलेज रांची में स्नातकोत्तर के नए छात्रों का हुआ स्वागत

रांची : संत जेवियर्स कॉलेज में दिनांक-16/10/2024 बुधवार को नए सत्र 2024-26 में नामांकित स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों का स्वागत किया गया। इस अवसर पर आयोजित ओरिएंटेशन कार्यक्रम में जेसुइट शिक्षा प्रणाली एवं विरासत पर चर्चा की गयी। तत्पश्चात कॉलेज के विजन एवं मिशन के बारे में बताया गया। साथ ही विद्यार्थियों को कॉलेज में उपलब्ध सारी सुविधाओं, दिशा-निदेर्शों एवं कॉलेज के विभिन्न कमिटियों के बारे में विस्तार से अवगत कराया गया। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. फादर एन. लकड़ा, एसजे ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि चरित्र निर्माण, शिक्षा के उद्देश्य को पहचानिए और समाज को समर्थ बनाईये उन्होंने जेसुइट सोसाइटी के स्वर्णिम इतिहास के बारे में भी छात्रों को बतायो कॉलेज के उप-

प्राचार्य डॉ. फादर प्रदीप रोबर्ट कुजूर, एसजे ने स्पष्ट दिशा-निर्देश देकर बताया कि कॉलेज अनुशासन के कारण ही अग्रणी संस्थान के रूप में खुद को स्थापित किया है छात्रों को बताया कि वे अपने शैक्षिक जीवन को गंभीरता से लें और कठिन मेहनत कर अपना सर्वांगीण करें। मौके पर कॉलेज के रेक्टर फादर सुधीर मिंज, एसजे, उप-प्राचार्य(इवनिंग) डॉ. फादर अजय अरुण मिंज,एसजे, रजिस्ट्रार डॉ. फादर प्रभात केनेडी सोरेंग, एसजे, बीएड विभागाध्यक्ष डॉ. फादर फ्लोरेंस पूर्ति, एसजे, तीनों संकाय के डीन, डीएसडब्ल्यू डॉ. संजय सिन्हा, आईक्यूएसी संयोजक डॉ. शिव कुमार, सभी विषय के विभागाध्यक्ष, बर्सर फादर रवि हेमंत कुजूर, एसजे, अन्य प्राध्यापकगण सहित नए छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

बीजेपी राज्य में बहुसंख्यक ओबीसी ओर एससी का आरक्षण में कटौती कर मौलिक हक और अधिकार छीना, 20 लाख युवा बेरोजगार हुए : कैलाश

रांची : प्रदेश राजद महासचिव सह मीडिया प्रभारी कैलाश यादव ने बीजेपी के राष्ट्रीय एवं प्रदेश नेताओं पर कड़ा प्रहार करते हुए कहा कि झारखंड निर्माण के बाद भाजपा ने राज्य में ओबीसी को 27 से 14 एवं अनुसूचित जाति को 15 से 10 फीसदी आरक्षण में कटौती कर बहुसंख्यक समाज का मौलिक हक और अधिकार छीनने का काम किया है। जिसका दंश आज तक बहुसंख्यक OBC, SC लगभग 75 फीसदी लोग झेल रहे हैं जिस कारण अब तक 20 लाख युवा बेरोजगार हुए हैं।

यादव ने कहा कि झारखंड निर्माण के बाद तत्कालीन प्रथम मुख्यमंत्री बने बाबूलाल मरांडी ने जेडीयू आजसू के साथ एनडीए सरकार चलाई,जिस दौरान उन्होंने राज्य के अहित में कई जनविरोधी निर्णय लिए। डोमिसाइल लागू कर लोगो में जनाक्रोश करवाया, ओबीसी और अनुसूचित जाति का आरक्षण में कटौती कर बहुसंख्यक आबादी के खिलाफ नफरत भरी निर्णय लेकर पीछे धकेलने का काम किया। ऐसे अनेकों उदाहरण हैं इसलिए भाजपाइयों को आरक्षण शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

राज्य में विगत 5 वर्षों से महागठबंधन सरकार राजद कांग्रेस जेएमएम ने कई ऐतिहासिक जनसरोकार का कार्य कर लोगो की जनाकांक्षाओं को पूरा करने का काम किया है।

किसानों का 2 लाख रु ऋण माफी,बिजली बिल माफी,200 यूनिट तक बिल माफ, मईया सम्मान योजना,छात्रवृति और गंभीर बीमारी के लिए राशि निर्गत करना जैसे अनेकों साहसिक और जनहित के कार्य किए गए इसलिए बीजेपी के पास थोथी दलील के अलावा कोई ठोस मुद्दा नहीं है। जनता को राज्य में पुनः सेक्युलर सरकार चाहिए न कि कट्टरपंथी विचारधारा वाली भाजपाई सरकार चाहिए।

ऐतिहासिक महादानी मंदिर प्रागंण में शरद पूर्णिमा में चंद्रमा की रोशनी में बनी खीर महा प्रसाद का वितरण

बेडो : में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्वावधान में बुधवार की देर शाम महादानी मंदिर प्रागंण में शरद पूर्णिमा महोत्सव का आयोजन किया गया। शरद पूर्णिमा महोत्सव के मौके पर संघ के सदस्यों ने बौद्धिक कार्यक्रम का आयोजन किया। इस दौरान मनोहर कुमार व डा रमेश प्रसाद गुप्ता ने बौद्धिक ज्ञान के माध्यम से हिंदू धर्म और संस्कृति की व्याख्या की। वहीं उन्होंने कहा कि भारत संतों की भूमि है सनातन धर्म में भारतीय संस्कृति और परंपरा का प्राचीन काल से ही मानते आ रहे है। भारत पूरे विश्व का गुरु रहा है, उसी आदर्श को स्थापित करना है। साथ ही गुरु और शिष्य की परंपरा को आगे लेकर

चलना है। इस दौरान आरएसएस के सदस्यों ने चंद्रमा की रोशनी में रखे खीर महाप्रसाद का वितरण किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में महावीर गोप, भीखा उरांव, गुरुपद दास गोस्वामी, डॉ एसपी साहू, मुकेश कुमार गोप, पुजारी अशोक पंडा, रंजीत खत्री, मुकेश कुमार रॉय, मनोहर साहू, संजीव दुबे, कुश, भीखराम उरांव ब्रजेश कुमार, महेंद्र गोप समेत कई लोगों ने सहयोग किया।

सदान विकास पार्टी की हुई बैठक, 20को प्रत्यासी के नाम का ऐलान

रांची : सदान विकास पार्टी की एक बैठक पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ राजेन्द्र प्रसाद साहु की अध्यक्षता में केन्द्रीय कार्यालय शुक्ला कालोनी हिनू में सम्पन्न हुई।

आज की बैठक में पार्टी के सभी पदाधिकारी एवं सदस्य गण एवं कार्यकर्ता गण उपस्थित रहे।

बैठक को संबोधित करते हुए पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ राजेन्द्र प्रसाद साहु ने अपने वक्तव्य में कहा कि पार्टी के सभी पदाधिकारी गण एवं कार्यकर्ता गण विधानसभा चुनाव के लिए तैयार हो जाएं, चुनाव आयोग द्वारा चुनाव की घोषणा कर दी गई है।

दिल्ली के तापमान में गिरावट शुरू... हवा की गुणवत्ता में भी सुधार

नई दिल्ली । दिल्ली में तापमान में गिरावट शुरू हुई है। वहीं हवा की गुणवत्ता में कुछ सुधार हुआ है। इस बीच,पराली जलाने की घटनाओं में कमी आई है। इस साल की शुरुआत से 15 अक्टूबर तक पराली जलाने की 2,399 घटनाएं दर्ज की गईं, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में 2,791 घटनाएं दर्ज की गई थीं। दिल्ली में खराब होती वायु गुणवत्ता के मद्देनजर राष्ट्रीय राजधानी में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (जीआरएपी) के पहले चरण के तहत प्रतिबंध लागू हो गए हैं। एक अधिकारी ने बताया कि सर्दियों में विशेष प्रदूषण रोधी उपायों के अंतर्गत ग्रैप के पहले चरण के तहत प्रतिबंध का उद्देश्य निर्माण स्थलों पर धूल को कम करना, उचित अपशिष्ट प्रबंधन और सड़कों की नियमित सफाई के माध्यम से प्रदूषण को नियंत्रित करना है ग्रेप के पहले चरण में प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों की सख्त जांच, बेहतर यातायात प्रबंधन और उद्योगों, बिजली संयंत्रों और ईंट भट्ठों में उत्सर्जन नियंत्रण को अनिवार्य बनाया गया है। इसके तहत 500 वर्ग मीटर या उससे ज्यादा के आकार के प्राइवेट कंस्ट्रक्शन और डेमोलिशन प्रोजेक्ट्स पर रोक। दिल्ली के 300 किलोमीटर के दायरे में पॉल्यूशन फैलाने वाली इंडस्ट्रियल यूनिट और थर्मल पावर प्लांटों पर कार्रवाई पटाखों के प्रोडक्शन, स्टोरेज, और बिक्री पर रोक। 10-15 वर्ष पुराने डीजल/पेट्रोल वाहन पर रोक। खुले में कचरा जलाने पर रोक। खुले स्थानों पर कूड़ा-कचरा फैलाने पर रोक।

नीतीश के साथ फिर गठबंधन के सवाल पर बोले तेजस्वी यादव, अब सवाल ही नहीं, उनका समय खत्म हो गया है

पटना (एजेंसी)। राजद नेता तेजस्वी यादव ने बुधवार को बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ गठबंधन की अटकलों को खारिज कर दिया और दावा किया कि थके हुए जदयू अध्यक्ष के लिए समय आ गया है। जनवरी में जब कुमार अचानक भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए में लौट आए तो यादव को उपमुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देना पड़ा था। तेजस्वी ने कहा कि बिहार में दिन-ब-दिन कानून-व्यवस्था की स्थिति पर नजर डालें तो...ऐसा कोई विधानसभा क्षेत्र नहीं है, जहां हत्या, लूटपाट, अपहरण और बलात्कार जैसे अपराध नहीं होते हों।

राजद नेता ने दावा किया कि बड़ी मुश्किल से एफआईआर दर्ज होती है, जांच शून्य होती है, पीड़ित परिवार को कभी न्याय नहीं मिलता और आरोपी छूट जाता है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि बिहार में कानून व्यवस्था की स्थिति भयावह हो गई है। उन्होंने कहा कि सीएम नीतीश कुमार अब बिहार नहीं चला पा रहे हैं, थक चुके हैं, उनकी स्थिति हम देख सकते हैं। बांका जिले में पत्रकारों से बात करते हुए, राजद नेता ने उन्हें चुनौती दी कि वे केंद्र में अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके जाति जनगणना करवाएं, साथ ही राज्य के लिए विशेष दर्जा और हाल की बाढ़ से तबाह हुए क्षेत्रों के लिए राहत पैकेज भी हासिल करें।

एक सवाल के जवाब में, अब विपक्ष के नेता, यादव ने कहा अब नीतीश कुमार के साथ हाथ मिलाने का सवाल ही नहीं उठता। उनका समय समाप्त हो गया है। वह थक गए हैं और अब बिहार पर शासन करने में सक्षम नहीं हैं। विशेष रूप से, यादव की पार्टी, जिसका नेतृत्व उनके पिता लालू प्रसाद कर रहे हैं, की जद (यू) के साथ दो साझेदारियाँ रही हैं, दोनों ही अल्पकालिक रहीं। दोनों पार्टियों ने पहली बार 2015 में गठबंधन किया था, जब गठबंधन ने विधानसभा चुनावों में शानदार जीत दर्ज की थी, हालांकि कुमार दो साल बाद एनडीए में वापस चले गए।

योगी सरकार के मंत्री के नाम पर पोती कालिख, गेट पर लिख चोर-बेईमान !

लखनऊ । उत्तर प्रदेश की राजधानी में योगी सरकार के एक राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) के आवास पर चोर-बेईमान लिखा गया है। इतना ही नहीं उनके आवास पर राज्यमंत्री के नेम प्लेट पर कालिख तक पोत दी गई है। यह सबकुछ कांग्रेस के नेताओं ने किया। दरअसल, कांग्रेस के नेता आक्रोशित हैं। बताया जा रहा है कि राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) की तरफ से कांग्रेस नेता एवं राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी को लेकर टिप्पणी की गई थी। जिसके विरोध में राज्यमंत्री के घर पर चोर-बेईमान लिखा गया है। उत्तर प्रदेश सरकार में राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दिनेश प्रताप सिंह के आवास पर बुधवार को कांग्रेस नेता अनिल यादव पहुंचे। अनिल यादव ने सबसे पहले राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दिनेश प्रताप सिंह के आवास पर चोर बेईमान लिखा, उसके बाद आवास पर लगे नेम प्लेट (नाम पट्टिका) पर कालिख पोत दी। खास बात यह रही कि यह सब करते हुये कांग्रेस नेता का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। गौरतलब है कि प्रियंका गांधी वायनाड से चुनाव लड़ने जा रही हैं, कांग्रेस ने उन्हें वायनाड लोकसभा सीट से प्रत्याशी बनाया है। इसी पर राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दिनेश प्रताप सिंह ने टिप्पणी कर दी। उन्होंने यह टिप्पणी अपने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर की है। उन्होंने लिखा है कि अन्ततः लड़की लड़ नहीं पाई और भाग ही गई वहां जहां लड़ना न पड़े। बूढ़ी जो हो गई। वहीं कालिख पोते जाने की जानकारी जब मंत्री के आवास पर मौजूद लोगों को हुई तो उन्होंने आनन-फानन में चोर-बेईमान लिखा हुआ को मिटा दिया है।

महाराष्ट्र चुनाव से पहले अजित पवार को लगा बड़ा झटका, एनसीपी के 600 से अधिक कार्यकर्ताओं ने छोड़ी पार्टी

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव से पहले अजित पवार को मंगलवार को बड़ा झटका लगा। पुणे शहर इकाई से राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के 600 से अधिक पार्टी कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों ने इस्तीफा दे दिया। आक्रोशित कार्यकर्ता पुणे शहर अध्यक्ष दीपक मानकर को एमएलसी पद नहीं देने के राज्यपाल के फैसले का विरोध कर रहे थे। यह घटनाक्रम उसी दिन हुआ जब भारत निर्वाचन आयोग ने राज्य विधानसभा चुनाव के कार्यक्रम की घोषणा की।

मानकर के समर्थक मंगलवार शाम पुणे शहर के नारायणपेठ इलाके में राकांपा कार्यालय में एकत्र हुए और एक बैठक की, जहां उन्होंने अपने इस्तीफे की घोषणा की। सामूहिक इस्तीफे में शहर उपाध्यक्ष, विधानसभा क्षेत्र प्रमुख, विभिन्न सेल प्रमुख और पार्टी कार्यकर्ता जैसे प्रमुख नाम शामिल थे। विशेष रूप से, शहर इकाई ने राज्यपाल के कोटे से पार्टी को आवंटित तीन एमएलसी सीटों में से एक पर मानकर की नियुक्ति की मांग की थी। हालाँकि, राकांपा ने राजनीति में मौजूदा पारिवारिक संबंधों वाले लोगों को फिर से नामांकित करने का फैसला किया। उन्होंने निराशा

और मोहभंग व्यक्त करते हुए पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और डिप्टी सीएम अजीत पवार को सौंपने के लिए एक ज्ञापन भी तैयार किया।

उन्होंने कहा कि मानकर ने पुणे शहर में राकांपा को मजबूत किया है और इसलिए वह एमएलसी सीट के हकदार हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इस अपमान से भविष्य में पार्टी कमजोर होगी। अपने ज्ञापन में नेताओं ने कहा, 'हमें विश्वास था कि अजित पवार पार्टी कार्यकर्ताओं को न्याय दिलाएंगे। हालांकि, दीपक मानकर को एमएलसी सीट से वंचित कर हमारा भरोसा तोड़ दिया गया है।' इस बीच, एनसीपी पुणे शहर के उपाध्यक्ष दत्ता सागरे ने कहा, 'हमारे शीर्ष नेतृत्व द्वारा पुणे शहर के अध्यक्ष दीपक मानकर को राज्यपाल के कोटे से एमएलसी पद से वंचित किए जाने के विरोध में आज 600 पार्टी कार्यकर्ताओं ने अपने पदों से इस्तीफा दे दिया।'

सलमान खान को माफ कर देगा बिश्नोई समाज... शर्तें मान लें

जोधपुर (एजेंसी)। बीते 26 साल से अभिनेता सलमान खान और बिश्नाई समाज के बीच तनातनी चल रही है। वजह ये है कि 1998 में सलमान खान ने काले हिरन का शिकार किया था। इससे विश्नाई समाज नाराज है। समाज का कहना है कि सलमान खान झूठ न बोलें, पानी छानकर पिए, भगवान बिष्णु का आराधना और प्रार्थना सहित 29 नियमों का पालन करें तो पूरा विवाद खत्म हो जाएगा।

फिल्म हम साथ-साथ हैं की शूटिंग के दौरान जोधपुर के कांकाणी गांव में काले हिरण के शिकार के मामले में सलमान खान सहित कई फिल्मी हस्तियों पर आरोप लगाए गए थे। यह मामला अभी भी न्यायालय में विचाराधीन है, लेकिन अब सवाल उठता है कि क्या बिश्नोई समाज सलमान खान को माफ कर सकता है? अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष देवेंद्र बूड़िया ने इस विषय पर अहम बयान दिया है।

देवेंद्र बूड़िया का कहना है कि अगर सलमान खान अपने कृत्य के लिए समाज से माफी मांगते हैं और मुकाम में आकर अपनी गलती को स्वीकार करते हैं, तो बिश्नोई समाज के 29 नियमों के तहत उन्हें माफ किया जा सकता है। बिश्नोई समाज के दसवें नियम में यह प्रावधान है कि गलती करने वाले को क्षमा किया जा सकता है। यह नियम समाज के धर्मगुरु भगवान जंभेश्वर जी द्वारा स्थापित किया गया था, जिसके अनुसार दया और क्षमा के भाव से अपराधी को माफ करने की व्यवस्था है।

बिश्नोई समाज प्रकृति प्रेम और शांति का प्रतीक माना जाता है, और अपने 29 नियमों के माध्यम से यह समाज न केवल धार्मिक अनुशासन बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी को भी बढ़ावा देता है। महिपाल बिश्नोई, जो इस घटना से जुड़े रहे, ने बताया कि 1998 की उस रात गांव वालों ने गोली की आवाज सुनी थी और बाद में दो काले हिरणों का शव पाया गया। समाज के लोगों ने एक जिप्सी को घटनास्थल से भागते देखा, जिसमें सलमान खान और उनके साथी मौजूद थे। बिश्नोई समाज का मानना है कि प्रकृति और जीवों की रक्षा करना उनका धर्म है। हालांकि, देवेंद्र बूड़िया के बयान के बाद यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या सलमान खान माफी मांगेंगे और क्या समाज उन्हें क्षमा करेगा।

इन नियमों का करना होगा पालन

सुबह स्नान करना और शुद्धता बनाए रखना, शील, संतोष, और शुद्धता का पालन करना,

सुबह-शाम संध्या और प्रार्थना करना, शाम को आरती करना और भगवान विष्णु के गुण गाना, सुबह हवन करना, पानी छानकर पीना और शुद्ध वाणी बोलना, ईंधन और दूध छानकर लेना, क्षमा और सहनशीलता का पालन करना, दया और नम्रता से जीवन जीना,

चोरी न करना, निंदा न करना, झूठ न बोलना, वाद-विवाद से बचना, अमावस्या का व्रत रखना, विष्णु भजन करना, सभी प्राणियों पर दया रखना, पेड़ों को नहीं काटना, अपने हाथ से खाना पकाना, बैल को बधिया (नपुंसक) न करना, नशे (अमल), तंबाकू, भांग और शराब का सेवन न करना, मांस का सेवन न करना, नीले रंग के कपड़े न पहनना।

विधान सभा निर्वाचन 2024 को लेकर पंडरा स्थित मतगणना स्थल का निरीक्षण

रांची : उपायुक्त सह जिला निर्वाचन पदाधिकारी रांची, श्री वरुण रंजन द्वारा आगामी विधान सभा निर्वाचन 2024 को लेकर पंडरा स्थित मतगणना स्थल का निरीक्षण किया गया। इस दौरान सभी अनुमंडल पदाधिकारी (सदर) रांची, श्री उत्कर्ष कुमार, अपर जिला दंडाधिकारी विधि व्यवस्था, राजेश्वर नाथ आलोक, उप निर्वाचन पदाधिकारी रांची, श्री बिवेक कुमार सुमन, सभी निवार्ची पदाधिकारी, एष्ट नोडल पदाधिकारी और सम्बंधित सभी पदाधिकारी उपस्थित थे। वोटिंग काउंटिंग सेंटर पंडरा रांची एवं पंडरा स्थित वज्रगृह के पूरे परिसर का अवलोकन जिला निर्वाचन पदाधिकारी रांची, वरुण रंजन द्वारा करते हुए यहाँ के तमाम व्यवस्थाओं का जायजा लेते हुए इसे दुरस्त करने का निर्देश दिया।

मुंबई में 10 मंजिला इमारत में आग.... तीन की मौत, तीन घायल

मुंबई । मुंबई के अंधेरी वेस्ट में 10 मंजिला इमारत में बुधवार सुबह भीषण आग लग गई। आग में झुलसने से तीन लोगों की मौत हुई है। वहीं, तीन अन्य लोग घायल हो गए। घायलों की पहचान चंद्रप्रकाश सोनी (74), कांता सोनी (74) और 42 वर्षीय पेलुबेटा के रुप में हुई है। घायलों को कूपर अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। जानकारी के अनुसार, आग लगने की सूचना पर दमकल विभाग की गाड़ियां मौके पर पहुंची। फिलहाल अभी तक आग पर काबू नहीं पाया जा सका है। मौके पर फायर ब्रिगेड की गाड़ियों, हाइड्रेंट, टर्नटेबल सीढ़ी और एक एम्बुलेंस मौजूद हैं। आग एक आवासीय फ्लेट तक ही सीमित है और अधिकारी स्थिति पर करीब से नजर रख रहे हैं। फिलहाल आग पर काबू पाया जा रहा है।

अब मणिपुर में होगी शांति, मैतेई, कुकी और नगा के बीच बनी सहमति, केंद्रीय गृहमंत्रालय ने बुलाई थी विधायकों की बैठक

नई दिल्ली। मणिपुर में जारी हिंसा के बीच शांति की पहली हुई। केंद्रीय गृह मंत्रालय की पहल पर मणिपुर के मैतेई, कुकी और नगा समुदायों के 20 विधायक दिल्ली पहुंचे। बैठक पहले गृह मंत्रालय में तय थी, लेकिन बाद में उन्हें खान मार्केट स्थित आईबी दफ्तर ले जाया गया। मंगलवार को बैठक में आईबी के पूर्वोत्तर के संयुक्त निदेशक राजेश कांबले, बीजेपी के समन्वयक संबित पात्रा, केंद्र के सुरक्षा सलाहकार एके मिश्रा और अन्य अधिकारी मौजूद थे। बैठक में पहले कुकी, फिर मैतेई और बाद में नगा नेताओं से बातचीत की गई, जिसमें उन्होंने अपनी-अपनी मांगें केंद्र के सामने रखीं। इसके बाद सभी नेताओं को एकत्रित कर संकल्प दिलाया कि मणिपुर में न तो कोई गोली चलेगी और न ही किसी की जान जाएगी। तीनों समुदायों के प्रतिनिधियों ने इस पर सहमति जताई और एक-दूसरे से हाथ मिलाया। सूत्रों के मुताबिक मणिपुर में हालात को सुधारने के लिए नगा लोगों का अहम रोल था। राज्य में 2016 में सात नए जिले बनाए गए थे, जिन्हें कुकी बहुल कहा जाता है, हालांकि यहां नगा भी रहते हैं। नगा संगठन, यूनाइटेड नगा काउंसिल, इन जिलों को वापस लेने और 1972 की स्थिति को बहाल करने की मांग कर रहा है। 11 सितंबर को गृह मंत्रालय से 15 दिन में इस मुद्दे को हल करने की चेतावनी दी थी। कुकी जनजाति ने तीन मुख्य मांगें उठाई जिसमें सीएम एन. बीरेन सिंह को हटाना, कुकी इलाकों में अलग प्रशासन की मांग और हथियारबंद समूहों को गैर-कानूनी घोषित करना। इन मांगों पर अंतिम निर्णय कुकी काउंसिल की बैठक में लिया जाएगा, जिसमें आगे की रणनीति तय की जाएगी।

संक्षिप्त

बैठक आयोजित

बुढ़मू : आगामी विधानसभा चुनाव के सफल आयोजन को लेकर बुधवार को बुढ़मू अंचल कार्यालय में अंचलाधिकारी सच्चिदानंद कुमार वर्मा की अध्यक्षता में एक बैठक आयोजित की गई। बैठक में प्रखंड के सभी राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधि शामिल हुए। सीओ ने सभी नेताओं को आदर्श आचार संहिता पालन करने का निर्देश देते हुए अनेक जानकारियां दिया। साथ ही जगह जगह लगे विभिन्न पार्टियों के झंडा व बैनर को भी हटाया गया। मौके पर बीडीओ धीरज कुमार, थाना प्रभारी रितेश कुमार महतो, जीप सदस्य रामजीत गंझु, आजसू प्रखंड अध्यक्ष सह प्रखंड प्रमुख सत्यनारायण मुंडा, उपप्रमुख सह भाजपा के वरिष्ठ नेता हरदेव साहू, जेएमएम प्रखंड अध्यक्ष भुवनेश्वर साहू समेत दर्जनों प्रतिनिधि शामिल हुए।

प्रशासन सख्त, राजनीतिक बैनर, पोस्टर और होर्डिंग हटाने का निर्देश नहीं तो होगी कड़ी कार्रवाई

इटकी : विधान सभा चुनाव की उद्घोषणा होते ही इटकी में स्थानीय प्रशासन ने विभिन्न पार्टियों द्वारा लगाये गये राजनीतिक पोस्टर ,बैनर और होडिंग को हटाने का कार्य शुरू कर दिया है। मंगलवार को कर्मचारियों एक टीम ने प्रखण्ड मुख्यालय और पंचायत सचिवालय परिसर सहित अन्य स्थलों में लगे सरकार की मईयां योजना,फुलो झानो आर्शिवाद योजना,अबुआ आवास योजना सहित कई अन्य विकास योजना के लगे पोस्टर, बैनर को हटा दिया है। बीडीओ प्रवीण कुमार ने 72 घण्टों के अंतराल में सभी दलों के जन प्रतिनिधियों के द्वारा प्रचार प्रसार के लिए लगाई गई पोस्टर,बैनर, झण्डा,दिवार लेखन सहित अन्य वस्तुओ को हटा लेने का निर्देश जारी किया है। उन्होंने सख्त लहजे में कहा कि किसी भी राजनीतिक दल के बैनर पोस्टर निर्धारित समय पर नही हटाये गये तो उनके विरुद्ध न्याय संगत कानूनी कार्रवाई की जायेगी। इधर चुनाव को लेकर प्रशासन व्यापक रूप से तैयारी में जुट गया है। प्रखण्ड के 49 मतदान केन्द्रों में डोर-टू -डोर मतदाता जागरूकता अभियान चला रखा है इस दौरान एवीएम और वीवीपैड का प्रदर्शनी कर ग्रामीण मतदाताओं को वोटिंग करने की प्रक्रिया सहित कई अन्य जानकारी दी जा रही है। प्रखण्ड में मतदाता पुर्नरीक्षन कार्य को पूरा किया जा चुका है।

इधर बुधवार को बीडीओ प्रवीण कुमार ने अधिकारियों की एक टीम के साथ बुथों का भौतिक निरीक्षण किया। इसके बाद में प्रखण्ड मुख्यालय के सभागार जनप्रतिनिधियों के साथ बैठक कर आचार- संहिता का अक्षरतः अनुपालन की अपील की बैठक में सीओ मो० अनीश, बीडीओ प्रवीन कुमार,थाना प्रभारी अभिषेक कुमार, बीपीआरओ रईस मलिक, बीएसओ हेमन्त एक्का , प्रमुख किरण उरांव,उप प्रमुख परवेज राजा, आजसू जिला सचिव मुतेर्जा आलम, कांग्रेस के राजन किस्पोट्टा, झामुमो प्रखण्ड अध्यक्ष पम्पू इकबाल, भाजपा प्रखण्ड अध्यक्ष सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त का कार्यालय, हजारीबाग
(निर्वाचन व्यय अनुश्रवण कोषांग)

-ःआदेशः-

विधानसभा आम निर्वाचन 2024 के अभ्यर्थियों के निर्वाचन व्यय पर निगरानी रखने तथा क्षेत्र में निर्वाचन प्रचार प्रसार के रूप में रिश्वत, नगदी वितरण, शराब आदि के वितरण पर नियंत्रण रखने, असामाजिक तत्वों की आवाजाही पर नजर रखने के लिए उड़न दस्ता दल (F.S.) एवं स्थैतिक निगरानी दल (S.S.T.) का गठन किया गया है। उड़न दस्ते, स्थैतिक निगरानी दल या पुलिस पदाधिकारी के द्वारा जाँच के क्रम में यदि कोई जब्ती की जाती है तो उसके नियमानुसार अवमुक्त करने हेतु **निर्वाचन व्यय अनुवीक्षण पर अनुदेशों का सार–संग्रह के मानक प्रचालन प्रक्रिया, दिनांक 29 मई 2015 के पैरा 16** पर दिये गये निदेशानुसार आम जनता तथा सही व्यक्तियों को असुविधा से बचाने के लिए तथा उनकी शिकायतो, यदि कोई हो तो, का त्वरित निवारण हेतु एक **जिला शिकायत समिति (District Grievance Committee) गठित करने का निदेश है।**

उपरोक्त निदेशानुसार जिला शिकायत समिति (District Grievance Committee) का गठन करते हुए समिति में निम्नवत तीन पदाधिकारियों की प्रतिनियुक्ति की जाती है:–

क्र० सं०	पदनाम	मोबाईल नम्बर	समिति में पद
1	मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, जिला परिषद–सह –उप विकास आयुक्त,हजारीबाग।	9431140734	अध्यक्ष
2	नोडल पदाधिकारी निर्वाचन व्यय अनुश्रवण कोषांग, हजारीबाग	9199977847	संयोजक
3	कोषागार पदाधिकारी, हजारीबाग	9955114266	सदस्य

समिति के दायित्वः–

1 उड़न दस्ते, स्थैतिक निगरानी दल या पुलिस पदाधिकारियों द्वारा की गई नकदी आदि की जब्ती के सभी मामले तत्काल जिले में गठित समिति के संज्ञान में लाए जाऐंगे।

2 समिति, जब्ती के प्रत्येक मामले की अपनी ओर से जाँच करेगी तथा जहां समिति यह पाती है कि मानक प्रचालन प्रक्रिया के अनुसार जब्ती के संबंध में कोई प्राथमिकी/शिकायत दर्ज नही की गई है या जहां जब्ती किसी अभ्यर्थी या राजनीतिक दल या किसी निर्वाचन अभियान इत्यादि से जुड़ी हुई नही है तो वह ऐसे व्यक्तियों को जिनसे नकदी जब्त की गई थी, को ऐसी नकदी रिलीज करने के बारे में इस आशय का एक स्पीकिंग आदेश जारी करने के पश्चात रिलीज आदेश जारी करने के लिए तत्काल कदम उठाएगी।

3 यदि रिलीज की गई नकदी 10 लाख रूपये से अधिक होता है तो रिलीज किये जाने से पहले आयकर के नोडल पदाधिकारी को सूचित किया जाएगा।

4 जब्ती दस्तावेज में जब्ती के विरूद्ध अपील की प्रक्रिया का उल्लेख किया जायेगा एवं नकदी की जब्ती के समय ऐसे व्यक्तियों को इसकी सूचना भी दी जायेगी।

यह आदेश तत्काल प्रभाव से लागू होगा।

जिला निर्वाचन पदाधिकारी
–सह–उपायुक्त, हजारीबाग

PR 339118 Election(24-25)#D

भारत मुन्डा समाज चुनाव में मुन्डा समाज के प्रत्याशी को सर्मथन करेगा

अनगड़ा : भारत मुन्डा समाज झारखंड विधान सभा चुनाव में मुन्डा समाज के प्रत्याशी को सर्मथन करने का निर्णय लिया है। उक्त जानकारी बूधवार को होटल राजधानी में आयोजित समाज के एक पत्रकार सम्मेलन भारत मुन्डा समाज के प्रखंड अध्यक्ष रिझुवा मुन्डा ने दी। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय राजनीतिक दल या क्षेत्रीय दल इस बार एसटी के लिए आरक्षित सीटों पर मुन्डा समाज को अपना प्रत्याशी बनाती है तो भारत मुन्डा समाज उनका सर्मथन करेगी उन्होंने कहा कि छोटानागपूर में मुन्डाओं का पारम्परिक शासन व्यवस्था वर्षो से रहा और जितने भी मूलवासी हैं उन्हें यहां बसाने का काम किया है। कहा कि मुन्डा जाति की आर्थिक समाजिक और राजनीतिक स्थिति ठीक नहीं इसलिए इस समाज को राजनीति में प्राथमिकता मिली चाहिए। प्रत्रकार सम्मेलन में सचिव सोहन मुन्डा उपाध्यक्ष शिवलाल पहान पुषनाथ मुन्डा कोषध्यक्ष राजेश पहान ग्राम प्रधान देवराज पहान भीम सिंह मुन्डा सीताराम मुन्डा सत्येन्द्र मुन्डा बरतु मुन्डा देवराज पहान मुन्डा मोती राम मुन्डा पुषनाथ मुन्डा राजदेव पहान अनिल मुन्डा सेवाराम मुन्डा इत्यादि उपस्थित थे।

सीसीएल में एक दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन

रांची : सीसीएल के मानव संसाधन विकास विभाग ने 16/10/2024 को साइबर सुरक्षा पर एक दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री पंकज कुमार, सीवीओ, सीसीएल, श्री ए.के. सिंह, महाप्रबंधक (सतर्कता), और श्री सुरेश बेहरा, महाप्रबंधक (सिस्टम) की उपस्थिति में किया गया। सीवीओ श्री पंकज कुमार एवं श्री सुरेश बेहरा ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए साइबर सुरक्षा के महत्व पर जोर देते हुए एक उत्पादक और इंटरैक्टिव सत्र की शुभकामनाएँ दीं। सत्र में डिजिटल साक्षरता जैसे प्रमुख विषयों पर चर्चा की गई जिसमें यह समझाया गया कि हम ऑनलाइन कितने सुरक्षित हैं, विभिन्न इंटरनेट साइटों पर नेविगेट करते समय क्या करें और क्या न करें, साइबर सुरक्षा के स्तंभ (गोपनीयता, अखंडता और उपलब्धता), और एक मजबूत साइबर को बढ़ावा देने के महत्व पर सुरक्षा संस्कृति का निर्माण कैसे करें। यह कार्यक्रम अत्यधिक लाभकारी साबित हुआ, जो पेशेवर और व्यक्तिगत दोनों तरह से मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करने के साथ-साथ प्रतिभागियों को खुद को और अपने संगठनों को साइबर खतरों से बचाने के लिए आवश्यक ज्ञान से लैस किया।

ज्ञात हो कि यह क्षमता निर्माण कार्यक्रम सीसीएल में चल रहे सतर्कता जागरूकता अभियान 2024 के अंतर्गत आयोजित किया गया था।सीसीएल द्वारा इस अभियान के तहत मुख्यालय सहित सभी क्षेत्रों में कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

अनुमण्डल पदाधिकारी-सह-दण्डाधिकारी का कार्यालय, गुमला
(गोपनीय शाखा)

आदेश

भारत निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली के द्वारा दिनांक 15.10.2024 को आहुत की गई प्रेस वार्त्ता के आलोक में **आगामी विधान सभा चुनाव–2024** के लिए आदर्श आचार संहिता तत्काल प्रभाव से लागु हो गया है।

उक्त परिप्रेक्ष्य में आगामी विधान सभा चुनाव–2024 के कम में सम्पूर्ण गुमला अनुमण्डल परिक्षेत्र के अधीन लोक परिशांति कायम रखने के निमित्त मैं **राजीव नीरज, अनुमण्डल दंडाधिकारी, गुमला** भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा–163 (पूर्व का दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा–144) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए **दिनांक 15.10.2024 के** अप0 04.00 बजे से मतगणना समाप्ति की तिथि तक निषेधाज्ञा लागु करता हूँ। तद्आलोक में :–

1. सम्पूर्ण गुमला अनुमण्डल परिक्षेत्र में किसी प्रकार के घातक हथियार, आग्नेयास्त्र या विस्फोटक पदार्थ लाने एवं ले जाने पर पूर्णतः प्रतिबंध रहेगा, जो शस्त्र अनुज्ञप्तिधारियों पर भी प्रभावी होगा।
   परन्तु यह निषेधाज्ञा सरकारी पदाधिकारी/कर्मचारी/पुलिस पदाधिकारी एवं कर्त्तब्य पर तैनात पुलिस बल, नेपालियों एवं सिखों द्वारा पारंपरिक तरीके से धारण की जाने वाली क्रमशः खुखरी तथा कृपाण पर लागु नहीं होगा।
2. सरकारी/अर्द्धसरकारी एवं किसी स्थानीय संकायों जैसे महाविद्यालय, उच्च विद्यालय, प्राथमिक, मध्य एवं बुनियादी विद्यालयों एवं किसी भी आम भूमि पर किसी प्रकार का आम सभा का आयोजन करने तथा पुरे अनुमण्डल परिक्षेत्र में जुलूस निकालने पर मनाही की जाती है। यह निषेधाज्ञा शव–यात्रा, शादी विवाह, मांगलिक कार्य पर लागु नहीं होगा। परन्तु इसके उपयोग के लिए अधोहस्ताक्षरी की अनुमति आवश्यक होगी।
3. सम्पूर्ण गुमला अनुमण्डल परिक्षेत्र में रात्रि 10.00 बजे से प्रातः 6.00 बजे तक ध्वनि विस्तारक यंत्र का उपयोग प्रतिबंधित किया जाता है।
   उपर्युक्त शर्त मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा या धार्मिक स्थलों पर लागु नहीं होगा। मंदिर मस्जिद, गिरजाघर, गुरूद्वारा एवं अन्य पूजा स्थल को निर्वाचन प्रचार से प्रतिबंधित किया जाता है।
4. किसी सार्वजनिक/सरकारी सम्पत्ति या बिना अनुमति के किसी व्यक्तिगत सम्पत्ति पर नारा लिखना, पोस्टर पम्पलेट साटना, झंडा टांगना, सार्वजनिक संड़कों पर बैनर लगाना, होल्डिंग लगाना, तोरण द्वार लगाना पूर्णतः प्रतिबंधित होगा।
5. कोई भी व्यक्ति/संगठन/ग्रुप के द्वारा फेक न्यूज अथवा अन्य प्रकार का भ्रामक न्यूज/मैसेज/फोटो इत्यादि का प्रसार न तो सोशल मिडिया (Whats App/SMS/FacebokTwitter etc) और न किसी अन्य इलेक्ट्रॉनिक के माध्यम से प्रसारित करेंगे।
6. किसी राजनीतिक दल अथवा, प्रत्याशी या चुनाव कार्य से सम्बद्ध किसी व्यक्ति के द्वारा किसी सरकारी/विभागीय वाहन का दुरूपयोग नहीं किया जाएगा।
7. किसी व्यवसायिक वाहन पर फ्लैग/स्टिकर का प्रदर्शन प्रतिबंधित रहेगा, यदि उक्त वाहन चुनाव कार्य हेतु वैधानिक दृष्टिकोण से वैध न हो।
8. मोटरयान अधिनियम के अधीन के प्रावधान के तहत किसी निजी वाहन में लगाया गया फ्लैग/स्टीकर, जो किसी विशेष राजनीतिक दल का समर्थन करता हो, भारतीय दण्ड विधान की धारा – 171 H से आच्छादित होगा।
9. दिवाल लेखन/पोस्टर/कट–ऑऊट/होर्डिंग/बैनर/फ्लैग इत्यादि जैसे सभी अनाधिकृत राजनितिक विज्ञापन, जो सार्वजनिक संपत्ति/सार्वजनिक स्थान यथा–रेलवे स्टेशन/बस स्टैण्ड/रेलवे पुल/सरकारी बस/बिजली–टेलीफोन खंभा/एयरपोर्ट/रोडवेज/नगरपालिका–स्थानीय भवन का गलत उपयोग हेतु उत्तरदायी हो, को आदर्श आचार संहिता के प्रभावी होने से 48 घंटे के अन्दर हटाया जाएगा।
10. किसी भी उम्मीदवार को ऐसा कोई कार्य नहीं करना है जिससे किसी धर्म, सम्प्रदाय या जाति के लोगों की भावना को ठेस पहुँचे या उनमें विद्वेष या तनाव पैदा हो।
11. मत प्राप्त के लिए धार्मिक, साम्प्रदायिक या जातीय भावनाओं का सहारा नहीं लिया जाएगा।
12. किसी भी उम्मीदवार अथवा राजनीतिक पार्टी के लिए पूजा के किसी स्थान जैसे कि मंदिर, गिरजाघर, गुरूद्वारा आदि का उपयोग निर्वाचन प्रचार के लिए नही किया जाएगा।
13. किसी उम्मीदवार के व्यक्तिगत जीवन के ऐसे पहलुओं की आलोचना नहीं किया जाना है जिनका संबंध सत्यता से स्थापित न हुई हो।
14. किसी अभ्यर्थी की आलोचना उसके पूर्व कार्य तक ही सीमित रहनी है तथा आलोचना असत्यापित आरोपों पर आधारित नही की जानी है।
15. प्रत्येक व्यक्ति के शांतिपूर्ण घरेलु जीवन के अधिकार का सम्मान किया जाना है। चाहे उसके विचार कैसे भी क्यों न हो। किसी व्यक्ति के कार्यो या विचारों का विरोध करने के लिए किसी उम्मीदवार द्वारा ऐसे व्यक्ति के घर के सामने धरना देने, नारेबाजी करने या प्रदर्शन करने की कार्रवाई का कतई समर्थन नहीं किया जायेगा।
16. राजनीतिक दलों एवं उम्मीदवार को ऐसे सभी कार्यो से परहेज करना होगा जिससे आदर्श आचार संहिता के प्रावधानों का उल्लंघन होता हो।
17. ऐसा कोई पोस्टर, इस्तेहार, पम्पलेट या परिपत्र, जिसमें मुद्रक और प्रकाशक का नाम और पता नहीं हो, लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा 124 A का उल्लंघन माना जाएगा।
18. किसी उम्मीदवार के निर्वाचन की संभावना पर प्रतिकूल प्रभाव डालने के उद्देश्य से उसके व्यक्तिगत आचरण और चरित्र या उम्मीदवारी के संबंध में ऐसा कथन या समाचार का प्रकाशन कराना, जो मिथ्या हो या जिसके सत्य होने का विश्वास न हो, की मनाही रहेगी।
19. किसी चुनाव सभा में गड़बड़ी करना या विध्न डालना भी आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन माना जाएगा।
20. मतदान के दिन तथा मतदान समाप्ति के 48 घंटे पूर्व सार्वजनिक सभा करना वर्जित होगा।
21. मतदाताओं को रिश्वत या किसी प्रकार का पारितोषिक देना भी आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन माना जाएगा।
22. मतदान केन्द्र के 100 मीटर के अन्दर किसी प्रकार का चुनाव प्रचार करना या मत अधियाचना करना आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन माना जाएगा।
23. किसी प्रत्याशी अथवा राजनीतिक दल के द्वारा मतदाताओं को मतदान केन्द्र तक लाने या ले जाने के लिए वाहनों का उपयोग करना वर्जित किया जाता है।
24. किसी प्रत्याशी अथवा राजनीतिक दल अथवा किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा मतदान केन्द्र में या उसके आसपास विश्रृंखल आचरण करना या मतदान केन्द्र के अधिकारियों के कार्य में बाधा डालना आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन माना जाएगा।
25. किसी व्यक्ति के द्वारा किसी मतदाता का प्रतिरूपण करना अर्थात गलत नाम से मतदान का प्रयास करना दण्डणीय अपराध माना जायेगा।
26. मतदान के दो दिन पूर्व से लेकर मतदान के दिन तक किसी उम्मीदवार द्वारा न तो शराब एवं अन्य नशीली पेय पदार्थ खरीदी जाएगी और न ही उसे किसी को पेश या वितरित किया जाएगा। प्रत्येक उम्मीदवार द्वारा अपने कार्यकर्त्ताओं को भी ऐसा करने से रोकना होगा।
27. किसी भी उम्मीदवार द्वारा किसी भी व्यक्ति को भूमि, भवन अहाते या दीवार का उपयोग झण्डा टांगने, पोस्टर चिपकाने, नारे लिखने आदि प्रचार कार्यो के लिए उसकी लिखित अनुमति के वगैर नहीं किया जायेगा और अपने समर्थकों एवं कार्यकर्त्ताओं को भी ऐसा करने से रोकना होगा।
28. किसी भी उम्मीदवार द्वारा उसके पक्ष में लगाये गये झण्डे या पोस्टर दूसरे उम्मीदवार के कार्यकर्त्ताओं द्वारा नहीं हटाया जायेगा।
29. किसी हाट, बाजार या भीड़ भाड़ वाले सार्वजनिक स्थल पर चुनाव सभा के आयोजन के लिए सक्षम प्राधिकारी से पूर्व अनुमति ली जाएगी तथा स्थानीय पुलिस थाने को ऐसी सभा के आयोजन की पूर्व सूचना दी जाएगी ताकि शांति व्यवस्था बनाये रखने तथा यातायात को नियंत्रित करने के लिए पुलिस आवश्यक प्रबंध कर सकें।
30. प्रत्येक उम्मीदवार को किसी अन्य उम्मीदवार द्वारा आयोजित सभा या जुलूस में किसी प्रकार की गड़बड़ी करने या बाधा डालने से अपने कार्यकर्त्ताओं तथा समर्थकों को रोकना होगा। यदि दो भिन्न–भिन्न दलों या उम्मीदवारों द्वारा पास–पास स्थित स्थानों में सभायें की जा रही है तो ध्वनि विस्तारक यंत्रों के मुँह विपरीत दिशा में रखने होंगे।
31. किसी उम्मीदवार के समर्थन में आयोजित जुलूस ऐसे क्षेत्र या मार्ग से होकर नहीं निकाला जाएगा जिसमें कोई प्रतिबंधात्मक आदेश लागु हो। जुलूस के निकलने के स्थान समय और मार्ग तथा समापन के बारे में स्थानीय पुलिस थाने में कम से कम एक दिन पहले सूचना दी जायेगी। इस बात का ध्यान रखा जाएगा कि जुलूस के कारण यातायात में कोई बाधा न हो। जुलूस में लोगों को ऐसी चीजे लेकर चलने से रोका जायेगा जिसको लेकर चलने पर प्रतिबंध हो या जिनका उत्तेजना के क्षणों में दुरूपयोग किया जा सकता है।
32. प्रत्येक उम्मीदवार को किसी अन्य उम्मीदवार के पुतले लेकर चलने या उन्हें किसी सार्वजनिक स्थान में जलाये जाने अथवा इसी प्रकार के अन्य प्रदर्शन का आयोजन करने से अपने कार्यकर्त्ताओं को रोकना होगा।

यह आदेश तत्काल प्रभाव से लागु किया जाता है।

अनुमण्डल दंडाधिकारी
गुमला

PR 339164 District (24-25)_D

न्यायालय अनुमण्डल दण्डाधिकारी, सिमरिया (चतरा)।
(निषेधाज्ञा आदेश)

भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा–163 के अन्तर्गत निषेधाज्ञा (पुराना धारा–144 द0प्र0स0)

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा झारखण्ड विधानसभा आम निर्वाचन–2024 की घोषणा प्रेस कॉफ्रेंस के माध्यम दिनांक–15.10.2024 को जारी कर दी गई है। भारत निर्वाचन आयोग की घोशणा की तिथि से सम्पूर्ण सिमरिया अनुमण्डल क्षेत्र में आदर्श आचार संहिता प्रभावी हो गया है।

उक्त अवधि में विभिन्न राजनीतिक दलों तथा प्रत्याशियों के द्वारा चुनाव प्रचार हेतु जन–सभा/जूलूस का आयोजन किया जाएगा। जनसभा एवं जुलूस में राजनीतिक प्रतिद्वंदिता एवं प्रतिस्पर्द्धा के कारण शक्ति प्रदर्शन कर मतदाताओं को प्रभावित/आतंकित किये जाने तथा विधि–व्यवस्था भंग होने की प्रबल संभावना बनी रहती है। इसके अतिरिक्त मतदाताओं को डराने, धमकाने, जातीय, साम्प्रदायिक तथा धार्मिक विद्वेश की भावना फैलाने के लिए अवांछित/असामाजिक तत्वों के सक्रिय होने के कारण विधि–व्यवस्था की समस्या उत्पन्न हो सकती है, जिसके कारण लोक शान्ति भंग हो सकती है एवं भयमुक्त तथा निष्पक्ष निर्वाचन में बाधा आ सकती है।

अतः उपरोक्त परिपेक्ष्य में मैं, **सन्नी राज, भा0प्र0से0**, अनुमण्डल दण्डाधिकारी, सिमरिया **भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा–163 के अन्तर्गत** प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए सिमरिया अनुमण्डल अन्तर्गत स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शान्तिपूर्ण चुनाव सम्पन्न कराने हेतु संतुश्ट होकर चुनाव प्रक्रिया की समाप्ति होने तक अथवा अधिकतम 60 दिनों तक जो पहले हो चतरा जिला के सिमरिया अनुमण्डल के सम्पूर्ण क्षेत्र में **निषेधाज्ञा लागू** करते हुए निम्नांकित आदेश जारी करता हूँ :–

1. **रैली, सभा एवं धरना :–**
   - किसी भी व्यक्ति/राजनीतिक दल/संगठन/उम्मीदवार/अभ्यर्थी के द्वारा राजनीतिक प्रयोजन से संबंधित किसी भी प्रकार की सभा, जुलूस, धरना या किसी भी प्रकार का प्रदर्शन बिना सक्षम पदाधिकारी के पूर्वानुमति के आयोजित नहीं किया जाएगा।
   - जुलूस में किसी भी व्यक्ति के पास किसी भी प्रकार का धारदार हथियार (अस्त्र एवं शस्त्र) जो मानव शरीर के लिए घातक हों, को लेकर चलने पर प्रतिबंध रहेगा।
   - चुनावी अभियान/प्रचार के दौरान उपयोग में लाये जाने वाले वाहन बिना सक्षम पदाधिकारी की अनुमति या बिना प्राधिकृत वाहनों का उपयोग नहीं किया जायेगा।
   - रैली सभा एवं धरना में सरकारी सम्पति का उपयोग बिना अनुमति के उपयोग करना वर्जित रहेगा एवं अतिक्रमण नहीं किया जाएगा।
2. **ध्वनि विस्तारक यंत्र :–**
   - कार्यक्रम के दौरान लॉउडस्पीकर एक्ट–1955 अनुपालन करेंगे तथा यह सुनिश्चित करेंगे कि ध्वनि विस्तार यंत्र द्वारा **Noise Pollution (Regulation and control) Rule-2000** की धारा (1) में निर्धारित मानक स्तर तक ध्वनि उत्पन्न हो तथा प्रातः 6:00 बजे से 10:00 बजे रात्रि तक ही ध्वनि विस्तारक यंत्र का उपयोग करेंगे।
   - कार्यक्रम के दौरान लॉउडस्पीकर का उपयोग शांति पूर्ण रूप से भारत निर्वाचन आयोग के निदेशों का अनुपालन करेंगे।
   - ध्वनि विस्तारक यंत्र का प्रयोग भारत निर्वाचन आयोग के निदेशों के आलोक में सक्षम प्राधिकार से अनुमति प्राप्त कर किया जाएगा।
   - कार्यक्रम के दौरान किसी जाति/धर्म/सम्प्रदाय विशेष को संबोधित नहीं किया जाय तथा ऐसा कोई भी नारा/भाषण नहीं दिया जाए, जिससे सम्प्रदायिक सोहार्द बिगड़े एवं भारत निर्वाचन आयोग के निदेशों का अनुपालन करेंगे।
3. **सम्पति विरूपण अधिनियम :–**
   - किसी सरकारी भवन/दीवार/परिसर सम्पत्ति पर नारा लिखना, पोस्टर/पम्पलेट चिपकाना, पार्टी विशेष का झण्डा लगाना, होर्डिंग लगाना– भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) /मार्गदर्शिका/प्रावधानों के तहत् ही करेंगे। सार्वजनिक स्थलो पर प्रचार–प्रसार का कार्य सक्षम प्राधिकार के अनुमति के उपरान्त ही किया जायेगा। उक्त प्रतिबंध का उल्लंघन किये जाने पर संबंधित व्यक्तियों पर Prevention of Defacement of Property Act-1987 की धारा–3 (1), (2), (3), (4) एवं 5 के धाराओं/प्रावधानों के तहत् दण्डनीय होगा।
   - किसी भी व्यक्तिगत सम्पत्ति पर बिना सम्पत्ति मालिक के लिखित अनुमति के नारा लिखना, पोस्टर, पम्पलेट चिपकाना, पार्टी विशेष का झण्डा लगाना, होर्डिंग लगाना – भारत निर्वाचन आयोग के द्वारा जारी दिशा–निर्देश/मार्गदर्शिका के प्रावधानों का उल्लघंन करेंगे तो प्रतिबंधित रहेगा।
4. **पाँच या उससे अधिक व्यक्ति पर प्रतिबंध :– भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023** (भारतीय दण्ड संहिता) में परिभाशित किसी भी अपराध करने तथा शांति भंग करने के उद्देश्य से 05 **(पाँच) या उससे अधिक** व्यक्ति का किसी भी स्थान पर एकत्रित होना प्रतिबंधित रहेगा।
5. कोई भी व्यक्ति/राजनीतिक दल/संगठन/उम्मीदवार/अभ्यर्थी ऐसे किसी प्रकार का पोस्टर, पर्चा, आलेख, फोटो आदि का प्रयोग नहीं करेंगे, जो किसी व्यक्ति/समुदाय/धर्म/जाति की भावनाओं को आहत करता हो, तथा इससे आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन होता हो।
6. किसी भी व्यक्ति अथवा राजनीतिक दल या संगठन, उम्मीदवार/अभ्यर्थी किसी व्यक्ति विशेश के विरूद्ध ऐसे किसी आपत्तिजनक टिप्पणी, विधि–विरूद्ध संदेश का प्रयोग व्हाट्सएप/फेसबुक/ट्विटर/इंस्टाग्राम अथवा सोशल मिडिया पर या किसी भी तंत्र पर नहीं करेंगें, जिससे किसी भी व्यक्तिगत/ मानसिक/धार्मिक/जातीय भावनाएँ आहत होती हों तथा चुनाव संबंधी आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन होता हो। उक्त का उल्लंघन करने की स्थिति में संबंधित पर सुसंगत धाराओं/प्रावधानों के तहत् कार्रवाई की जाएगी। (Sec 125 of RP Act, 1951 और Old act-153A Of IPC/ New Act-196 Of BNS)
7. **कोई भी राजनीतिक दल/अभ्यर्थी निम्नवत् कार्य नहीं करेंगे :–**
   - किसी भी व्यक्ति/राजनीतिक दल/संगठन/उम्मीदवार/अभ्यर्थी किसी धार्मिक स्थल का प्रयोग राजनीतिक प्रचार के लिए नहीं करेंगें। मतदाताओं को डराने, धमकाने का कार्य नहीं करेंगें और न हीं किसी भी मतदाता को प्रलोभन में लाने का प्रयास एवं साम्प्रदायिक भावना को भड़काने का कार्य करेंगें तो (Sec 129 of RPA, 1951 or Act-205 BNS(Old IPC 171 (B) (C)(E) and (F) & के अन्तर्गत दण्डनीय होगा।
   - किसी राजनीतिक दल अथवा अभ्यर्थी अथवा अन्य किसी व्यक्ति के द्वारा ऐसा कोई कार्य नहीं किया जायेगा, जिससे विभिन्न जातियों या धार्मिक या भाषायी समुदायों के बीच घृणा की भावना उत्पन्न हो।
   - सरकारी स्वामित्व वाले गेस्ट हाउस, भवन का कोई भी हिस्सा किसी भी राजनीतिक गतिविधियों/प्रचार/सभा/बैठक के लिए उपयोग–भारत निर्वाचन आयोग जारी दिशा–निदेश के आलोक में करेंगे।
   - प्रदूशण फैलाने वाले प्रचार सामग्रियों यथा प्लास्टिक/पॉलिथीन से बने पोस्टर, बैनर का इस्तेमाल राजनीतिक प्रचार–प्रसार के लिए नहीं किया जायेगा।
   - कोई भी पार्टी अपना अस्थाई कार्यालय धार्मिक स्थल, शिक्षण संस्थान एवं मतदान केन्द्र के 200 मीटर के अन्दर नहीं करेंगे।
   - कोई व्यक्ति शराब, नकदी या कोई अन्य ऐसी सामग्री वितरित करते हुए पाया जाता है, जिससे चुनाव कार्य प्रभावित हो सकता है, तो उसे विधिसम्मत धाराओं/प्रावधानों के तहत् दण्डित किया जायेगा।
   - निर्वाचन से संबंधित पम्पलेट, पोस्टर इत्यादि पर मुद्रक एवं प्रकाशक का नाम व पता होना अनिवार्य होगा अन्यथा यह 127A of RPA, 1951 का उल्लंघन माना जायेगा।
   - सार्वजनिक खजाने की लागत पर सरकार या पार्टी की उपलब्धियों को हाईलाइट करते हुए किसी भी नई विज्ञापन की अनुमति नहीं होगी और मौजूदा विज्ञापन को जारी रखने की अनुमति नहीं होगी।
   - मतदाताओं को कोई प्रलोभन वित्तीय या अन्य किसी प्रकार से प्रदान नहीं करेंगे।
   - मतदाताओं को जाति या साम्प्रदायिक भावनाओं से जोड़कर अपने पक्ष में आकर्षित नहीं करेंगे।
   - विभिन्न जाति या समुदायों या धर्मों के बीच मौजूदा विभेदों को बढ़ावा देने या तनाव पैदा करने का कोई प्रयास नहीं करेंगे।
   - चुनाव के दौरान किसी भी राजनीतिक पार्टी या कार्यकर्ता द्वारा भ्रष्टाचारिक प्रथाओं या चुनावी अपराधों का इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए अन्यथा विधिसम्मत कार्रवाई की जायेगी।
   - दूसरी राजनीतिक पार्टियों या उम्मीदवारों द्वारा आयोजित सार्वजनिक सभाओं या जुलूसों में कोई व्यवधान/बाधा नहीं उत्पन्न करेंगे।
   - कार्यक्रम के दौरान भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी आदर्श आचार संहिता/मार्गदर्शिका में उल्लेखित प्रावधानों का अक्षरशः अनुपालन करना होगा।
8. कोई भी व्यक्ति/राजनीतिक दल/संगठन/उम्मीदवार/अभ्यर्थी किसी भी प्रकार का अनुज्ञप्ति हथियार लेकर नहीं चलेगा तथा आग्नेयास्त्र, तीर–धनुश, लाठी, भाला एवं मानव शरीर के लिए अन्य घातक हथियार का प्रदर्शन नहीं करेंगे।
   परन्तु उल्लेखनीय है कि यह आदेश :–
   - परम्परागत रूप से शस्त्र धारण करने वाले समुदाय (नेपालियों द्वारा खुखरी धारण करने तथा सिखों द्वारा कृपाण धारण करने वाले), विधि–व्यवस्था एवं निर्वाचन कर्त्तव्य पर लगे दण्डाधिकारियों/निर्वाचन कर्मियों और पुलिस पदाधिकारियों पर लागू नहीं रहेगा।
   - यह आदेश जिला दण्डाधिकारी द्वारा विधानसभा आम निर्वाचन के अवसर पर निर्गत किये जाने वाले आदेश के आलोक में निर्दिश्ट स्थान पर शस्त्र अनुज्ञप्तिधारियों द्वारा शस्त्र निरीक्षण कराने एवं शस्त्र जमा करने हेतु शस्त्र ले जाने वाले अनुज्ञप्तिधारियों पर शिथिल रहेगा।
9. कोई भी व्यक्ति/राजनीतिक दल/संगठन/उम्मीदवार/अभ्यर्थी के द्वारा भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी आदर्श आचार संहिता के संदर्भ में समय–समय पर जारी दिशा–निर्देश के विपरीत कोई भी कार्य नहीं किया जायेगा।
10. यह आदेश पूर्वानुमति प्राप्त शादी/बारात पार्टी/शव–यात्रा/हाट–बाजार/ अस्पताल जा रहे मरीज के साथ–साथ जा रहे व्यक्तियों, विद्यालय एवं महाविद्यालय जाने वाले छात्र/छात्राओं एवं कर्त्तव्य पर तैनात सरकारी कर्मचारी/पुलिस बल पर लागू नहीं होगा। बशर्त्ते वे किसी तरह से भारत निर्वाचन आयोग के दिशा–निर्देश या विधि–व्यवस्था को भंग करने का कार्य कर रहे हो।

चूँकि संबंधित सभी व्यक्तियों को तत्काल रूप में नोटिस तामिला कराने में कठिनाई है, अतः यह आदेश एक पक्षीय (Ex-parte) पारित किया जाता है।

यह आदेश मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुहर से आज दिनांक–15.10.2024 के अपराह्न से जारी किया जाता है।
यह आदेश तत्काल प्रभाव से लागू होगा।

(सन्नी राज, भा0प्र0से0),
अनुमण्डल दण्डाधिकारी,
सिमरिया।

PR 339106 (Election) 24-25 (D)

अमेरिकन पब्लिक स्कूल मांडर में क्विज कम्पटीशन का आयोजन

मांडर : मांडर स्थित अमेरिकन पब्लिक स्कूल में बुधवार को क्लास प्रथम से पाँचवी के स्टूडेंट्स के लिए क्विज कंपटीशन का आयोजन किया गया। बेहतर प्रदर्शन करनेवाली छात्रा लाडली कुमारी को साइकल दिया गया। मौके पर बोलते हुए स्कूल के डायरेक्टर नौशाद आलम ने बतलाया कि हमारे विद्यालय में इस तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहते हैं। इससे बच्चों में विषय वस्तु के साथ-साथ सामान्य ज्ञान में भी बढ़ोतरी होती है। जो प्रतियोगी परीक्षाओं में काफी काम आता है। साथ ही उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों में इस तरह की परीक्षा आयोजन करने से झिझक दूर होती है। वे कक्षा में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं।

पावरग्रिड
POWERGRID

1. पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी क्षेत्र में "ईस्ट कोस्ट एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड और एनसीसी पावर प्रोजेक्ट्स लिमिटेड एलटीओए जनरेशन प्रोजेक्ट्स इन श्रीकाकुलम एरिया पार्ट-बी" के तहत परिसंपत्तियों के लिए विद्युत अधिनियम 2003 की धारा 79 (1) (डी) के साथ पठित धारा 62 और केंद्रीय विद्युत नियामक आयोग (व्यवसाय का संचालन) विनियम 2023 के विनियम 15 (1) (ए) और विनियम 23 के साथ पठित केंद्रीय विद्युत नियामक आयोग (टैरिफ विनियमों की शर्तें और नियम) 2024 के तहत टैरिफ के निर्धारण के लिए याचिका।

2. उपर्युक्त पारेषण प्रणाली के लाभार्थी हैं: (i) बिहार राज्य विद्युत (होल्डिंग) कंपनी लिमिटेड, (ii) पश्चिम बंगाल राज्य विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड, (iii) ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ उड़ीसा लिमिटेड, (iv) दामोदर घाटी निगम, (v) विद्युत विभाग, सिक्किम सरकार, गंगटोक, (vi) झारखंड बिजली वितरण निगम लिमिटेड, (vii) महाराष्ट्र राज्य विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड, (viii) गुजरात ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड, (ix) विद्युत विभाग- गोवा, (x) डीएनएचडी विद्युत वितरण निगम लिमिटेड, (xi) छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड, (xii) महाराष्ट्र राज्य विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड, (xiii) तमिलनाडु उत्पादन एवं वितरण निगम लिमिटेड, (xiv) केरल राज्य विद्युत बोर्ड लिमिटेड, (xv) विद्युत विभाग, पांडिचेरी सरकार, (xvi) आंध्र प्रदेश की पूर्वी विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड, (xvii) आंध्र प्रदेश की दक्षिणी विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड, (xviii) आंध्र प्रदेश केंद्रीय विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड, (xix) तेलंगाना की दक्षिणी विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड, (xx) नॉर्दर्न पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी ऑफ तेलंगाना लिमिटेड, (xxi) बैंगलोर इलेक्ट्रिसिटी सप्लाई कंपनी लिमिटेड, (xxii) गुलबर्गा इलेक्ट्रिसिटी सप्लाई कंपनी लिमिटेड, (xxiii) हुबली इलेक्ट्रिसिटी सप्लाई कंपनी लिमिटेड (xxiv) मैंगलोर इलेक्ट्रिसिटी सप्लाई कंपनी लिमिटेड और (xxv) चामुंडेश्वरी इलेक्ट्रिसिटी सप्लाई कॉर्पोरेशन लिमिटेड।

3. टेरिफ विवरण :

a) 2019-24 ब्लॉक — रूपये लाख में

संपत्ति का विवरण	E_COD	31.03.2024 तक पूर्णता लागत	टेरिफ	2019-20	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24
Asset-1	13.11 2018	301286.96	ट्रूइंग अप के आधार पर संशोधित AFC	49244.33	48151.74	47044.56	46263.19	45588.12

b) 2024-29 ब्लॉक — Rs in lakhs

संपत्ति का विवरण	31.03.2024 तक पूर्णता लागत	टेरिफ	2024-25	2025-26	2026-27	2027-28	2028-29
Asset-1	301286.96	AFC	44560.07	43287.65	42059.89	40892.67	39691.60

4. टैरिफ निर्धारण के लिए किए गए आवेदन की एक प्रति आवेदक की वेबसाइट www.powergridindia.com पर पोस्ट की गई है।

5. आवेदन में निहित टैरिफ निर्धारण के प्रस्तावों पर सुझाव और आपत्तियां, यदि कोई हों, तो लाभार्थी सहित किसी भी व्यक्ति द्वारा सचिव, केंद्रीय विद्युत विनियामक आयोग, 3 और 4 वीं मंजिल, चंद्रलोक बिल्डिंग, जनपथ, नई दिल्ली - 110 001 (या अन्य पता जहां आयोग का कार्यालय स्थित है) के समक्ष दायर की जानी चाहिए, जिसकी एक प्रति आवेदक को इस नोटिस के प्रकाशन के 30 दिनों के भीतर अपने कॉर्पोरेट कार्यालय के पते पर भेजनी होगी।

स्थान: गुड़गांव
दिनांक: 16.10.2024
Sd/-
महाप्रबंधक (वाणिज्यिक)

PG/CC/Notice-96/Advt-128/2024-25

पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
पंजीकृत कार्यालयः बी-9, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया, कटवारिया सराय, नई दिल्ली-110016
कॉर्पोरेट कार्यालयः "सौदामिनी", प्लॉट नंबर 2, सेक्टर-29, गुरूग्राम, हरियाणा - 122 001
एक महारत्न पीएसयू

संक्षिप्त

मारवाड़ी महिला समिति का दीपावली मेला आज

रामगढ़ : मारवाड़ी महिला समिति रामगढ़ शाखा द्वारा गुरुवार को स्थानीय होटल शिवम इन के सभागार में एक दिवसीय दीपावली मेले का आयोजन किया गया है। यह जानकारी देते हुए समिति की अध्यक्षा निशा जैन ने बताया कि मेले का उद्देश्य महिलाओं को व्यवसायिक कार्यों में सशक्त बनाना है। उन्होंने बताया कि मेले के अन्तर्गत झारखंड के विभिन्न शहरों तथा रामगढ़ की सुप्रसिद्ध बुटीकों को आमंत्रित किया गया है, सभी बुटीक बहनें अपने नए से नए संग्रह के साथ मेले में उपस्थित है, जिससे हमारी बहनें दीपावली तथा त्यौहारी मौसम में एक छत के नीचे अपनी जरुरत के सभी सामानों की खरीदारी कर सकें। साथ ही समिति के सदस्यों द्वारा नव निर्मित एक से एक स्वादिष्ट व्यंजन के स्टॉल तथा बच्चों के मनोरंजन के लिए खेल कूद के स्टॉल मेले के मुख्य आकर्षण है। समिति की अध्यक्षा निशा जैन सभी नगरवासियों से मेले में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने की अपील की है।

राजनीतिक दलों के साथ डीसी ने की बैठक, आचार संहिता का पढ़ाया पाठ

रामगढ़ : झारखंड विधानसभा चुनाव की घोषणा के बाद डीसी चंदन कुमार ने बुधवार को राजनीतिक दलों के साथ आवश्यक बैठक की। इस दौरान राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को आचार संहिता का पाठ पढ़ाया गया। डीसी चंदन कुमार ने इस दौरान सभी को कहा कि अधिसूचना जारी किए जाने के उपरांत से आदर्श आचार संहिता प्रभावी हो गई है। मौके पर उनके द्वारा विधानसभा क्षेत्र रामगढ़ जिले में 22 बड़कागांव, 23 रामगढ़ एवं 24 मांडू विधानसभा अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों की जानकारी दी गयी। सभी प्रतिनिधियों को पेड न्यूज मॉनिटरिंग, एक्सपेंडिचर मॉनिटरिंग आदि के तहत किए जाने वाले कार्यों की जानकारी दी गई।

बिना अनुमति का नही होगा प्रचार

उप निर्वाचन पदाधिकारी रविंद्र कुमार गुप्ता ने सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को पीपीटी के माध्यम से आदर्श आचार संहिता के दौरान क्या करें और क्या ना करें इस संबंध में विस्तार पूर्वक जानकारी दी। उन्हें बताया गया कि अब वे बिना आरओ की अनुमति के अपनी गाड़ी में ना तो पार्टी का झंडा लगा पाएंगे और ना ही बैनर। वाहनों और बैठकों में लाउडस्पीकर का प्रयोग करने की अनुमति सुबह 6 बजे से लेकर रात 10 बजे तक ही दी जाएगी।

सरकारी वाहन राजनीतिक कार्य में प्रयोग नहीं

निर्वाचन के समय मे कोई भी सरकारी कर्मचारी पॉलिटिकल एक्टिविटी में शामिल नहीं हो सकता है। अगर ऐसा होता है तो इसे भी अचार संहिता का उल्लंघन माना जाएगा और कड़ी कार्रवाई की जाएगी। मंत्रियों द्वारा ऑफिशियल वाहनों का प्रयोग राजनैतिक कार्यों के लिए रोक लगा दी गई है।

लाउस्पीकर के लिए लेनी होगी अनुमति

किसी भी दशा में बिना अनुमति के लाउडस्पीकर का प्रयोग निषेध किया गया है। वहीं किसी भी जुलूस व रैली के लिए जगह, समय और रुट का निर्धारण पहले से करके पुलिस प्रशासन से अनुमति लेना अनिवार्य है। बिना पूर्व सूचना के किसी भी जुलूस व रैली को अनुमति नहीं दी जाएगी।

मतदान केंद्र के 200 मीटर के दायरे में प्रचार प्रतिबंधित

पोलिंग स्टेशनों के 200मीटर दायरे के अंदर किसी भी प्रकार की चुनावी मीटिंग, कन्वेंसिंग, कोई भी आपत्तिजनक कार्य या कोई भी कैम्पेनिंग करने की अनुमति नहीं होगी। निर्वाचन के दौरान शराब का वितरण नहीं किया जा सकेगा। नॉमिनेशन के दौरान केवल 3 वाहनों को ही आरओ के कार्यालय के 200 मीटर के दायरे में आने की अनुमति होगी।

इन कार्यों पर भी पूर्ण प्रतिबंध

ऑफिशियल कार्यों को कैम्पेनिंग के कार्यों में मिक्स नहीं किया जाएगा। किसी भी प्रकार का प्रलोभन चाहे आर्थिक अथवा कोई और तरह से मतदाताओं को देने पर रोक है। निर्वाचक के द्वारा किसी भी प्रकार की जातीय और साम्प्रदायिक अपील नहीं की जाएगी। दूसरी पार्टियों व उनके कार्यकताओं के द्वारा असत्यापित आरोपों और विकृतियों के आधार पर किसी की आलोचना नहीं की जाएगी। किसी भी धार्मिक स्थल का प्रयोग चुनाव प्रचार के लिए नहीं किया जाएगा।

रजरप्पा परियोजना में नई बीई1800ई शॉवेल और टायर हैंडलर का निदेशक ने किया उद्घाटन

रजरप्पा : सीसीएल रजरप्पा खुली खदान में नई बीई1800ई शॉवेल और टायर हैंडलर का उद्घाटन निदेशक (परियोजना एवं योजना) सतीश झा द्वारा किया गया। इस अवसर पर रजरप्पा क्षेत्र के महाप्रबंधक कल्याणजी प्रसाद, सीसीएल मुख्यालय से महाप्रबंधक (उत्खनन) सुबोध कुमार, स्टॉफ ऑफिसर (उत्खनन) एसके सिन्हा, रजरप्पा प्रोजेक्ट के परियोजना अभियंता (उत्खनन) दिग्विजय सहित अन्य वरीय अधिकारी एवं कर्मी उपस्थित थे। निदेशक सतीश झा ने अपने संबोधन में इस अत्याधुनिक उपकरण के उपयोग से उत्पादन क्षमता में वृद्धि और कार्य कुशलता में सुधार की उम्मीद जताई। उन्होंने यह भी कहा कि ये नई

मशीनें पर्यावरण के प्रति संवेदनशील रहते हुए संचालन में अधिक उत्पादकता और सुरक्षा प्रदान करेंगी। वहीं महाप्रबंधक कल्याणजी प्रसाद ने कहा कि यह शॉवेल और टायर हैंडलर रजरप्पा प्रोजेक्ट की उत्पादन क्षमता को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएंगे और क्षेत्र के उत्पादन लक्ष्यों को हासिल करने में अहम भूमिका निभाएंगे।

इलाज के दौरान सीसीएलकर्मी का निधन अंतिम संस्कार में कई लोग हुए शामिल

रजरप्पा : रामगढ़ प्रखंड अंतर्गत कुंदरूकलां निवासी एवं गिद्दी-ए सीसीएल में कार्यरत मनोज कुमार महतो (47 वर्ष) का निधन मंगलवार को रांची के इरबा स्थित मेदांता अस्पताल में हो गया। वह किडनी एवं

फेफड़ा की बीमारी से ग्रसित थे और पिछले 10 दिनों से मेदांता अस्पताल में इलाज चल रहा था। जहां इलाज के दौरान उनका निधन हो गया। जिसके बाद पार्थिव शरीर को बुधवार को पैतृक गांव कुंदरूकलां लाया गया और दामोदर नदी के तट पर शमशान घाट पर अंतिम संस्कार किया गया। बड़े पुत्र 14 वर्षीय सुमित कुमार ने पिता को मुखाग्नि दी। वह अपने पीछे दो पुत्र सुमित एवं अमित, पत्नी सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन से पूरे गांव में मातम छा गया और परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया। अंतिम संस्कार में प्रमोद गुप्ता, छोटन ठाकुर, श्रवण सिंह, मनोज करमाली, अजीत सिंह, पिंकू सिंह, संजीत पटेल, पिंटू सिंह, कुस कुमार महतो, बिनोद मालाकार, सीताराम महतो, रामेश्वर महतो, कुलदीप गंझू, शंकर महली, टिंकू सिंह, सचिन कुमार, महेश मंडल, दिलीप महतो, हीरालाल महतो, अनुज महतो, तुलेश्वर महतो, नेवालाल महतो, सुंदर लाल महतो, प्रयाग महतो, महेंद्र महतो, कौलेश्वर महतो, रणधीर महतो, तुलसीदास महतो, निरंजन महतो (पत्रकार), शैलेंद्र महतो, बिमोद महतो, गौतम महतो, आर्यन पटेल सहित कई लोग शामिल थे।

विस चुनाव को लेकर स्थैतिक निगरानी दल एवं उड़न दस्ता दल का गठन

रामगढ़ : भारत निर्वाचन आयोग द्वारा विधानसभा आम निर्वाचन 2024 की अधिसूचना जारी किए जाने के उपरांत बुधवार को जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह डीसी चंदन कुमार की अध्यक्षता में जिला समाहरणालय के सभागार में चुनाव प्रक्रिया को शांतिपूर्ण संपन्न कराने के उद्देश्य से स्थैतिक निगरानी दल एवं उड़न दस्ता दल में प्रतिनियुक्ति पदाधिकारियों एवं पुलिस पदाधिकारियो का जिला स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

जिले के 7 चेक नाका स्थलों पर स्थैतिक निगरानी दल एवं 6 उड़न दस्ता दल का गठन

इस दौरान सभी को जानकारी देते हुए जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह डीसी ने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा विधानसभा आम निर्वाचन 2024 की अधिसूचना जारी किए जाने के उपरांत से आदर्श आचार संहिता प्रभावी हो गई है। चुनाव को सफलता पूर्वक सम्पन्न कराने के लिए जिले के 7 चेक नाका स्थलों पर स्थैतिक निगरानी दल एवं 6 उड़न दस्ता दल का गठन किया गया है। जो जिले में आने जाने वाले वाहनों पर निगरानी रखेगी। इस दौरान किए जाने वाले सभी कार्यों को विस्तार पूर्वक जानकारी दी गई। साथ ही उपस्थित सभी स्थैतिक निगरानी दल एवं उड़न दस्ता दल के प्रतिनियुक्ति प्रभारी पदाधिकारी, पुलिस पदाधिकारियों की कठिनाइयों को भी दूर किया गया।

उप निर्वाचन पदाधिकारी ने दी चुनाव से संबंधित जानकारी

बैठक के दौरान उप निर्वाचन पदाधिकारी रविंद्र कुमार गुप्ता ने ईएसएमएस ऐप एवं सी विजिल ऐप की कार्यों को भी विस्तार पूर्वक सभी प्रतिनियुक्ति पदाधिकारियों को जानकारी दी गई। बैठक में मुख्य रूप से निवार्ची पदाधिकारी 23 रामगढ़ विधानसभा क्षेत्र सह अनुमंडल पदाधिकारी, निवार्ची पदाधिकारी 22 बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र सह भूमि सुधार उप समाहर्ता, उप निर्वाचन पदाधिकारी, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी सहित अन्य उपस्थित थे।

स्मृति सभा का आयोजन, डॉ लियो ए सिंह को दी गई श्रद्धांजलि

रामगढ़ : मारवाड़ी धर्मशाला में दिवंगत डॉ लियो ए सिंह के लिए स्मृति सभा का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता बलराम सिंह ने की। मौके पर महेश मिश्र एवं जियाउल हक ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। डॉ. शारदा प्रसाद, डॉ. बीएन ओहदार, सुशील स्वतंत्र, आदित्य नारायण त्रिपाठी, कमल बगड़िया, सरोज सिंह, फैयाज अहमद, बासुदेव महतो आदि ने लियो सिंह के संबंध में अपने अपने विचार व्यक्त किया। सभी ने एक स्वर में कहा कि डॉ लियो सिंह एक विद्वान, बेहद सूझबूझ वाले और सबको साथ लेकर चलने वाले व्यक्ति थे। रामगढ़ के लिए उन्होंने समर्पित भाव से जो काम किया, विशेष रूप से धार्मिक सद्भाव को लेकर जो काम किया, वह अविस्मरणीय है। सभा के अंत में स्व. लियो सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित की गई

और दो मिनट का मौन रखकर उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गई। सभा का संचालन बसंत हेतमसरिया ने किया।

मौके पर संदीप बेरलिया, विकास बंसल, सतीश गुप्ता, शहजाद, पूनम, वर्षा, दीपक एवं सर्व धर्म समन्वय परिषद सहित अन्य कई संस्थाओं के लोग मौजूद थे।

इलाज के दौरान सीसीएलकर्मी का निधन अंतिम संस्कार में कई लोग हुए शामिल

रजरप्पा : रामगढ़ प्रखंड अंतर्गत कुंदरूकलां निवासी एवं गिद्दी-ए सीसीएल में कार्यरत मनोज कुमार महतो (47 वर्ष) का निधन मंगलवार को रांची के इरबा स्थित मेदांता अस्पताल में हो गया। वह किडनी एवं

फेफड़ा की बीमारी से ग्रसित थे और पिछले 10 दिनों से मेदांता अस्पताल में इलाज चल रहा था। जहां इलाज के दौरान उनका निधन हो गया। जिसके बाद पार्थिव शरीर को बुधवार को पैतृक गांव कुंदरूकलां लाया गया और दामोदर नदी के तट पर शमशान घाट पर अंतिम संस्कार किया गया। बड़े पुत्र 14 वर्षीय सुमित कुमार ने पिता को मुखाग्नि दी। वह अपने पीछे दो पुत्र सुमित एवं अमित, पत्नी सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन से पूरे गांव में मातम छा गया और परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया। अंतिम संस्कार में प्रमोद गुप्ता, छोटन ठाकुर, श्रवण सिंह, मनोज करमाली, अजीत सिंह, पिंकू सिंह, संजीत पटेल, पिंटू सिंह, कुस कुमार महतो, बिनोद मालाकार, सीताराम महतो, रामेश्वर महतो, कुलदीप गंझू, शंकर महली, टिंकू सिंह, सचिन कुमार, महेश मंडल, दिलीप महतो, हीरालाल महतो, अनुज महतो, तुलेश्वर महतो, नेवालाल महतो, सुंदर लाल महतो, प्रयाग महतो, महेंद्र महतो, कौलेश्वर महतो, रणधीर महतो, तुलसीदास महतो, निरंजन महतो (पत्रकार), शैलेंद्र महतो, बिमोद महतो, गौतम महतो, आर्यन पटेल सहित कई लोग शामिल थे।

मतदाता जागरूकता को लेकर आयोजित हुई निबंध प्रतियोगिता

रामगढ़ : विधानसभा चुनाव को लेकर रामगढ़ जिला प्रशासन ने अपनी तैयारी पूरी कर ली है। बुधवार से मतदाता जागरूकता अभियान ने भी जोर पकड़ लिया है। स्वीप के तहत बुधवार को कई स्थानों पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। डीसी चंदन कुमार ने मतदाता जागरूकता के उद्देश्य से स्वीप नोडल पदाधिकारी इंदु प्रभा खालखो को विभिन्न प्रतियोगिता एवं कार्यक्रमों आदि के माध्यम से मतदाताओ को जागरूक करने हेतु कई दिशा निर्देश दिए। इसी क्रम में जिले के विभिन्न विद्यालयों व महाविद्यालयों में मतदाता जागरूकता के उद्देश्य से निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। निबंध प्रतियोगिता के माध्यम से बच्चों ने 'मतदान क्यों हमारे लिए जरूरी है' इस विषय पर अपने विचार प्रकट किया। अपनी-अपनी लेखनी से मतदाताओ जागरूकता संदेश लिखा। प्रतियोगिता के दौरान शिक्षकों ने सभी बच्चों से आगामी विधानसभा निर्वाचन 2024 में 18 वर्ष या ऊपर के मतदाताओं को मतदान करने हेतु जागरूक करने का अपील किया।

क्षेत्र के मतदान बूथ केन्द्रों का मांडू बीडीओ ने किया औचक निरीक्षण

कुजू : आदर्श आचार संहिता लागू होते ही मांडू बीडीओ सह सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी रितिक कुमार ने मांडू विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत मांडू प्रखंड क्षेत्र के मतदान बूथ केंद्रों का औचक निरीक्षण किया। आगामी 20 नवंबर को होने वाले मतदान को सुचारू रूप से संपन्न कराने के लिए उन्होंने क्षेत्र के कुजू चौक स्थित आदर्श राजकीयकृत मध्य विद्यालय, पब्लिक हाई स्कूल कुजू, कुजू पश्चिमी एवं दक्षिणी पंचायत सचिवालय, मुरपा, कठरेहवा, चटनियांबस्ती स्थित नव प्राथमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी केंद्रों सहित दर्जनों मतदान बूथ केंद्रों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने केन्द्रों पर बुनियादी सुविधाए के बारे में सेक्टर मजिस्ट्रेट, विद्यालय प्रबंधन एवं पंचायत सचिव से जानकारी ली। जहां कई मतदान

बूथ केंद्रों में बिजली, पानी, शौचालय, रैंप में कमियां आदि पाई गई। जिस पर प्रबंधन एवं मजिस्ट्रेट को जल्द से जल्द सभी सुविधाएं बहाल करने का निर्देश दिया।

इस दौरान बीडीओ रितिक कुमार ने बताया कि आगामी 20 नवंबर को मांडू विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत मांडू प्रखंड में मतदान होना है। जिसको लेकर मतदान बूथ केंद्र का निरीक्षण किया जा रहा हैं। पहले दिन कोयलांचल कुजू क्षेत्र में 40 से अधिक बूथ केंद्रों का निरीक्षण किया गया। जिसमें मिले कमियों को जल्द से जल्द दुरुस्त करने का निर्देश दिया गया है। निरीक्षण के दौरान प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी अर्जुन महली, कुजू पश्चिमी पंचायत सेवक शशि किरण, कुजू दक्षिणी पंचायत सेवक सुनील यादव, बीएलओ सहित कई स्थानीय ग्रामीण मौजूद थे।

खूंटी में पेट्रोल पंपों पर चलाया मतदाता जागरुकता अभियान

खूंटी : विधानसभा चुनाव की घोषणा होते ही खूंटी जिले में राजनीतिक गतिविधि तेज हो गई है। जिला प्रशासन भी स्वीप कार्यक्रम के तहत प्रतिदिन विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से मतदाता जागरुकता कार्यक्रम चला रहा हैं। इसी कड़ी में बुधवार को जिले के कई पेट्रोल पंपों पर मतदाता जागरुकता कार्यक्रम चलाया गया।

इस दौरान पेट्रोल पंप पर आने वाले ग्राहकों और पंप पर कार्यरत कर्मियों को खूंटी और तोरपा विधानसभा क्षेत्र में 13 नवंबर को होने वाले मतदान के दिन अपने मताधिकार का प्रयोग अवश्य करने के लिए प्रेरित किया गया। मौके पर जागरूक मतदाता के रूप में पहचान पत्र दिखाने वाले ग्राहकों को पुरस्कृत भी किया गया। साथ ही सभी कर्मियों एवं ग्राहकों को मतदाता प्रतिज्ञा दिलाते हुए लोकतंत्र के इस महापर्व में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने को कहा गया।

मुखिया ने उपयुक्त को पत्र प्रेषित कर जल मीनारों की मरम्मती के लिए जियो टैग की मांग की

भुरकुंडा : बुधबाजार दोतल्ला पंचायत मुखिया सत्यवंती देवी ने रामगढ़ उपायुक्त को पत्र प्रेषित कर पंचायत के खराब पड़े जल मीनारों की मरम्मती के लिए जियो टैग की मांग की है। पत्र में कहा गया है कि ग्राम पंचायत बुधबाजार दोतल्ला के विभिन्न टोला-मुहल्ला में लगभग आठ जलमिनार खराब हो गए हैं। जिसके कारण पंचायत वासियों के समक्ष जल की समस्या उत्पन्न हो गई है। जल मिनारों की मरम्मती अति आवश्यक है, लेकिन ऊपर के अधिकारियों के आदेश के कारण मरम्मती हेतु जियो टैग बंद है। उन्होंने कहा कि पंचायत में जल जीवन मिशन का कार्य अधूरा होने के कारण हर-घर नल द्वारा जलापूर्ति अभी तक शुरू नहीं हो सकी है। पंचायत के अधिकांश टोलों-मुहल्लों में सीसीएल के माध्यम से जलापूर्ति की जा रही है। वहीं वर्तमान में लगभग तीन-चार माह से सीसीएल द्वारा जलापूर्ति नगण्य है। मुखिया सत्यवंती देवी ने उपयुक्त से आग्रह करते हुए पंचायत में बने सोलर आधारित जल मीनारों की मरम्मती हेतु जियो टैग करने का आदेश देने की बात कही है।

फरार है लव जिहाद का मास्टरमाइंड शरीफुल पुलिस पीट रही लकीर

रामगढ़ : शहर में लव जिहाद का मास्टरमाइंड शरीफुल अंसारी अभी भी पुलिस के गिरफ्त से फरार है। घटना के एक महीने के बाद भी पुलिस सिर्फ लकीर ही पीट रही है। उसने पहले तो एक युवती को शादी का झांसा दिया और 8 महीने तक उसका शारीरिक शोषण किया। जब मामला थाने तक पहुंचा, तो उसने माइक्रो फाइनेंस कंपनी के लाखों रुपए भी गटक लिए। दोनों मामलों में रामगढ़ थाना पुलिस को कुछ खास हाथ नहीं लगा है। रामगढ़ पुलिस एक महीने से सिर्फ सबूत को जुटा रही है। वह घटनास्थल का मुआयना कर रही है। लेकिन पुलिस की सारी गतिविधियों से दूर शातिर अपराधी शरीफुल मस्ती की जिंदगी जी रहा है। वह सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव है, लेकिन पुलिस अभी तक उसे ट्रेस नहीं कर पा रही है।

शहर में कई स्थानों पर था उसका ठिकाना

रामगढ़ शहर में किसान नगर और कॉलेज गेट के पास शरीफुल अंसारी ने अपना ठिकाना बना रखा था। उसने अलग-अलग समय में उन दोनों स्थानों पर किराए पर रूम लिया था। जहां वह भोली भाली लड़कियों को बहला फुसला कर उसका शारीरिक शोषण करता था। पिछले 24 घंटे में पुलिस ने उसके कई ठिकानों का जायजा लिया है। जिस स्थान पर वह लड़की का शारीरिक शोषण करता था वहां के आसपास के लोगों से पूछताछ की है। लोगों ने पुलिस को यह बताया कि शरीफुल अपने साथ लड़कियों को रखता था। एक लड़की तो काफी लंबे वक्त तक उसके साथ रही थी। जानकारी के अनुसार शरीफुल के खिलाफ रामगढ़ थाना में मामला दर्ज करने वाली युवती को धमकियां मिल रही है।

शरीफुल ने यहां तक कहा है कि पुलिस उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकती। वह पुलिस की पहुंच से काफी दूर है।

मूल रूप से गढ़वा का रहने वाला है शरीफुल अंसारी

शरीफुल अंसारी मूल रूप से गढ़वा जिले की बिशनपुरा अंतर्गत पिपहारी कला का रहने वाला है। उसके पिता रकीम अंसारी अपने परिवार के साथ वही रहते हैं। शरीफुल रामगढ़ में भारत फाइनेंस इंक्लूजन लिमिटेड माइक्रोफाइनेंस कंपनी में काम करता था। वह लोन दिलाने के नाम पर लोगों को अपने जाल में फंसाता था और फिर उसका शारीरिक शोषण करता था।

जुटाई जा रही हैं सबूत : राजेश मुंडा

इस पूरे मामले में अनुसंधानकर्ता राजेश कुमार मुंडा ने बताया कि वे शरीफुल अंसारी के खिलाफ सबूत जुटाए जा रहे हैं। उसके खिलाफ छापेमारी चल रही है। शिकायतकर्ता के द्वारा जो बातें बताई गई हैं वह हकीकत है। लेकिन हकीकत यह है भी है कि शरीफुल पुलिस को लगातार मात दे रहा है। वह इतनी बड़ी घटना को अंजाम देकर अभी भी पुलिस से काफी दूर है। शरीफुल के खिलाफ उसकी कंपनी के अधिकारियों ने भी 1 लाख रुपये से अधिक के गबन का आरोप लगाया है। हालांकि इस मामले में अभी तक प्राथमिकी दर्ज नहीं हो पाई है।

ईसीआरकेयू सदा हर सुख दुःख में तत्पर रहता है: मो ज्याऊद्दीन

बरकाकाना : ईसीआरकेयू ने रेलकर्मियों से मंगलवार को ईसीआरकेयू के अपर महामंत्री मो ज्याऊद्दीन व एआईआरएफ के जोनल सेक्रेटरी ओ पी शर्मा द्वारा टीसीआई कार्यालय पहुंचने पर सीटीसीआई अभय प्रकाश ने बुके और शॉल प्रदान कर स्वागत किया। मौके पर उपस्थित सिगनल व टेलकम विभाग के कई रेलकर्मी उपस्थित रहे। इस मौके पर उपस्थित रेलकर्मियों से औपचारिक संबोधन के दौरान ईसीआरकेयू के अपर महामंत्री मो ज्याऊद्दीन ने कहा कि ईसीआरकेयू के पदाधिकारी रेलकर्मियों के हर सुख दुःख में साथ देने के लिए हर समय तत्पर रहते हैं। उन्होंने कहा कि रेलकर्मियों के आकस्मिक और गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए रांची स्थित कई बेहतर अस्पतालों के साथ रेल प्रशासन को अनुबंध करने के सहमत किया है जिसके कारण आज रेलकर्मियों को कैशलेस और उत्कृष्ट इलाज की सुविधा मिल रही है । उन्होंने कहा

कि एक जनवरी 2004 के बाद बहाल हुए कर्मचारियों के लिए गारंटीड पेंशन की मांग के तहत फिलहाल यूपीएस हासिल किया गया है जिसमें सेवानिवृत्ति पर पेंशन के रूप में एक अच्छी राशि का मिलना सुनिश्चित किया गया है। संपूर्ण ओपीएस को भी आगे भविष्य में हम अपने एकजुट आंदोलन से हासिल करगे। मौके पर उपस्थित एआईआरएफ के जोनल सेक्रेटरी ओ पी शर्मा ने उपस्थित रेलकर्मियों को संबोधित करते हुए कहा कि फेडरेशन और ईसीआरकेयू ने जोखिम कार्य करने वाले सभी रेलकर्मियों को रिस्क एलाउंस देने की मांग रखी है। रेलवे बोर्ड ने इसके लिए एक कमिटी का गठन किया है जिसके समक्ष फेडरेशन ने कई विभिन्न विभागों के रेलकर्मियों के कार्य प्रकृति के आधार पर रिस्क एलाउंस स्वीकृत करने की मांग रखी है। जल्द ही इस कमिटी के रिपोर्ट रेल मंत्रालय को प्रस्तुत किया जाना है। इस अवसर पर शाखा सचिव महेन्द्र प्रसाद महतो, वरीय सदस्य सरयू प्रसाद ,बिनोद बेदिया, चंदन कुमार, राहुल, बुटुक, गौतम, पबुत्तर, मंजु देवी, आशा देवी,सुमित्रा देवी, रवींद्र प्रसाद, कपिल कुमार, एच यू जोजो, डी के नायक, प्रदीप आनंद मांझी, संतोष, एम तिर्की, एस पी सिंह, आजाद, अमोल कुमार सहित कई रेलकर्मी ने अपना समर्थन देने के लिए प्रतिबद्धता जताई।

श्री अग्रसेन स्कूल में मना विश्व खाद्य दिवस, अन्न की बबार्दी रोकने का लिया गया संकल्प

भुरकुंडा : पटेलनगर स्थित श्री अग्रसेन स्कूल में बुधवार को विश्व खाद्य दिवस मनाया गया। इस अवसर पर भाषण, शपथ ग्रहण कार्यक्रम, वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। शिक्षकों ने बच्चों को खाद्यान का महत्व समझाते हुए इसकी बबार्दी को रोकने के लिए स्वयं जागरूक रहने और परिवार के लोगों को भी जागरूक करने की बात कही। कार्यक्रम में शिक्षकों व विद्यार्थियों ने अन्न बर्बाद न करने का सामुहिक संकल्प लिया। 'उतना ही लो थाली में, व्यर्थ न जाए नाली में' के नारे लगाए गए। भाषण एवं वाद-विवाद में विद्यार्थियों ने इस गंभीर मुद्दे पर अपनी बात रखी। मौके पर प्राचार्य विवेक प्रधान ने कहा कि भारतीय संस्कृति में अन्न को देवता माना जाता है और उसकी पूजा की जाती है। हमारे यहां खाने को बर्बाद करना पाप माना जाता है। इसके बाद भी लोग अन्न को बर्बाद करते हैं। लाखों लोगों को भूखा सोना पड़ता है। शादी-विवाह आदि उत्सवों पर जुटने वाली भीड़ भी खाना बर्बाद करती है। ऐसी बुरी आदतें हमारे जीवन का हिस्सा बन गई है। खाने की बबार्दी को रोकना हम सबकी नैतिक जिम्मेवारी है।

प्राथमिक विद्यालय खेड़ोबार में मेगा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया

रांची एक्सप्रेस संवाददाता जयनगर प्रखंड अंतर्गत दामोदर घाटी नगर निगम के कोडरमा ताप विद्युत केंद्र के द्वारा मेगा स्वास्थ्य शिविर स्वास्थ्य संबंधी एवं सामान्य स्वास्थ्य शिविर का आयोजन प्राथमिक विद्यालय खेडोबार की प्रांगण में आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन निदेशक तरुण कुमार दिलीप कुमार सिंह परवीन चंद डीजीएम सीएस आर विनोद राय डी जीएम अमन ज्योति एस आर जयंत विश्वास के द्वारा उद्घाटन किया गया। इस कार्यक्रम में ग्रामीण को छाता दिया गया। विद्यालय में प्रधानाध्यापक की उपस्थिति में विद्यालय के लिए पंखा, दरी, एवं छाता दिया गया। इस कार्यक्रम में डॉ विकास कुमार एवं डॉ रवि कुमार के द्वारा स्वास्थ्य संबंधी लोगों को जानकारी दी गई। उपस्थित ग्रामीणों को मुफ्त इलाज लगभग 275 लोगों को किया गया। लोगों से स्वस्थ रहने के लिए बहुत सारी जानकारी दी गई। बदलते मौसम को देखते हुए पानी उबालकर पीना, ताजा भोजन करना, साफ सुथरे कपड़े को पहनना, मसालेदार भोजन नहीं करना, बाहर की छानी हुई तली हुई सामान का उपयोग नहीं करना। बाहर से आने के बाद भोजन करने से पहले हाथों को साबुन से धोकर भोजन करना। इन सारी बातों से आप नित्य प्रतिदिन करते हैं तो आप स्वस्थ रहेंगे।

विधानसभा आजाद समाज प्रभारी उमेश यादव ने क्षेत्र भ्रमण कर लोगों से की मुलाकात

रांची एक्सप्रेस संवाददाता जयनगर बरकट्ठा विधानसभा क्षेत्र में आगामी विधानसभा चुनाव के देखते हुए आजाद समाज पार्टी के विधानसभा प्रभारी एवं भावी विधायक प्रत्याशी उमेश यादव ने जयनगर प्रखंड के विभिन्न गांव में बरकट्ठा एवं चलकुशा प्रखंड के विभिन्न गांवों में जनसंपर्क किए । मौके पर बासुदेव बौध, अरुण यादव, राजेश रजक, बैजनाथ दास,शक्ति पासवान, शिवकुमार यादव, बैजनाथ यादव , प्रमोद दास, अजहर अंसारी, अमानत खान, रंजीत यादव, उपेंद्र यादव, सुजीत दास, अर्जुन दास, कृष्णा यादव, मुकेश कुमार , राजेश यादव , अशोक दास, सुदामा दास, विजय पासवान, आदि दर्जनों लोग के साथ में जनसंपर्क किए ।

युवक ने फांसी लगाकर किया आत्महत्या, सुसाइड नोट में लिखा चिकित्सक द्वारा किए गए एफआईआर से आहत होकर मौत को लगाया गले

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

सतगावां थाना क्षेत्र के शिवपुर ग्राम निवासी सुमंत कुमार सिंह उम्र 28 वर्ष पिता अजय सिंह का शरीर बंद कमरे में पंखे से लटका पाया गया। बताया जाता है की युवक रात को साढ़े नौ बजे के करीब घर पर आया जिसके बाद अपने कमरे में गया और जब उसकी मां के द्वारा खाना खाने के बुलाया गया तो नही आया। वहीं कुछ समय उपरांत जब परिवार के लोग बुलाने गए तो दरवाजा अंदर से बंद मिला जिसके बाद दरवाजे को धक्का भी दिया गया बाबजूद दरवाजा नही खुला जिसके बाद परिवार वाले दरवाजा खोलने का बहुत प्रयास किये लेकिन नही खुला तो वही आसपास के लोग को बुलाया गया दरवाजा तोड़ने पर देखा गया की युवक पंखे से लटका है ।आनन फानन में परिवार और आसपास के

लोग सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सतगावां ले गया जहां से तुरंत एंबुलेंस से सदर अस्पताल कोडरमा भेज दी गई जहां मौत की पुष्टि के बाद बुधवार को पोस्टमार्टम के बाद शिवपुर ग्राम के संकरी नदी स्थित मुक्तिधाम में संस्कार किया गया। वहीं कोडरमा में युवक के पास से ही एक लेटर प्राप्त हुआ जिसमे लिखा है की सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सतगावां के चिकित्सक सत्यनारायण भकत और प्रियांशु वर्णवाल के द्वारा मानसिक पड़ताड़ना से आहत होकर मैं आत्म हत्या कर रहा हूं। सुसाइड नोट की जांच बाकी है। सूचना के अनुसार कुछ दिन पहले युवक सुमंत कुमार सिंह की तबियत खराब हुई थी जो अपना ईलाज हेतु हॉस्पिटल गया जहां दोनो चिकित्सक और युवक की बीच बहस हुई जिसके बाद सतगावां थाना में चिकित्सक के द्वारा आवेदन दिया गया और बताया जाता है की तभी से मृतक मानसिक रूप से आहत था। मृतक सुमंत चार भाई बहनों में सबसे छोटा था।एक भाई और दो बहनों को शादी हो चुकी है जबकि सुमंत सिंह की शादी दिसंबर माह में ही होने वाली थी।मृतक की मां पड़ोसी राज्य बिहार में सरकारी विद्यालय की शिक्षिका है जबकि इनके पिता आर्मी से सेवानिवृति के बाद भारतीय जीवन बीमा में कार्यरत थे ।घटना के बाद परिवार वालों रोना थम नही रहा वहीं इस घटना के बाद पूरा गांव और प्रखंड वासी स्तब्ध हैं पूरे गांव में सुनने के बाद जैसे चारो तरफ मातम ही मातम है वहीं प्रखंड के लोगो को भी जानकारी मिलने के बाद तांता लगा हुआ है।शोक व्यक्त करने वालो में बजरंग दल के अध्यक्ष बंटी यादव, मरचोई मुखिया उत्तम सिंह,पूर्व मुखिया धीरज सिंह, तारणी सिंह,सुरेंद्र सिंह,विमल सिंह,चुन्नू सिंह,राहुल सिंह,पंकज सिंह,नीतीश कुमार,राजेश रंजन,प्रणव मुरारी,रंजन सिंह,दीपेश अग्रवाल,रंजन सिंह,पंकज गुप्ता,शशि सिंह,अभय कुमार,मुकेश सिंह,अरविंद सिंह,प्रवीण सिंह,रोहित दुबे,विनय वैध,कन्हैया कुमार,प्रवीण कुमार,धर्मेंद्र कुमार आदि थे।

आचार संहिता लागू होने के बाद हुआ ठेका आवंटन, सईद नसीम ने की ठोस करवाई की मांग

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

झुमरी तिलैया कांग्रेस नेता सईद नसीम ने मुख्य निर्वाचन आयुक्त को उपायुक्त कोडरमा के माध्यम पत्र लिख झुमरी तिलैया नगरपरिषद में आचार आदर्श संहिता लागू होने के बाद हुआ ठेका आवंटन को गलत व लाभ पंहुचने के उद्देश्य से किये जाने पर उचित करवाई की मांग करते हुवे पत्र में कहा है कि नगर परिषद झुमरी तिलैया में गड़बड़ी की नित्य मामले सामने आ रहें है। अभियंताओं के करतुतों के कारण नगर परिषद इन दिनों लगातार चर्चा में है। समाचार पत्रों के माध्यम से पता चला है शहर में व्याप्त गंदगी के कारण डेंगू का प्रकोप बढ़ने तथा अन्य शिकायतों के कारण आपके द्वारा स्पष्टीकरण भी मांगा गया है। इधर, मंगलवार को समय 3.30 में आदर्श आचार संहिता लागू होने के उपरांत 5 .23 मिनट में नगर परिषद झुमरी तिलैया द्वारा ठेका आवंटन किया जाना आदर्श आचार संहिता का उलंघन है। पूर्व से ही मनचाही कमीशन नही मिलने के कारण नगर परिषद द्वारा वार्ड संख्या एक में एक ठेका का आवंटन महिनों तक लटकाये रखा गया और इधर मंगलवार को आदर्श आचार संहिता की घोषणा की संभावना बनी तो टेंडर दिन में खोला गया। नियम के तहत डबल बीड के टेंडर में टेक्नीकल एवं फायनेंसियल एक ही दिन नहीं खोला जाना है। लेकिन नगर परिषद के अभियंताओं ने चुनाव की घोषणा के बाद करीब 5 से साढ़े पांच बजे के बीच टेंडर खोल कर फाइनल किया है। इसके अभियंता दीपक साव 5 वर्षों से नगरपरिषद में जमे है। लंबे समय से इनका एक जगह जमे रहना निर्वाचन आयोग के आदेश को खुल्लमखुल्ला धज्जियां उड़ाने के समान है पूर्व के बीते चुनाव में भी इनका आचरण नियम विरुद्ध लाभ पंहुचाने का रहा था इनके द्वारा टेंडर अपने चहेतों को देने लाभ पंहुचाने के आरोप आये दिन लगते रहते है। सईद नसीम ने पत्र में मांग किया है गंभीर मामले की गहनता से जांच कर दोषी अधिकारियों व अभियंताओं के विरूद्ध उचित कार्रवाई की जाय।

अचेत अवस्था में पाई गई नाबालिक लड़की के मामले में डालसा ने लिया संज्ञान

हर प्रकार की सहायता पहुंचाने का दिया निर्देश

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

कोडरमा– सीडब्ल्यूसी कोडरमा को तिलैया थाना क्षेत्र अंतर्गत शिवम हॉस्पिटल के निकट अचेत अवस्था में लगभग 13- 14 वर्ष की नाबालिक लड़की के मिलने के मामले में डालसा ने लिया संज्ञान। उपरोक्त मामले में जिला विधिक सेवा प्राधिकार कोडरमा के अध्यक्ष सह प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश बालकृष्णन तिवारी के मार्गदर्शन में जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव गौतम कुमार ने बाल कल्याण समिति कोडरमा के अध्यक्ष रिंकी कुमारी, शैलेश कुमार एवं जिला बाल संरक्षण पदाधिकारी कोडरमा से पूरे मामले की जानकारी ली और आवश्यक दिशा निर्देश दिया। साथ ही गौतम कुमार ने डालसा हजारीबाग से तत्काल बात कर लड़की को अस्पताल जाकर देखभाल करने एवं हर संभव सहयोग करने को कहा। साथ ही सीडब्ल्यूसी एवं डीसीपीओ को उसके परिजनों का पता लगाने का भी निर्देश दिया। बताते चले की सीडब्ल्यूसी कोडरमा को सूचना मिली थी कि शिवम हॉस्पिटल के निकट एक नाबालिक लड़की अचेत अवस्था में पड़ी हुई है। सूचना मिलने के साथ ही सीडब्ल्यूसी कोडरमा ने संज्ञान लेते हुए तत्काल चाइल्डलाइन और डीसीपीओ को सूचना देते हुए, उक्त बच्ची का रेस्कयू कराया साथ ही सीडब्ल्यूसी के देख रेख में उक्त नाबालिक लड़की का सदर अस्पताल कोडरमा में इलाज कराया गया। उसके बाद उसे बेहतर इलाज के लिए हजारीबाग मेडिकल कॉलेज अस्पताल भेज दिया गया। जहां नाबालिक लड़की की चेतना वापस आ गई है। लेकिन वह अभी कुछ भी बताने में असमर्थ है। मिली जानकारी के अनुसार उक्त नाबालिक लड़की मानसिक रूप से पूरी तरह स्वस्थ प्रतीत नहीं हो रही है। वही डालसा सेक्रेटरी गौतम कुमार ने लगभग 2 वर्ष की अज्ञात बच्ची के मामले में भी जानकारी ली और आवश्यक दिशा निर्देश दिया। ज्ञात हो की आरपीएफ कोडरमा को स्टेशन के निकट ओवरब्रिज के नीचे से रोती हुई एक अज्ञात बच्ची मिली थी। जिसे सीडब्ल्यूसी कोडरमा ने स्वास्थ्य जांच के उपरांत , बच्ची की बेहतर रखरखाव एवं देखभाल के लिए विशिष्ट दत्तक ग्रहण संस्थान हजारीबाग भेजा दिया।

सेविका सहायिकाओं की हड़ताल स्थगित, आंगनबाड़ी केंद्र खुला

नई सरकार गठन के बाद फिर से आंदोलन होगा शुरू : संजय पासवान

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

झुमरी तिलैया - झारखंड विधानसभा चुनाव की घोषणा होने और आदर्श आचार संहिता लागू होने के बाद आठ सूत्री मांगों को लेकर सेविका सहायिकाओं का 5 अक्टूबर से जारी अनिश्चितकालीन हड़ताल को स्थगित कर दिया गया है। बुधवार से आंगनबाड़ी केन्द्रों में रौनक लौटी और सेविका सहायिकाओं ने केंद्र में अपना योगदान दिया। आंदोलन की समीक्षा के लिए झारखंड राज्य आंगनबाड़ी सेविका सहायिका यूनियन (सीटू) की बैठक कविता यादव की अध्यक्षता में बुधवार को चिल्ड्रेन पार्क में हुई। बैठक को संबोधित करते हुए सीटू के राज्य सचिव संजय पासवान ने कहा कि हर आंदोलन से कुछ न कुछ

हासिल होता है। इस हड़ताल से हर साल सेविका सहायिका का मानदेय बढ़ने की प्रक्रिया में देरी होने से जो नुकसान हो रहा था। उसमें संशोधन कर संकल्प जारी हो गया है और अब सेविका को 1000 की बढ़ोतरी के साथ 10500 रूपये और सहायिका को 500 की बढ़ोतरी के साथ 5250 रूपये मिलेंगे। साथ ही अनुकंपा का अब बिना ग्रामसभा के परिवार के सदस्य सीधी नियुक्ति का प्रावधान किया गया है।हमारी प्रमुख मांगों सुप्रीम कोर्ट के आदेशानुसार ग्रेच्युटी देने, रिटायर्मेंट के बाद सेविका को 10 लाख एवं सहायिका को 5 लाख एकमुश्त राशि देने, वेतन का 50 प्रतिशत पेंशन देने और मार्केट रेट पर पोषाहार राशि देने आदि पर कोई विचार नहीं किया गया यह दुर्भाग्यपूर्ण है। विधानसभा चुनाव संपन्न होने और नई सरकार के गठन के बाद पूरे झारखंड में इन मांगों को लेकर आंदोलन फिर से जोरदार तरीके से शुरू किया जाएगा। प्रदेश अध्यक्ष मीरा देवी ने कहा कि अभी हमारा हड़ताल समाप्त हुआ है, लेकिन सेविका सहायिका का हौसला बुलंद है। बैठक में जिला सचिव वर्षा रानी, संतोषी कुमारी, उर्मिला देवी, सुनीता सिहं, उषा, संजू, मीना एक्का, संध्या वर्णवाल, कांति, पुनम, रानी, संध्या कुमारी, गायत्री, रामदुलारी, शीला, सरवरी खातुन, सकीना, मीना सहित दर्जनों सेविका सहायिका मौजूद थी।

वन आश्रयणी प्रक्षेत्र कार्यालय से मात्र 2 कि.मी. के अंदर डुमरियाटांड़ एवं फुलवरिया जंगल में वन कि कटाई कर अवैध महुआ शराब कि भट्टी संचालित

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

कोडरमा। वन आश्रयणी प्रक्षेत्र अंतर्गत डुमरियाटांड़ एवं फुलवरिया जंगल में वन कि कटाई कर अवैध महुआ शराब कि भट्टी संचालित किया जा रहा है। यहां से अवैध महुआ शराब बनाकर कोडरमा के आप पास के क्षेत्रों व बिहार सप्लाई लिया जाता है। जहां वन आश्रयणी प्रक्षेत्र में एक पत्ता भी नहीं तोड़ सकते है लेकिन शराब माफियाओं के द्वारा अवैध रूप से हरे-भरे पेड़ो कि कटाई कर एवं वन आश्रयणी प्रक्षेत्र के घने जंगलो में ही अवैध महुआ शराब कि भट्टी संचालित किया जा रहा है। कोडरमा थाना कि पुलिस कई बार कार्यवाई कर प्राथमिकी भी दर्ज की है, लेकिन वन आश्रयणी प्रक्षेत्र पदाधिकारी कोडरमा के द्वारा किसी प्रकार कि कोई कार्यवाई नहीं किया जाता है। जबकि महुआ शराब के सरगना के इशारे पर वन कर्मियों कि मिली-भगत से वन आश्रयणी प्रक्षेत्र के रास्ते ही ग्राम झरकी बिशुनपुर (पंचायत जरगा कोडरमा) होते हुए हरदिया (रजौली-नवादा, बिहार) व ध्वाजाधरी एवं बोनाकाली के रास्ते विभिन्न स्थानों तक अवैध महुआ शराब कि खेप को पहुँचाया जाता है। ऐसा नहीं है कि वन

विभाग को इस बात की जानकारी नहीं है, पर वन विभाग के कर्मचारी भट्ठी वालों से मंथली लेकर भट्टी संचालन करने दे रहे हैं। वरना वन आश्रयणी प्रक्षेत्र कार्यालय के महज 1 से 2 किलोमीटर के अंदर भट्टी संचालित है, वन विभाग की टीम भी देखकर अनदेखा करते आ रहे हैं । तभी तो ऑफिस के बगल में शराब भट्टी संचालित हो रही है।

भाजपा को कब मिलेगा नया अध्यक्ष, जेपी नड्डा के बाद कौन संभालेगा कमान

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी में नए अध्यक्ष के चुनाव की प्रक्रिया शुरू होने वाली है। खबर है कि पार्टी ने संसदीय बोर्ड के सदस्य के लक्ष्मण को राष्ट्रीय चुनाव अधिकारी नियुक्त किया। फिलहाल, भाजपा की कमान राज्यसभा सांसद जगत प्रकाश नड्डा हैं। खास बात है कि आम सहमति से चुने जाने वाले भाजपा अध्यक्ष का कार्यकाल 3 साल का होता है। नड्डा ने पद जून 2019 में संभाला था।

एबीपी लाइव की रिपोर्ट में भाजपा के सूत्रों के हवाले से बताया गया है कि प्रदेश अध्यक्षों के चुनाव की प्रक्रिया 1 दिसंबर से शुरू हो जाएगी। कमेटी राज्य स्तर से चुनावों का आगाज करेगी। इस दौरान मंडल, जिला और फिर प्रदेश अध्यक्ष चुने जाएंगे। जिला अध्यक्ष और प्रदेश समिति के चुनावों के बाद प्रदेश अध्यक्ष और राष्ट्रीय समिति के सदस्य चुने जाएंगे। प्रदेश समिति के सदस्य प्रदेश अध्यक्ष चुनेंगे। वहीं, राष्ट्रीय समिति के सदस्य राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव करेंगी। भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव अरुण सिंह की ओर से जारी एक विज्ञप्ति में बताया गया है कि राज्यसभा सदस्य नरेश बंसल, लोकसभा सदस्य संबित पात्रा और पार्टी की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रेखा वर्मा संगठन चुनावों के लिए राष्ट्रीय सह-प्रभारी होंगे। सिंह ने कहा कि भाजपा अध्यक्ष जे पी नड्डा ने संगठन चुनावों के संचालन के लिए इन नियुक्तियों को हरी झंडी दी है और ये तत्काल प्रभाव से लागू होंगी। लक्ष्मण उत्तर प्रदेश से पार्टी के राज्यसभा सदस्य और पार्टी के ओबीसी मोर्चा के अध्यक्ष हैं। भाजपा में इन दिनों सदस्यता अभियान चल रहा है और इसके पूरा होने के बाद नए अध्यक्ष के चुनाव की प्रक्रिया शुरु होगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2 सितंबर को सदस्यता अभियान की शुरुआत की थी। चुनाव प्रक्रिया दिसंबर या अगले साल की शुरुआत में शुरू हो सकती है। जून 2019 में नड्डा को भाजपा का कार्यकारी अध्यक्ष और जनवरी 2020 में पूर्णकालिक अध्यक्ष बनाया गया था। इस साल फरवरी में उनका कार्यकाल जून 2024 तक बढ़ाया गया था। तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने के बाद नड्डा को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने मंत्रिमंडल में शामिल किया था

जिला निर्वाचन पदाधिकारी मेघा भारद्वाज की अध्यक्षता में स्टैंडिंग कमेटी की बैठक संपन्न

आदर्श आचार संहिता का अक्षरशः अनुपालन करें: जिला निर्वाचन पदाधिकारी

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

कोडरमा भारत निर्वाचन आयोग द्वारा झारखंड विधानसभा आम चुनाव-2024 की घोषणा के पश्चात 19 कोडरमा विधानसभा क्षेत्र में लागू आदर्श आचार संहिता का अनुपालन सुनिश्चित करने को लेकर समाहरणालय स्थित सभागार में जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त मेघा भारद्वाज की अध्यक्षता में स्टैंडिंग कमेटी की बैठक संपन्न हुआ। बैठक में जिला निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा उपस्थित कमिटी सदस्य एवं राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को आदर्श आचार संहिता लागू होने के उपरांत भारत निर्वाचन आयोग द्वारा आदर्श आचार संहिता का अनुपालन हेतु राजनीतिक दलों के लिए जारी मार्गदर्शन अंतर्गत क्या करें और क्या ना करें को विस्तार पूर्वक साझा किया गया। इस दौरान राजनीतिक दल के प्रतिनिधियों को किसी भी आयोजन हेतु ऑनलाइन अनुमति प्राप्त करने के लिए निर्मित सुविधा पोर्टल/एप के बारे में भी बिंदुवार कार्यप्रणाली से अवगत कराया गया। बैठक में बताया गया कि जिले में आदर्श आचार संहिता लागू होने के उपरांत 72 घंटे के अंदर निजी संपत्ति पर

राजनीतिक दलों द्वारा लगाए गए पार्टी झंडा, फ्लैक्स, बैनर, होडिंग, दीवार लेखन आदि को अपने स्तर से हटाने की नियमानुसार कार्रवाई सुनिश्चित किया जाना है। बैठक में बताया गया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निर्दिष्ट नियम के आलोक में गृह स्वामी द्वारा अनुमति प्राप्त स्थान पर ही पार्टी या व्यक्ति के द्वारा पार्टी झंडा, बैनर आदि रखा जा सकता है. उम्मीदवार की नाम वापसी की तिथि के बाद पार्टी कार्यकर्ता और समर्थक के आवास पर झंडा विहित रीति का अनुशरण करते हुए लगाया जा सकता है तथा झंडा लगाने में होने वाले व्यय को उम्मीदवार के चुनाव व्यय खाते में शामिल किया जाएगा। बैठक में बताया गया कि निर्वाचन आयोग के प्रावधान अनुसार पार्टी कार्यकर्ता/समर्थक के आवास पर किसी पार्टी या उम्मीदवार के केवल तीन झंडे ही इस्तेमाल किए जाने चाहिए, बिना अनुमति के कोई भी वाहन पर झंडा नहीं लगाएंगे. झंडा लगाने के लिए सक्षम प्राधिकार से अनुमति लेना आवश्यक है। इसके साथ ही बैठक में सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को झारखंड विधानसभा आम निर्वाचन, 2024 के निमित्त लागू आदर्श आचार संहिता की जानकारी दी गयी और आदर्श आचार संहिता के अनुपालन संबंधी निर्देश दिए गए। आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन किये जाने व इसके अंतर्गत की जाने कार्रवाई के बारे बताया गया। जिला में प्रत्याशियों के नामांकन, नामांकन की स्क्रूटनी, नाम वापसी, मतदान की तिथि व मतगणना की तिथि से अवगत कराया गया।

राजनीतिक दलों को प्रचार सामग्री का एमसीएमसी कमिटी से प्रमाण लेना अनिवार्य-जिला निर्वाचन पदाधिकारी

मौके पर निर्देशित किया गया है कि किसी भी राजनीतिक दल या प्रत्याशी की ओर से भड़काऊ, गुमराह करने वाला अथवा नफरत फैलाने वाले विज्ञापनों को कतई जारी नहीं किया जाएगा। जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि प्रिंट/इलेकट्रॉनिक मीडिया, पम्पलेट, बैनर, पोस्टर, लिफलेट व अन्य प्रकाशित कराए जाने वाले सामग्री/विज्ञापन को मीडिया सर्टिफिकेशन एंड मानीटरिंग कमेटी (एमसीएमसी) से प्रमाणित कराकर अनुमति प्राप्त करनी होगी। विज्ञापन पब्लिकेशन के 48 घंटे पहले संबंधित प्रत्याशी या दल को एमसीएमसी कमेटी के समक्ष प्रकाशित कराए जाने वाले विज्ञापन की सामग्री के साथ आवेदन प्रस्तुत करना होगा। उन्होंने मीडिया से अपील की है कि किसी भी राजनीतिक दल या प्रत्याशी के पक्ष या विपक्ष में पेड न्यूज प्रकाशित न करें अन्यथा संबंधित न्यूज को पेड मानते हुए संबंधित समाचार पत्र की डीएवीपी दर के अनुसार उसे उम्मीदवार के खाते में जोड़ा जाएगा तथा आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन में कार्यवाही भी की जा सकती है। उन्होंने सभी से सहयोग की अपील की है। बैठक में मुख्य रूप से पुलिस अधीक्षक अनुदीप सिंह, अनुमंडल पदाधिकारी रिया सिंह, उप निर्वाचन पदाधिकारी प्रिंस गोडविन कुजूर, डीएसपी मुख्यालय, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी समेत कमिटी सदस्य एवं राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

बीएसएनएल : कहीं भीतरघात का शिकार तो नहीं?

निर्मल रानी

यदि बी एस एन एल में ही सर्वोच्च पदों पर बैठे अधिकारियों की साजिश के चलते और उनकी उद्योगपतियों व कॉर्पोरेट घरानों से मिली भगत के परिणाम स्वरूप इस पीएसयू की इतनी दयनीय हालत हो रही है तो ऐसे 'विभीषणों ' का भी बेनकाब होना बेहद जरूरी है। न केवल सरकार बल्कि स्वयं बीएसएनएल कर्मियों को भी इस बात पर नजर रखनी होगी कि भारत सरकार का यह लोकप्रिय केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम बी एस एन एल किन कारणों से अपने उपभोक्ताओं को समुचित सेवायें नहीं दे पा रहा है? बी एस एन एल, कहीं भीतरघात का शिकार तो नहीं?

भारत संचार निगम लिमिटेड (बीएसएनएल) भारत सरकार के केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम (पीएसयू) का एक प्रमुख एवं लोकप्रिय उपक्रम है। बीएसएनएल का स्वामित्व दूरसंचार विभाग के पास है और दूरसंचार विभाग संचार मंत्रालय का एक हिस्सा है। भारत सरकार ही बीएसएनएल की 100% शेयर पूंजी का मालिक भी है। इस समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मंत्रिमंडल में संचार मंत्रालय का कामकाज अश्विनी वैष्णव देख रहे हैं जोकि भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री हैं। हालाँकि भारतीय संचार क्षेत्र में रिलायंस जियो, भारती एयरटेल तथा वोडाफोन आइडिया जैसे और भी कई छोटी व क्षेत्रीय निजी कम्पनीज सक्रिय हैं परन्तु इन सबसे प्रतिस्पर्धा होने के बावजूद आज भी बीएसएनएल को देश में सबसे अधिक उपभोक्ता रखने का गौरव हासिल है।

आंकड़ों के मुताबिक जुलाई 2024 तक बीएसएनएल के पास देश में लगभग 88.512 मिलियन मोबाइल फोन के ग्राहक थे। इसका मुख्य कारण यह भी था कि देश की प्रमुख टेलीकॉम कंपनियों ने जून 24 में ही अपने अपने मोबाइल टैरिफ बढ़ा दिये थे। इनमें रिलायंस जियो ने जहां 27 जून को अपने टैरिफ में 12 से 27 प्रतिशत की बढ़ोतरी की थी वहीं भारती एयरटेल ने 8 जून को अपना टैरिफ 11 से 21 प्रतिशत तक बढ़ा दिया था। इसी तरह वोडाफोन आइडिया ने भी 29 जून, 24 को अपना टैरिफ 10 से 24 प्रतिशत तक बढ़ा दिया। इसी बढ़ोतरी के फौरन बाद ही बीएसएनएल में 2.93 मिलियन ग्राहकों की वृद्धि हुई। जबकि निजी दूरसंचार कंपनियों को अपने करोड़ों ग्राहकों से हाथ धोना पड़ा। उस समय बीएसएनएल ने पहली बार ग्राहकों की इतनी वृद्धि दर्ज की थी। जून- जुलाई 24 में बीएसएनएल ने लगभग 2.9 मिलियन उपयोगकर्ता अपने साथ जोड़े।

बीएसएनएल को ऐसा ही एक अवसर उस समय भी हाथ लगा था जबकि 2020-2021 में हुये किसान आंदोलन के समय पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ सहित पूरे देश के किसानों द्वारा 2020 में भारतीय संसद द्वारा पारित तीन कृषि अधिनियमों के विरुद्ध आंदोलन चलाया जा रहा था। उस समय किसान, अंबानी-अडानी द्वारा संचालित उद्यमों व उपक्रमों का भी विरोध कर रहे थे। किसानों का कहना था कि मोदी सरकार अंबानी-अडानी जैसे निजी उद्योगपतियों को फायदा पहुँचाने के लिये ही तीन कृषि अधिनियम लाई है। इसलिये किसानों द्वारा पंजाब, हरियाणा में रिलायंस जियो का भी बड़े पैमाने पर विरोध यहां तक कि बहिष्कार किया जा रहा था। रिलायंस जियो के तो कई मोबाईल टावर्स में भी उस समय तोड़ फोड़ की खबरें आई थीं। बहरहाल जिन उपभोक्ताओं को लुभाने के लिए निजी कम्पनीज सैकड़ों हजारों करोड़ रुपए विज्ञापन या प्रलोभन में खर्च करती हैं वही उपभोक्ता बिना किसी प्रयास के बीएसएनएल को स्वयं ही मिल रहे थे इससे बड़ी लोकप्रियता की बात बीएसएनएल के लिये और क्या हो सकती है?

परन्तु चिंता का विषय है कि देश का सबसे बड़ा संचार नेटवर्क होने के बावजूद नेटवर्क और स्पीड दोनों ही मामलों में बीएसएनएल अपने में सुधार नहीं कर पा रहा है। उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल व हरियाणा यहाँ तक कि चंडीगढ़ में तो इसकी गति नाममात्र है। सवाल यह है कि देश का सबसे बड़ा व सबसे साधन संपन्न नेटवर्क व सबसे अधिक टावर्स रखने के बावजूद आखिर क्या वजह है कि गांव में तो दूर शहरों तक में इसके पूरे मोबाईल सिग्नल नहीं आ पाते? आज के युग में जबकि 5 -10 रुपये से लेकर लाखों रुपए तक की लेनदेन मोबाईल गूगल या पे फोन जैसे माध्यमों से की जा रही हो, ऐसे में अन्य निजी कम्पनीज की ही तरह बीएसएनएल का भी राष्ट्रव्यापी नेटवर्क तीव्र गति के साथ उपलब्ध होना बेहद जरूरी है। परन्तु एक तरफ तो देशभक्ति का जज्बा रखने वाले ग्राहकों का बीएसएनएल की ओर आकर्षित होना और दूसरी तरफ बीएसएनएल द्वारा अपने ग्राहकों की जरूरतों और नेटवर्क व स्पीड की कमी के चलते उन्हें होने वाली परेशानियों की अनदेखी करना या इसका तत्काल समाधान न करना बीएसएनएल के ग्राहकों के मन में संदेह जरूर पैदा करता है।

दरअसल पिछले एक दशक से ऐसी तमाम खबरें आ रही हैं जिनसे यह पता चलता है कि सरकारें उद्योगपतियों व कॉर्पोरेट घरानों की हितैषी के रूप में काम कर रही हैं। जिसतरह विद्युत, रेल, बंदरगाह, इन्शुरन्स, बैंकिंग, तेल, गैस, कोयला, सैन्य सामग्री, विमानन व संचार जैसे अनेक क्षेत्रों में सरकारों की सरपरस्ती में उद्योगपतियों व कॉर्पोरेट घरानों का दखल बढ़ा है और देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी इन उद्योगपतियों के लिये व्यवसायिक आधार तैयार कर कई देशों में इन्हें माइनिंग, बिजली व निर्माण आदि के ठेके दिलवाये गये हैं उन्हें देखकर यह संदेह होना भी स्वभाविक है कि कहीं बीएसएनएल को बदनाम करने व इसे कमजोर करने के लिये ही तो यह षड़यंत्र किसी बड़ी व सत्ता संरक्षित साजिश के तहत तो नहीं किया जा रहा?

यदि बीएसएनएल ईमानदारी से चाहे तो कम से कम समय में अपने उपभोक्ताओं को हो रही इन परेशानियों से निजात दिला सकता है। और यदि बीएसएनएल की ओर से पूरे देश के हर कोने तक अपना नेटवर्क व पूरा सिग्नल पहुंचा दिया जाये और उसकी गति में सुधार कर दिया जाये तो निश्चित रूप से निजी कम्पनीज की तरफ से अभी और भी करोड़ों उपभोक्ता अपना मुंह फेर लेंगे। परन्तु सत्ता में बैठे उद्योगपतियों के वे शुभचिंतक जो वास्तव में सरकार में उद्योगपतियों व कॉर्पोरेट घरानों के हितों के न केवल पैरोकार हैं बल्कि सच पूछिए तो उन्हीं के सीधे प्रतिनिधि के रूप में सत्ता में अहम पदों पर बैठे हुये हैं। ऐसे लोगों के सत्ता के शीर्ष पदों पर रहते क्या बीएसएनएल, प्रमुख निजी टेलीकॉम कंपनियों से कड़ी प्रतिस्पर्धा कर सकेगा? बीएसएनएल मोबाइल के मौजूदा नेटवर्क तथा उसकी मंद गति को देखकर इस बात पर संदेह होना स्वाभाविक है। और यदि बी एस एन एल में ही सर्वोच्च पदों पर बैठे अधिकारियों की साजिश के चलते और उनकी उद्योगपतियों व कॉर्पोरेट घरानों से मिली भगत के परिणाम स्वरूप इस पीएसयू की इतनी दयनीय हालत हो रही है तो ऐसे 'विभीषणों ' का भी बेनकाब होना बेहद जरूरी है। न केवल सरकार बल्कि स्वयं बीएसएनएल कर्मियों को भी इस बात पर नजर रखनी होगी कि भारत सरकार का यह लोकप्रिय केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम बी एस एन एल किन कारणों से अपने उपभोक्ताओं को समुचित सेवायें नहीं दे पा रहा है? बी एस एन एल, कहीं भीतरघात का शिकार तो नहीं?

संपादकीय

सरकार का सख्त रुख

भारत और कनाड़ा के बीच कूटनीतिक टकराव ने नया मोड़.ले लिया है। सिख अलगावावादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या से जुड़े.आरोपों के कारण भारत ने कनाड़ा के छह राजनयिकों को निष्कासित करने से पहले उच्चायुक्त और कुछ अधिकारियों को कनाड़ा से वापस बुलाने का फैसला किया। विदेश मंत्रालय ने कनाड़ा के प्रभारी राजदूत स्टीवर्ट वीलर को तलब किया और स्पष्ट रूप से चेताया कि भारतीय उच्चायुक्त संजय वर्मा और अन्य राजनयिकों एवं अधिकारियों को निराधार तरीके से निशाना बनाया गया जो नई दिल्ली को पूरी तरह से अस्वीकार्य है। हाल के वर्षों में दूसरा अवसर है जब किसी पश्चिमी देश के राजनयिक को इस तरह की फटकार लगाई गई है। इससे पहले दिसम्बर, 2020 में भी कनाड़ा के राजदूत को विदेश मंत्रालय ने फटकार लगाई थी। उस दौरान कनाड़ा ने भारत के किसान आंदोलन को लेकर मानवाधिकारों के हनन की बात कही थी। इस बार भारत के सख्त रुख को लेकर विदेश नीति के जानकारों का नजरिया अलग-अलग है। एक मत यह है कि भारत ने कनाड़ा ही नहीं, बल्कि अमेरिका को भी संदेश दिया है। वस्तुतः खालिस्तानी अलगाववादी निज्जर को लेकर कनाड़ा और अमेरिका दोनों आरोप लगाते रहे हैं कि निज्जर की हत्या में भारतीय एजेंसियों का हाथ है। इस संबंध में भारत ने कनाड़ा से सबूत मांगे हैं, लेकिन उसने कोई सबूत नहीं दिया। प्रधानमंत्री ट्रूड़ो सिखों के वोट के लिए इस तरह के बेबुनियाद आरोप लगाते रहते हैं। जाहिराना तौर पर कनाड़ा के नेताओं के बयानों को भारत के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप के रूप में देखा गया था और विदेश मंत्रालय ने इस पर कड़ी आपत्ति दर्ज की थी। हालांकि भारत और कनाड़ा के बीच व्यापक रिश्ते रहे हैं, लेकिन खालिस्तानी आंदोलन से जुड़े.सिखों द्वारा भारत में स्वतंत्र सिख राष्ट्र-राज्य की मांग के कारण दोनों देशों के रिश्ते तनावपूर्ण रहे हैं। कनाड़ा में सिख आबादी खासी है। ट्रूड़ो राजनीतिक फायदे के लिए सिखों का समर्थन करते रहते हैं। इस बार मोदी सरकार के सख्त रुोख से दोनों देशों के कूटनीतिक रिश्ते खत्म होने के कगार पर हैं। वास्तव में पश्चिमी देशों का सत्ता प्रतिष्ठान, सिविल सोसाइटी और मीड़िया का रुोख भारत की राष्ट्रवादी मोदी सरकार के प्रति अनुकूल नहीं रहा है। वे किसी न किसी मुद्दे को लेकर मोदी सरकार को निशाना बनाने की कोशिश करते रहते हैं। अब मोदी सरकार ने ऐने लोगों के प्रति 'भय बिन होए न प्रीति' की नीति अपनाई है।

अन्तर्राष्ट्रीय गरीबी उन्मूलन दिवसः गरीबी के शर्म के कलंक को धोना होगा

अंतर्राष्ट्रीय गरीबी उन्मूलन दिवस हर साल 17 अक्टूबर को मनाया जाता है। इस दिन को मनाने की शुरूआत 17 अक्टूबर, 1987 को हुई थी। उस दिन, पेरिस के ट्रोकाडेरो में एक लाख से ज्यादा लोग इकट्ठा हुए थे। इस दिन को मनाने का मकसद, अत्यधिक गरीबी, हिंसा, और भूख से पीड़ित लोगों को सम्मानित जीवन उपलब्ध कराना है। इस दिवस की 2024 की थीम है, ह्यसामाजिक और संस्थागत दुर्व्यवहार को समाप्त करना, न्यायपूर्ण, शांतिपूर्ण और समावेशी समाज के लिए मिलकर कार्य करना।ह्न यह दिन गरीबी को कम करने के लिए सामूहिक कार्रवाई की जरूरत पर जोर देता है। इस दिवस का मकसद गरीबों के संघर्षों और उनकी चिंताओं को सुनना, उन्हें गरीबी से बाहर आने में मदद करना और अत्यधिक गरीबी में रहने वाले लोगों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने के लिए सामूहिक कार्रवाई के महत्व पर जोर देना भी है। जो गरीबी में रहने वाले लोगों और व्यापक समाज के बीच समझ और संवाद को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखता है। गरीबी को खत्म करना सिर्फ. गरीबों की मदद करना नहीं है - बल्कि हर महिला और पुरुष को सम्मान के साथ जीने का मौका देना है। गरीबी किसी व्यक्ति के मानवाधिकारों का हनन है। यह न केवल अभाव, भूख और पीड़ा का जीवन जीने की ओर ले जाती है, बल्कि मौलिक अधिकारों और स्वतंत्रताओं के आनंद का भी बड़ा अवरोध है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, 2022 के अंत तक विश्व की 8.4 प्रतिशत जनसंख्या, या लगभग 670 मिलियन लोग, अत्यधिक गरीबी में रह रहे थे। अनुमान है कि वैश्विक जनसंख्या का लगभग 7 प्रतिशत लगभग 575 मिलियन लोग 2030 तक भी अत्यधिक गरीबी में फंसे रह सकते हैं।

आजादी के अमृत काल में सशक्त भारत एवं विकसित भारत को निर्मित करते हुए गरीबमुक्त भारत के संकल्प को भी आकार देना होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं उनकी सरकार ने वर्ष 2047 के आजादी के शताब्दी समारोह के लिये जो योजनाएं एवं लक्ष्य तय किये हैं, उनमें गरीबी उन्मूलन के लिये भी व्यापक योजनाएं बनायी गयी है। विगत दस वर्ष एवं मोदी के तीसरे कार्यकाल में ऐसी गरीब कल्याण की योजनाओं को लागू किया गया है, जिससे भारत के भाल पर लगे गरीबी के शर्म के कलंक को धोने के सार्थक प्रयत्न हुए है एवं गरीबी की रेखा से नीचे जीने वालों को ऊपर उठाया गया है। वर्ष 2005 से 2020 तक देश में करीब 41 करोड़ लोग गरीबी रेखा से ऊपर आए हैं तब भी भारत विश्व में एकमात्र ऐसा देश है जहां गरीबी सर्वाधिक है। वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक के अनुसार भारत में कुल 23 करोड़ गरीब हैं। यह स्पष्ट संकेत है कि तमाम कल्याणकारी योजनाओं के बावजूद गरीबी उन्मूलन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए नए विचारों एवं कल्याणकारी योजनाओं पर विमर्श के साथ गरीबों के लिये आर्थिक स्वावलम्बन-स्वरोजगार की आज देश को सख्त जरूरत है। गरीबों को मुफ्त की रेवड़िया बांटने एवं उनके वोट बटोरने की स्वार्थी राजनीतिक मानसिकता से उपरत होकर ही गरीबमुक्त संतुलित समाज संरचना की जा सकती है।

गरीबी पहले भी अभिशाप थी लेकिन अब यह संकट और गहराया है। गरीबी केवल भारत की ही नहीं, बल्कि दुनिया की एक बड़ी समस्या है। गरीबी एक गंभीर बीमारी है, किसी भी देश के लिए गरीबी एक बदनुमा दाग है। जब किसी राष्ट्र के लोगों को रहने को मकान, जीवन निर्वाह के लिये जरूरी भोजन, कपड़े, दवाइयां आदि जैसी चीजों की कमी महसूस होती है, तो वह राष्ट्र गरीब राष्ट्र की श्रेणी में आता है। इस गरीबी से मुक्ति के लिये सरकारें व्यापक प्रयत्न करती हैं। हम जिन रास्तों पर चल कर एवं जिन योजनाओं को लागू करते हुए देश में समतामूलक संतुलित समाज निर्माण की आशा करते हैं वे योजनाएं विषम और विषभरी होने के कारण सभी कुछ अभिनय लगता है, छलावा लगता है, भ्रम एवं फरेब लगता है। सब नकली, धोखा, गोलमाल, विषमताभरा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का लोक राज्य, स्वराज्य, सुराज्य, रामराज्य का सुनहरा स्वप्न ऐसी नींव पर कैसे साकार होगा? क्योंकि यहां तो सारे राजनीति दल एवं लोकतंत्र को हांकने वाले सब अपना-अपना साम्राज्य खड़ा करने में लगे हैं। विश्व की सारी संपदा, सारे संसाधन गरीबी को मिटाने में लगते तो आज स्थिति बहुत भिन्न होती, किन्तु बीच में सत्ता की लालसा एवं विश्व पर साम्राज्य स्थापित करने की महत्वाकांक्षाओं ने व्यवधान खड़े कर दिये। इसी कारण जो संपदा है, वह मानव को सुखी, संतुलित या सामान्य बनाने की दिशा में नहीं लगी, संहारक अस्त्रों के निर्माण, आतंकवाद एवं युद्ध की मानसिकता में लगी। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को भयभीत रखने में अपनी ऊर्जा खपा रहा है, न कि गरीब इंसान की गरीबी दूर करने में।

आज का भौतिक दिमाग कहता है कि घर के बाहर और घर के अन्दर जो है, बस वही जीवन है। लेकिन राजनीतिक दिमाग मानता है कि जहां भी गरीब है, वही राजनीति के लिये जीवन है, क्योंकि राजनीति को उसी से जीवन ऊर्जा मिलती है। यही कारण है कि इस देश में सतहत्तर साल के बाद भी गरीबी कम होने के बजाय बढ़ती जा रही है, जितनी गरीबी बढ़ती है उतनी ही राजनीतिक जमीन मजबूती होती है। क्योंकि सत्ता पर काबिज होने का मार्ग गरीबी के रास्ते से ही आता है। बहुत बड़ी योजनाएं इसी गरीबी को खत्म करने के लिये बनती रही हैं और आज भी बन रही हैं। लेकिन गरीब खत्म होते गये और गरीबी आज भी कायम है। सरकारी योजनाओं की विसंगतियां ही है कि गांवों में जीवन ठहर गया है। बीमार, अशिक्षित, विपन्न मनुष्य मानो अपने को ढो रहा है। कह तो सभी यही रहे हैं--बाकी सब झूठ है, सच केवल रोटी है। रोटी केवल शब्द नहीं है, बल्कि बहुत बड़ी परिभाषा समेटे हुए है अपने भीतर। जिसे आज का मनुष्य अपनी सुविधानुसार परिभाषित कर लेता है। रोटी कह रही है-मैं महंगी हूँ तू सस्ता है। यह मनुष्य का घोर अपमान है। रोटी कीमती, जीवन सस्ता। मनुष्य सस्ता, मनुष्यता सस्ती। और इस तरह गरीब को अपमानित किया जा रहा है, यह सबसे बड़ा खतरा है। गरीब यानी जिसके पास धन उसकी जरूरत से कम हो या जो दो वक्त की रोटी की जुगाड़ नहीं कर सकता। जो अपनी बूढ़ी मां का इलाज नहीं करवा सकता। जो अपने बच्चों की फीस नहीं भरवा सकता।

गरीबी व्यक्ति को बेहतर जीवन जीने में अक्षम बनाता है। गरीबी के कारण व्यक्ति को जीवन में शक्तिहीनता और आजादी की कमी महसूस होती है। गरीबी उस स्थिति की तरह है, जो व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार कुछ भी करने में अक्षम बनानी है। गरीबी ऐसी त्रासदी एवं दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थिति है जिसका कोई भी अनुभव नहीं करना चाहता। एक बार महात्मा गांधी ने कहा था कि गरीबी कोई दैवीय अभिशाप नहीं है बल्कि यह मानवजाति द्वारा रचित सबसे बड़ी समस्या है। भारत में गरीबी का मुख्य कारण बढ़ती जनसंख्या, कमजोर कृषि, भ्रष्टाचार, रूढ़िवादी सोच, जातिवाद, अमीर-गरीब में ऊंच-नीच, नौकरी की कमी, अशिक्षा, बीमारी आदि हैं। एक आजाद मुल्क में, एक शोषणविहीन समाज में, एक समतावादी दृष्टिकोण में और एक कल्याणकारी समाजवादी व्यवस्था में गरीबी रेखा नहीं होनी चाहिए। यह रेखा उन कर्णधारों के लिए शर्म की रेखा है, जिसको देखकर उन्हें शर्म आनी चाहिए। यहां प्रश्न है कि जो रोटी नहीं दे सके वह सरकार कैसी? जो अभय नहीं बना सके, वह व्यवस्था कैसी? जो इज्जत व स्नेह नहीं दे सके, वह समाज कैसा? जो शिष्य को अच्छे-बुरे का भेद न बता सके, वह गुरु कैसा?

गांधी और विनोबा ने सबके उदय एवं गरीबी उन्मूलन के लिए 'सर्वोदय' की बात की। लेकिन राजनीतिज्ञों ने उसे निज्योदय बना दिया। जे. पी. ने जाति धर्म से राजनीति को बाहर निकालने के लिए 'संपूर्ण क्रांति' का नारा दिया। जो उनको दी गई श्रद्धांजलि के साथ ही समाप्त हो गया। 'गरीबी हटाओ' में गरीब हट गए। स्थिति ने बल्कि नया मोड़ लिया है कि जो गरीबी के नारे को जितना भुना सकते हैं, वे सत्ता प्राप्त कर सकते हैं। कैसे समतामूलक एवं संतुलित समाज का सुनहरा स्वप्न साकार होगा? कैसे मोदीजी का नया भारत निर्मित होगा?

-ललित गर्ग

चिंतन-मनन

भक्त के भीतर रहते हैं कृष्ण

जब भगवान चैतन्य बनारस में हरे कृष्ण महामंत्र के कीर्तन का प्रवर्तन कर रहे थे, तो हजारों लोग उनका अनुसरण कर रहे थे।

तत्कालीन बनारस के अत्यंत प्रभावशाली और विद्वान प्रकाशानंद सरस्वती उनको भावुक कहकर उनका उपहास करते थे। कभी-कभी भक्तों की आलोचना दार्शनिक यह सोचकर करते हैं कि भक्तगण अंधकार में हैं और दार्शनिक दृष्टि से भोले-भाले भावुक हैं, किंतु यह तथ्य नहीं है। ऐसे अनेक बड़े-बड़े विद्वान पुरुष हैं, जिन्होंने भक्ति का दर्शन प्रस्तुत किया है। किंतु यदि कोई भक्त उनके इस साहित्य का या अपने गुरु का लाभ न भी उठाए और यदि वह अपनी भक्ति में एकनिष्ठ रहे, तो उसके अंतर से कृष्ण स्वयं उसकी सहायता करते हैं।अतः कृष्णभावनामृत में रत एकनिष्ठ भक्त ज्ञानरहित नहीं हो सकता। इसके लिए इतनी ही योग्यता चाहिए कि वह पूर्ण कृष्णभावनामृत में रहकर भक्ति संपन्न करता रहे। आधुनिक दार्शनिकों का विचार है कि बिना विवेक के शुद्ध ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता। उनके लिए भगवान का उत्तर है- जो लोग शुद्धभक्ति में रत हैं, भले ही वे पर्याप्त शिक्षित न हों तथा वैदिक नियमों से पूर्णतया अवगत न हों, किंतु भगवान उनकी सहायता करते ही हैं। भगवान अजरुन को बताते हैं कि मात्र चिंतन से परम सत्य भगवान को समझ पाना असंभव है, क्योंकि भगवान इतने महान हैं कि कोरे मानसिक प्रयास से उन्हें न तो जाना जा सकता है, न ही प्राप्त किया जा सकता है। भले ही कोई लाखों वर्षो तक चिंतन करता रहे, किंतु यदि भक्ति नहीं करता, यदि वह परम सत्य का प्रेमी नहीं है, तो उसे कभी भी कृष्ण या परम सत्य समझ में नहीं आएंगे।परम सत्य, कृष्ण, केवल भक्ति से प्रसन्न होते हैं और अपनी अचिंत्य शक्ति से वे शुद्ध भक्त के हृदय में स्वयं प्रकट हो सकते हैं।शुद्धभक्त के हृदय में तो कृष्ण निरंतर रहते हैं और कृष्ण की उपस्थिति सूर्य के समान है, जिसके द्वारा अज्ञान का अंधकार तुरंत दूर हो जाता है।

साइबर ठगी का बढ़ता दायरा, सज्जनों पर संकट

विजय कुमार जैन

आधुनिक संचार क्रांति के युग में मोबाइल एवं इंटरनेट जितने लाभदायक हैं उससे ज्यादा हानिकारक भी हैं। मोबाइल एवं इंटरनेट के माध्यम से भारत ही नहीं दुनिया में आए दिन साइबर ठगी की घटनाएं सुनने में आ रही है साइबर अपराध करने वालों की गैंग जानबूझकर ऐसे समय संबंधित को निशाना बनाते हैं जब वह विचार ही नहीं कर पाता और उनके द्वारा जितनी राशि की मांग की जाती है तत्काल उनके खाते में डाल देते हैं। इसके बाद पछतावा ही हाथ रहता है। मैं साइबर ठगी की कुछ घटनाओं का यहां पर उल्लेख करना चाहूंगा गुना जिले में श्री द्वारका प्रसाद शर्मा महिला बाल विकास विभाग में लिपिक हैं, इनको अपरिचित मोबाइल से फोन आया और मोबाइल नंबर का केवाईसी करने की बात कही ओटीपी पूछा और बैंक खाते से रू.16000 निकल लिये ।श्री बलवीर सिंह गुर्जर निवासी साडा कॉलोनी राघौगढ़ सेवानिवृत्त गुना तहसीलदार रीडर इनके पंजाब नेशनल बैंक शाखा साडा कॉलोनी राघौगढ़ के खाते में किसी ने रू.1 जमा किया उन्होंने जैसे ही मोबाइल खोलकर बैंक अकाउंट देखा उनके बैंक खाते से पहली बार रुपए 9970, दूसरे बार 9999 कट गए।

उन्होंने तत्काल बैंक शाखा में जाकर अपना खाता ब्लॉक कराया। रुठियाई तहसील राघौगढ़ निवासी रविंद्र सिंह परिहार के पास फोन आया और बताया कि आपका बेटा पुलिस थाने में बैठा है उन्होंने कहा कि मेरा बेटा तो नौकरी पर है उधर से कहा आपका बेटा एक लड़की के साथ होटल में अनैतिक कार्य करते हुए पकड़ा गया है। अपने बेटे को बचाना है तो तत्काल तीन लाख रुपए खाते में डालो। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा बेटे को फोन लगाओ। उन्होंने बेटे से पूछा कहां हो बेटे कहा कि मैं तो ऑफिस में हूं फिर उन्होंने जिनका फोन आया था बेटा का फोन कनेक्ट कर बात करवायी। बेटे ने उनसे भला बुरा कहा तब फोन काट दिया।एक सेवानिवृत अधिकारी जिनकी लड़की इंदौर में पढ़ती है घटना चार माह पुरानी है उनके पास फोन आया आपकी बेटी थाने में बैठी है अनैतिक स्थिति में होटल में पकड़ी है उन्होंने दूसरे नंबर से बेटी को फोन लगाया बेटी कॉलेज में थी फोन बंद था इस कारण बात नहीं हो सकी। जिनका फोन आया था उन्होंने कहा अपनी बेटी को बचाना चाहते हो तो तत्काल रू 6 लाख रुपए खाते में डालो घबराहट में उन्होंने तीन लाख रुपये खाते में भेज दिये ।फिर लड़की का फोन आया कि पापा जी फोन क्यों किया। तब उन्होंने सारी घटना बतायी। उनके साथ साइबर ठगी हो गई ।मैं स्वयं भी साइबर ठगी से होते-होते बचा फोन आया मेरे से कहा कि आपके मोबाइल नंबर की केवाईसी होना है मैंने उनसे कहा मेरा नंबर तो एयरटेल का है अब बी एस एन एल में केवाईसी क्यों हो रही है तो उधर से जवाब आया आपकी सिम पुरानी है पहले बी एस एन एल की थी ।इसलिए आपको 24 घंटे के अंदर केवाईसी करना आवश्यक है अन्यथा सिम बंद हो जाएगी ।मैंने उनसे पूछा कि मुझे क्या करना है उन्होंने कहा कि हम आपको एक प्रोफार्मा भेज रहे हैं उसमें हम जो जानकारी पूछे उनका आप मोबाइल चालू रखकर हमें जवाब देते जाएं। मैंने उनके कुछ प्रश्नों के उत्तर दिए थोड़ी देर बाद मेरी पौत्री 14 वर्षीय तन्वी जैन मेरे पास आई और बोली दादाजी मुझे ऐसा लग रहा है आप साइबर ठगी के शिकार होने वाले हैं। आप तत्काल इस नंबर को काट दें और इस नंबर को ब्लॉक कर दें। इस प्रकार में साइबर ठगी से बच पाया । साइबर ठगी की ही यह घटना मेरे मित्र श्री राघवेंद्र सिंह परिहार सेवानिवृत्ति कृषि अधिकारी राघौगढ़ ने मुझे बताया मैं ऑनलाइन दवाइयां मंगाता था। उनके लिए अपरिचित नंबर से फोन आया और कहा कि आप जिस कंपनी से दवाइयां ऑनलाइन मांगते हैं उस कंपनी ने ड्रा निकाला है ड्रा में आपके नाम कार निकली है आपको बधाईयां।परिहार जी ने उनसे पूछा मुझे क्या करना है उन्होंने कहा कार तो हम आपके लिए कोलकाता में डिलीवरी दे देंगे या फिर आप कहेंगे तो आपके निवास पर पहुंचा देंगे। आपको मात्र इतना करना है आप रजिस्ट्रेशन के पैसे हमारे खाते में डाल दो ।उन्होंने कहा मेरा भतीजा कोलकाता में ही सर्विस में है वह आपसे मिलेगा कहां मिलना है पता आप मुझे भेजिए दूसरी ओर से पता नहीं आया और वह साइबर ठगी से बच गये। पिछले माह एसिया

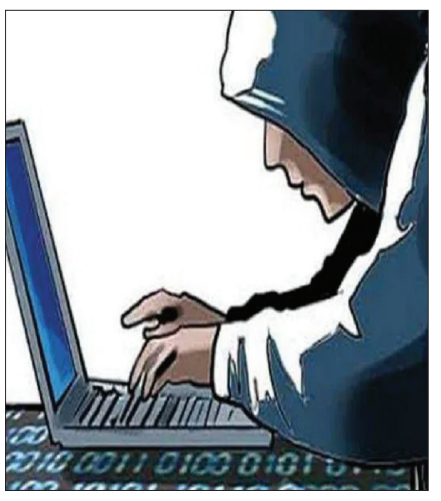

के बड़े उद्योग पति ओसवाल ग्रुप लुधियाना के मालिक की भारत की संभवतः अभी तक की सबसे बड़ी सायवर ठगी हुई। यह ठगी साढ़े सात करोड़ रुपये की थी। इस सायवर ठगी का समाचार देश के अनेक समाचार पत्रों में प्रमुखता से प्रकाशित हुआ। वर्तमान में साइबर ठगी की घटनाओं में निरंतर वृद्धि हो रही है आम भोले भाले नागरिक उनके जाल में फंसकर अपना नुकसान कर रहे हैं। मोबाइल एवं इंटरनेट का उपयोग करते समय हर व्यक्ति की जागरूकता आवश्यक है के वाई सी के झांसे में ना आए ओटीपी ना भेजें।

(लेखक वरिष्ठ स्वतंत्र पत्रकार एवं भारतीय जैन मिलन के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष हैं)

भारत /न्यूजीलैंड : बारिश की भेंट चढ़ा पहले दिन का खेल, बेंगलुरु में टॉस तक भी नहीं हो सका

बेंगलुरू (एजेंसी)। भारत और न्यूजीलैंड के बीच बुधवार 16 अक्टूबर से तीन मैचों की टेस्ट सीरीज का आगाज हो गया है। लेकिन बारिश के कारण बेंगलुरु के एम ए चिन्नास्वामी स्टेडियम में होने वाले टेस्ट का पहला दिन बाधित हो गया। यहां टॉस तक भी नहीं हो पाया। भारत और न्यूजीलैंड के बीच तीन मैचों की टेस्ट सीरीज वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप 2023-25 चक्र का हिस्सा है।

मौसम विभाग ने पूरे दिन बारिश की भविष्यवाणी की है, जिसके कारण भारतीय खिलाड़ी खुद को एक्टिव रहने के लिए इनडोर नेट्स में प्रैक्टिस कर रहे हैं। भारतीय टीम के खिलाड़ी विराट कोहली यशस्वी जायसवाल मैदान पर नजर आए थे। हालांकि, रिपोर्ट के मुताबिक वह अपने किट के साथ इंडोर नेट्स में गए और कुछ समय बिताया। लंच के बाद भी बारिश होने के कारण पहले दिन का खेल रद्द करनापड़ा। इससे पहले बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट सीरीज के दौरान दूसरे टेस्ट मैच में भी बारिश के कारण मैच तय नहीं हो सका। हालांकि, पहले दिन टॉस हुआ था और कुछ ओवर का मैच हुआ था लेकिन फिर दो दिन तक बारिश की वजह से खेल नहीं हो सकता था। लेकिन अंतिम दो दिन में भारत ने दमदार प्रदर्शन करते हुए मैच अपने नाम किया था।

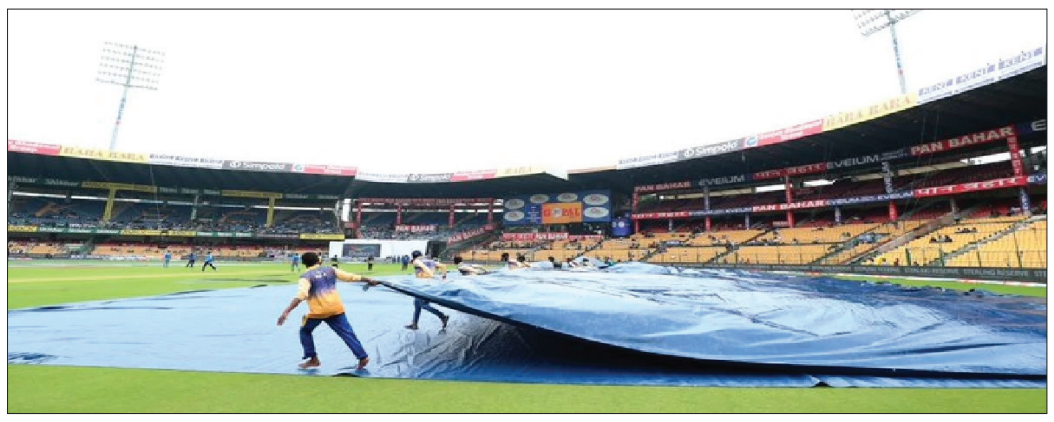

'भारत के बारे में बात करने पर प्रतिबंध है', पाकिस्तान ए क्रिकेट टीम के कप्तान का खुलासा

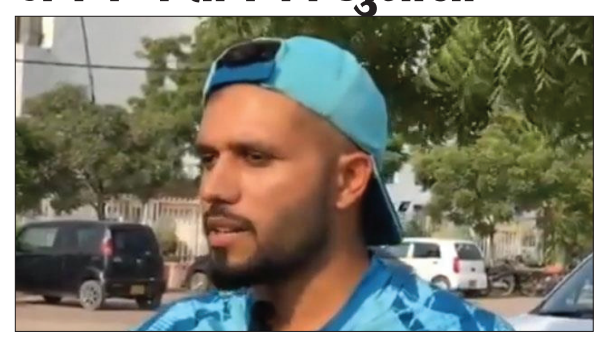

लाहौर (एजेंसी)। पाकिस्तान ए टीम के कप्तान मोहम्मद हारिस ने सनसनीखेज खुलासा किया है कि पुरुष टी20 इमर्जिंग टीम एशिया कप के लिए उनकी टीम को ड्रेसिंग रूम में भारत के बारे में बात करने पर प्रतिबंध है। पाकिस्तान शाहीन 19 अक्टूबर को अपने टूर्नामेंट के पहले मैच में भारत ए से भिड़ेगी। उनके ग्रुप में यूएई और ओमान दो अन्य टीमें हैं।

हारिस ने सोशल मीडिया पर वायरल हुए एक वीडियो में कहा, 'आपको एक बात बताऊं। पहली दफा होगा के इस ड्रेसिंग रूम में भारत पर बात करने पर पाबंदी है।' 23 वर्षीय हारिस ने सीनियर पाकिस्तान टीम के लिए अब तक 6 वनडे और 9 टी20 मैच खेले हैं, ने कहा कि अगर खिलाड़ी केवल भारत के खिलाफमैच के बारे में बात करते हैं तो इससे उन पर अतिरिक्त दबाव बनता है।

उन्होंने कहा, 'हमें (सिर्फ) भारत के बारे में नहीं सोचना है, हमें दूसरी टीमों के बारे में भी सोचना है। मैं (सीनियर) पाकिस्तान टीम में रहा हूं, पिछला विश्व कप भी खेला है। इससे इतना दबाव बनता है कि मानसिक रूप से आप भारत, भारत के बारे में सोचते रहते हैं। हमें दूसरी टीमों का भी सामना करना है। इसलिए इस टीम पर फिलहाल (भारत के बारे में बात करने पर) प्रतिबंध है। हमने अभी तक ड्रेसिंग रूम में भारत के बारे में बात नहीं की है। सिर्फभारत ही नहीं, हमें दूसरी टीमों का भी सम्मान करना है।'

टूर्नामेंट में भारत की अगुआई मध्यक्रम के बल्लेबाज तिलक वर्मा करेंगे जो सीनियर टीम के लिए पहले ही चार वनडे और 16 टी20 मैच खेल चुके हैं। सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा को वर्मा की जगह उप-कप्तान नियुक्त किया गया है।

आईसीसी रैंकिंग: रैंकिंग में जो रूट को हुआ फायदा, 'स्पेशल-20' क्लब में हुई एंट्री

दुबई (एजेंसी)। आईसीसी ने खिलाड़ियों की ताजा रैंकिंग जारी की है। इंग्लैंड के दिग्गज बल्लेबाज जो रूट ने अब आईसीसी टेस्ट रैंकिंग के एक स्पेशल 20 क्लब में एंट्री की है। भारत के स्टार क्रिकेटर विराट कोहली पहले से ही लिस्ट में विराजमान हैं। दरअसल, रूट ने क्रिकेट इतिहास में 20 पुरुष बैटर्स द्वारा हासिल की गई करियर की सर्वश्रेष्ठ टेस्ट रेटिंग हैं। कोहली 15वें नंबर पर हैं। वह 937 रेटिंग अंकों तक पहुंच चुके हैं। ऑस्ट्रेलिया के महान बल्लेबाज डॉन ब्रैडमैन 961 रेटिंग अंकों के साथ टॉप पर हैं।

आईसीसी टेस्ट बल्लेबाजों की लेटेस्ट रैंकिंग की बात करें तो जो रूट टॉप पर हैं। उन्होंने पाकिस्तान के खिलाफ पहले टेस्ट में दोहरा शतक जड़ा था। उन्होंने मुल्तान में 375 गेंदों में 17 चौके जड़े और 262 रन की पारी खेली। ये रूट के टेस्ट करियर का सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर है। रूट ने दोहरा शतक जमाने के बाद रेटिंग अंकों में इजाफा किया है। इससे पहले उनके हाईएस्ट रेटिंग अंक 923 थे। रूट ने रैंकिंग में 100 से ज्यादा अंकों की बढ़त हासिल की।

वहीं न्यूजीलैंड के केन विलियमसन 829 अंक के साथ संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर हैं। उनके साथ इंग्लैंड के हैरी ब्रूक 829 अंक भी हैं। ब्रूक ने मुल्तान में तिहसा शतक (317) जमाया था उन्होंने 11 स्थान की छलांग लगाई। कोहली सातवें नंबर पर हैं।

महिला टी20 विश्व कप के पहले सेमीफाइनल में आज ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के बीच होगा मुकाबला

दुबई (एजेंसी)। आईसीसी महिला टी20 विश्वकप क्रिकेट सेमीफाइनल के लिए चार टीमें तय हो गयी हैं। इसमें सेमीफाइनल मुकाबलों की शुरुआत गुरुवार 17 अक्टूबर से होगी। इसमें पहला सेमीफाइनल ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के बीच होगा। इसमें ऑस्ट्रेलिया की टीम ग्रुप ए में थी जबकि दक्षिण अफ्रीका ने ग्रुप बी से सेमीफाइनल में प्रवेश किया है। ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के बीच मुकाबला 17 अक्टूबर को खेला जाएगा। दोनों टीमें इस मैच के लिए दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में मैदान पर उतरेगी। ग्रुप ए में ऑस्ट्रेलिया की टीम लीग स्टेज में अपने चारों मैच जीतकर अंक तालिका में पहले स्थान पर रही थी। वहीं दक्षिण अफ्रीका ने चार में से अपने तीन मुकाबलों को जीता था और वह अंक तालिका में दूसरे स्थान पर रही थी। वहीं दूसरा सेमीफाइनल न्यूजीलैंड और वेस्टइंडीज के बीच खेला जाएगा। ये मैच 18 अक्टूबर को शारजाह

क्रिकेट मैदान पर खेला जाएगा। इसमें न्यूजीलैंड की टीम ने ग्रुप ए में चार में से अपने तीन मैच जीते थे। वह 6 अंक लेकर ऑस्ट्रेलिया के बाद वह अंक तालिका में दूसरे स्थान पर रही थी। वहीं वेस्टइंडीज की टीम ग्रुप बी की टॉप टीम है। वेस्टइंडीज ने भी अपने चार में से तीन मैच जीते थे, लेकिन बेहतर रन रेट के कारण अंक तालिका में वह दक्षिया अफ्रीका के बराबर अंक होते हुए वह पहले स्थान पर रही। सेमीफाइनल में जीतने वाली टीम रविवार, 20 अक्टूबर को खेले जाने वाले फाइनल में पहुंचेगी। फाइनल मैच दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में होगा।

मयंक ओर नितीश को शीघ्र ही टेस्ट क्रिकेट में डेब्यू का अवसर मिलेगा : रोहित

बेंगलुरु। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने कहा है कि आने वाले समय में तेज गेंदबाज मयंक यादव और ऑलराउंडर नितीश कुमार रेड्डी को भी टेस्ट पदार्पण का अवसर मिलेगा। मयंक और नितीश दोनों ही बांग्लादेश के खिलाप हाल ही में संपन्न तीन मैचों की सीरीज में भारत की टी20 टीम में शामिल थे ओर इसमें इन दोनो का प्रदर्शन काफी अच्छा रहा। दूसरे टी20 मैच में नितीश ने 34 गेंदों पर 74 रन बनाकर प्रभावित किया। इसमें 3 विकेट भी शामिल थे। वहीं मयंक ने भी अच्छी गेंदबाजी करते हुए तीन मैचों में सात से कम की इकॉनमी रेट से चार विकेट लिए। इन दोनों को प्रसिद्ध कृष्णा और हर्षित राणा के साथ तीन मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए रिजर्व खिलाड़ियों में शामिल किया गया है। रोहित ने कहा कि, मैं समझता हूं कि इन दोनो ने ही अब तक बहुत अधिक नहीं खेला है। हम बेंच स्ट्रेंथ बनाना चाहते हैं।

डेब्यू टेस्ट में शतक लगाने वाले गुलाम को बाबर आजम ने बधाई दी

मुल्तान। पाकिस्तान के अनुभवी बल्लेबाज और पूर्व कप्तान बाबर आजम ने इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच के पहले दिन शानदार शतक लगाने वाले बल्लेबाज कामरान गुलाम की जमकर प्रशंसा की है। गुलाम को बाबर आजम की जगह इस मेच में शामिल किया गया था। गुलाम ने इंग्लैंड के गेंदबाजों के सामने अच्छा खेल दिखाते हुए 224 गेंदों पर 11 चौकों और 1 छक्के की मदद से 118 रन बनाए। बाबर ने सोशल मीडिया पर गुलाम को उनकी उपलब्धि के लिए बधाई दी औरलिखा – अच्छा खेला कामरान। कामरान ने अपने डेब्यू पर शानदार शतक लगाकर पाक टीम को पांच विकेट पर 259 के स्कोर तक पहुंचाया। इस नये बल्लेबाज ने खराब फॉर्म में चल रहे बाबर की जगह चौथे नंबर पर बल्लेबाजी की और इंग्लैंड के गेंदबाजी आक्रमकण का अच्छे से सामना किया। वहीं दिन के अंत में मोहम्मद रिजवान और सलमान आगा क्रमश : 37 और पांच रन बनाकर नाबाद थे। जब मेजबान टीम टॉस जीतकर 19 पर दो विकेट खोकर दबाव में थी तब कामरान ने सैम अयूब के साथ तीसरे विकेट के लिए 149 रन जोड़े जिन्होंने करियर की सर्वश्रेष्ठ 77 रन की पारी खेली और रिजवान के साथ पांचवें विकेट के लिए 65 रन की साझेदारी की। उन्होंने स्पिनर जो रूट की गेंद पर चौका लगाकर शतक तक पहुंचने में 280 मिनट का समय लिया और अपने डेब्यू टेस्ट में शतक बनाने वाले पाकिस्तान के 12वें बल्लेबाज बन गए।

लियोनेल मेसी ने तोड़ा क्रिस्टियानो रोनाल्डो का रिकॉर्ड, संन्यास को लेकर कही बड़ी बात

फुटबॉल जगत में पिछले दो दशकों से अर्जेंटीना के लियोनल मेसी और पुर्तगाल के क्रिस्टियानो रोनाल्डो के बीच प्रतिद्वंद्विता चल रही है। दोनों अंतर्राष्ट्रीय और प्रोफेशनल फुटबॉल में एक दूसरे के रिकॉर्ड तोड़ते आ रहे हैं। इस रिकॉर्ड तो तोड़ने के बाद मेसी ने अपने रिटायरमेंट को लेकर भी बड़ी बात कही। वर्ल्ड कप क्वालिफायर मैच में लियोनेल मेसी की अर्जेंटीना बोलिविया का सामना कर रही थी। इस मैच में उन्होंने 6-0 से जीत हासिल की जिसमें मेसी की हैट्रिक का अहम रोल था। 37 साल के मेसी ने 19वें, 84वें और 86वें मिनट में गोल किए। अर्जेंटीना के दो गोल मेसी के पास पर हुए। उन्होंने लोटारो मार्तिनेज और जूलियन अल्वारेज के लिए गए गोल में एसिस्टेंट की भूमिका निभाई थी। ये मेसी के करियर की 10वीं अंतर्राष्ट्रीय हैट्रिक थी। इस मामले में उन्होंने क्रिस्टियानो रोनाल्डो की बराबरी की। वह दूसरे ऐसे खिलाड़ी हैं जिन्होंने 10 हैट्रिक लगाई है। दोनों सबसे ज्यादा हैट्रिक लगाने वाली खिलाड़ी हैं। लियोनेल मेसी ने मैच को लेकर कहा, यहां आकर लोगों का प्यार महसूस करके बहुत अच्छा लगता है जिस तरह से वे मेरा नाम पुकारते हैं उससे मैं बहुत प्रभावित होता हूं। ये मुझे प्रेरित करता है। मैं जहां हूं वहां खुश रहना पसंद करता हूं। अपनी उम्र के बावजूद, जब मैं यहां आथा हूं तो मैं खुद को एक बच्चे की तरह महसूस करता हूं क्योंकि मैं इस टीम के साथ सहज हूं।

नीतू, डिविलियर्स और कुक आईसीसी हॉल ऑफ फेम में शामिल

दुबई (एजेंसी)। टेस्ट क्रिकेट की एक पारी में सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी (53 रन पर आठ विकेट) करने वाली भारत की पूर्व स्पिनर नीतू डेविड बुधवार को आईसीसी (अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद) हॉल ऑफ फेम में शामिल होने वाली देश की दूसरी महिला क्रिकेटर बनीं। दक्षिण अफ्रीका के महान बल्लेबाज एबी डिविलियर्स और इंग्लैंड के दिग्गज बल्लेबाज एलिस्टेयर कुक को भी हॉल ऑफ फेम में जगह मिली।

भारतीय महिला टीम की चयन समिति की मौजूदा अध्यक्ष नीतू को पूर्व कप्तान डाइना इडुल्जी को शामिल किए जाने के एक साल बाद आईसीसी हॉल ऑफ फेम में जगह मिली है। बाएं हाथ की स्पिनर नीतू ने भारत के लिए 100 से अधिक अंतरराष्ट्रीय मैच (10 टेस्ट और 97 एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय) खेले। एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 47 साल की नीतू 141 विकेट के साथ भारत की दूसरी सबसे सफल गेंदबाज हैं। वह 50 ओवर के प्रारूप में 100 विकेट के आंकड़े को छूने वाली देश की पहली महिला गेंदबाज भी रहीं।

विश्व कप 2005 की सबसे सफल गेंदबाज नीतू ने भारत को पहली बार फाइनल में पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई थी। नीतू ने आईसीसी की विज्ञप्ति में कहा, 'आईसीसी

हॉल ऑफ फेम में शामिल होना बेहद सम्मान की बात है जिसे मैं राष्ट्रीय टीम की ओर से खेलने वाले किसी भी खिलाड़ी के लिए सर्वोच्च मान्यता मानती हूं।'' उन्होंने कहा, 'यह इस महान खेल के लिए जीवन भर के समर्पण के बाद आता है और यह मेरे लिए इस मुकाम तक पहुंचने की एक बहुत ही विशेष यात्रा है।''

नीतू ने कहा, 'अब तक के सबसे महान खिलाड़ियों के साथ हॉल ऑफ फेमर माना जाना शानदार है और मैं इस विशिष्ट क्लब का हिस्सा बनकर रोमांचित हूं।' नीतू ने 1995 में 17 साल की उम्र में नेल्सन में न्यूजीलैंड के खिलाफ अपना पहला अंतरराष्ट्रीय मुकाबला खेला। उन्होंने 1995 में ही जमशेदपुर में इंग्लैंड के खिलाफ भारत की दो रन की करीबी हार के दौरान 53 रन देकर आठ विकेट चटकाए जो आज भी महिला टेस्ट में एक पारी में सर्वश्रेष्ठ व्यक्तिगत गेंदबाजी प्रदर्शन है। नीतू ने 10 टेस्ट में 41 विकेट चटकाए जबकि 97 एकदिवसीय मुकाबलों में 16.34 के औसत से 141 विकेट हासिल किए। नीतू ने 2006 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लिया लेकिन दो साल बाद अपना फैसला बदलते हुए एकदिवसीय प्रारूप में एशिया कप और भारत के इंग्लैंड दौरे पर खेलीं।

दूसरी तरफ कुक ने 250 से अधिक अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों में इंग्लैंड का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने 2018 में इंग्लैंड की ओर से सबसे अधिक टेस्ट रन और शतक बनाने वाले खिलाड़ी के रूप में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कहा। वह कप्तान के रूप में भी काफी सफल रहे। डिविलियर्स ने 14 साल के अपने अंतरराष्ट्रीय करियर में तीनों प्रारूपों में 20 हजार से अधिक अंतरराष्ट्रीय रन बनाए। मैदान के चारों तरफ शॉट खेलने की क्षमता के लिए डिविलियर्स को 'मिस्टर 360' भी कहा जाता है।

उन्होंने दक्षिण अफ्रीका की ओर से एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सबसे तेज अर्धशतक, शतक और 150 रन का रिकॉर्ड बनाया और उन्हें खेल के इतिहास के सबसे आक्रामक बल्लेबाजों में शुमार किया जाता है। आईसीसी हॉल ऑफ फेम जनवरी 2009 में शुरू किया गया जो वैश्विक संचालन संस्था के शताब्दी समारोह का हिस्सा था। इन खिलाड़ियों को शामिल किए जाने का जश्न इस सप्ताह दुबई में विशेष कार्यक्रमों की श्रृंखला के जरिए मनाया जाएगा जो महिला टी20 विश्व कप के समापन के दौरान होगी।

एमबाप्पे के खिलाफ चल रही बलात्कार मामले की जांच, मामले पर फुटबॉलर के प्रतिनिधियों ने दी प्रतिक्रिया

स्टॉकहोम। फ्रांस के फुटबॉल स्टार काइलियान एमबाप्पे के प्रतिनिधियों ने स्वीडन के मीडिया में छपी उस रिपोर्ट को 'झूठी और गैर जिम्मेदाराना' बताया है जिसमें कहा गया है कि उनके खिलाफ बलात्कार के एक मामले में जांच चल रही है। सूत्रों का हवाला दिए बिना स्वीडन के कई मीडिया ने रिपोर्ट दी है कि रीयाल मैड्रिड के स्टार स्ट्राइकर एमबाप्पे के खिलाफ बलात्कार के मामले की जांच चल रही है। रिपोर्ट के बाद स्वीडन के अभियोजकों ने मंगलवार को छोटा सा बयान जारी किया कि पुलिस के पास बलात्कार की एक शिकायत आई है लेकिन इसमें किसी का नाम नहीं लिया गया। बयान में कहा गया, 'रिपोर्ट के अनुसार यह घटना स्टाकहोम के एक होटल में 10 अक्टूबर 2024 की है।' एमबाप्पे की मीडिया टीम ने कहा, 'ये आरोप बिल्कुल झूठे और गैर जिम्मेदाराना है। काइलियान एमबाप्पे अपनी प्रतिष्ठा और सम्मान पर किसी तरह की आंच आना बर्दाश्त नहीं करेंगे।' अपने आधिकारिक एक्स अकाउंट पर भी एमबाप्पे ने लिखा, 'फेक न्यूज।'

दिल्ली कैपिटल्स में पोंटिंग का उत्तराधिकारी कौन ? 40 वनडे खेला यह दिग्गज आगे आया

नई दिल्ली - भारत के बाएं हाथ के पूर्व खिलाड़ी हेमंग बदानी दिल्ली कैपिटल्स के मुख्य कोच बनने की दौड़ में सबसे आगे चल रहे हैं जबकि तेज गेंदबाज मुनाफ पटेल का नाम फ्रेंचाइजी के सहयोगी स्टाफ में भूमिका के लिए चर्चा में है। दिल्ली कैपिटल्स ने कुछ सप्ताह पहले ऑस्ट्रेलिया के रिकी पोंटिंग को उनकी उपलब्धता संबंधी समस्याओं के कारण मुख्य कोच के रूप में हटा दिया था। पोंटिंग 2018 से टीम के साथ थे। इंडियन प्रीमियर लीग के एक सूत्र ने नाम जाहिर नहीं करने की शर्त पर बताया कि दिल्ली कैपिटल्स का प्रबंधन स्तरीय घरेलू कोच ढूंढ रहा है और हेमंग तथा मुनाफ का नाम सामने आया है। अभी अंतिम फैसला नहीं किया गया है लेकिन मुनाफ गेंदबाजी कोच हो सकते हैं। अधिकांश अन्य फ्रेंचाइजी की तरह दिल्ली कैपिटल्स के भी आगामी भव्य नीलामी से पहले तीन खिलाड़ियों को रिटेन (अपने साथ बरकरार रखने) करने की उम्मीद है। टीम कप्तान ऋषभ पंत (18 करोड़ रुपये), ऑलराउंडर अक्षर पटेल (14 करोड) और बाएं हाथ के स्पिनर कुलदीप यादव (11 करोड़) को रिटेन कर सकती है। पांच खिलाड़ियों को रिटेन करने पर 75 करोड़ रुपए खर्च होंगे इसलिए यह माना जा रहा है कि पिछले साल के स्टार खिलाड़ी जेक-फ्रेजर मैकगर्क और दक्षिण अफ्रीका के ट्रिस्टन स्टब्स को टीम राइट टू मैच (आरटीएम) कार्ड के जरिए चुन सकती है, बशर्ते उनकी कीमत टीम के बजट के भीतर हो। बदानी का नाम मुख्य कोच के रूप में आने का कारण अगले दो वर्षों के लिए प्रबंधन में बदलाव का मामला हो सकता है। टीम के सह-मालिकों में से एक जीएमआर अब टीम का संचालन करेगा। दूसरा सह-मालिक जेएसडब्ल्यू है। माना जाता है कि दोनों सह-मालिकों के बीच दो-दो साल तक टीम का प्रबंधन करने पर सहमति है। बदानी इससे पहले सनराइजर्स हैदराबाद में ब्रायन लारा के साथ काम कर चुके हैं लेकिन अगर उन्हें यह काम मिलता है तो यह उनके लिए बहुत बड़ा मौका होगा। तमिलनाडु के पूर्व बल्लेबाज बदानी ने 2001-2004 के बीच भारत के लिए चार टेस्ट और 40 एकदिवसीय मैच खेले जिसमें 2001 की द्विपक्षीय श्रृंखला में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एकदिवसीय शतक उनके करियर का मुख्य आकर्षण रहा।

रोहित नीलामी में उतरे तो कई टीमें लगाएंगी बोली - हरभजन

मुम्बई। पूर्व क्रिकेटर हरभजन सिंह ने भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा की जमकर प्रशंसा करते हुए कहा है कि अगर वह आईपीएल 2025 सत्र के लिए नीलामी में शामिल होते हैं तो नीलामी का आकर्षक और बढ़ जाएगा। रोहित को मुम्बई इंडियंस ने 2024 आईपीएल सत्र में कप्तानी से हटा दिया था। ऐसे में माना जा रहा है कि वह इस बार नीलामी में उतर सकते हैं। टीम को 5 बार खिताब जिताने के बाद भी जिस प्रकार उन्हें हटाया गया उससे रोहित नाराज माने जा रहे हैं। हरभजन ने कहा कि अगर रोहित नीलामी के लिए अपना नाम देते हैं तो फ्रेंचाइजी को उनके लिए बोली लगाते देखना एक अच्छा अनुभव होगा। यह देखना दिलचस्प होगा कि मुंबई इंडियंस उन्हें रिटेन करती है या नहीं। अगर वह नीलामी पूल में प्रवेश करते हैं, तो वह बोली को विशेष बना देंगे, क्योंकि बहुत सी टीमें उनके नाम पर बोली लगाएंगी। मुम्बई के साथ तीन आईपीएल खिताब जीतने वाले भज्जी ने रोहित की जमकर प्रशंसा करते हुए कहा है कि उनमें अभी काफी क्रिकेट बचा है। उन्होंने कहा कि रोहित एक नेता और खिलाड़ी के रूप में काफी अच्छे हैं। वह एक उच्च गुणवत्ता वाले क्रिकेटर और एक मैच विजेता हैं। ऐसे में अगर रोहित नीलामी में उतरते हैं तो उन्हें मोटी रकम मिलेगी। नीलामी देखना रोमांचक होगा। रोहित को एक दशक पहले साल 2013 सत्र के बीच में मुंबई ने कप्तान बनाया तब रिकी पोंटिंग ने अपना पद छोड़ दिया था। रोहित ने पूरी तरह से फ्रेंचाइजी की किस्मत बदल दी और टूर्नामेंट के इतिहास में सबसे सफल कप्तानों में से एक बन गए। इस बीच, उन्होंने आईसीसी टी20 विश्व कप 2024 में भारत की राष्ट्रीय क्रिकेट टीम को सफलता दिलाई। अब देखना दिलचस्प होगा कि क्या मुंबई उन्हें 18वें सीजन से पहले रिलीज करता है या नहीं।

आईओए हमारे सुझावों पर ध्यान नहीं देता, खिलाड़ी आयोग की प्रमुख मैरीकोम ने कहा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) के खिलाड़ी आयोग की अध्यक्ष महान मुक्केबाज एमसी मैरीकोम ने कहा है कि उन्होंने राष्ट्रीय ओलंपिक समिति को सुझाव देना बंद कर दिया है क्योंकि उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया जाता। मैरीकोम उन 10 शीर्ष खिलाड़ियों में शामिल थीं जिन्हें नवंबर 2022 में आईओए खिलाड़ी आयोग में चुना गया था। आईओए में इस समय खींचतान चल रही है जिसमें पदाधिकारियों का एक वर्ग अध्यक्ष पीटी उषा के कामकाज के तरीके पर सवाल उठा रहा है। उषा ने हालांकि अपने खिलाफ सभी आरोपों से इनकार किया है।

आईओए में चल रहे सत्ता संघर्ष के बारे में पूछे जाने पर मैरीकोम ने पीटीआई से कहा, ''मैं आईओए के कामकाज में शामिल नहीं हूं। हमने आईओए के साथ कई बातें साझा की, लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं सुनी। वे मेरे सुझावों को नहीं सुनते। मैं राजनीति नहीं जानती और मैं किसी को दोष नहीं देना चाहती।'' भारतीय मुक्केबाज पेरिस ओलंपिक से पदक के बिना लौटे और मैरीकोम इस नतीजे से बेहद निराश थीं।

41 वर्षीय मैरीकोम ने अफसोस जताया कि ओलंपिक से पहले भारतीय मुक्केबाजी महासंघ में किसी ने उनकी मदद नहीं मांगी। उन्होंने कहा, ''मैं यह नहीं बता सकती कि क्या गलत हुआ क्योंकि उन्होंने मुझे आमंत्रित ही नहीं किया। वे मेरे अनुभव का इस्तेमाल कर सकते थे। मैं मुक्केबाजों को उनकी कमजोरियां और मजबूत पक्ष बता सकती हूं।'' लंदन ओलंपिक 2012 की कांस्य पदक विजेता मैरीकोम को लगता है कि जब तक कोचिंग संरचना में सुधार नहीं किया जाता तब तक पदक नियमित रूप से नहीं आएंगे।

विस चुनाव की तैयारियों को लेकर जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने की बैठक, दिये निर्देश

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

हजारीबाग : आगामी विधानसभा आम चुनाव 2024 की तैयारियों को लेकर जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त नैंसी सहाय की अध्यक्षता में बुधवार को गठित सभी कोषांगो के नोडल पदाधिकारीयों के साथ सभाकक्ष में बैठक की गईं। बैठक में कार्मिक कोषांग, प्रशिक्षण कार्यक्रम, ईवीएम प्रबंधन, मीडिया मॉनीटरिंग, कम्युनिकेशन प्लान, स्वीप प्लानिंग, आदर्श आचार संहिता, विधि व्यवस्था, एसएमएस मॉनिटरिंग एंड कम्युनिकेशन प्लान, परिवहन कोषांग, पोस्टल बैलेट कोषांग,मीडिया सेल समेत अन्य कोषांगों के दायित्व के निर्वहन और कर्तव्यों की विस्तृत जानकारी दी गई। उपायुक्त ने आगामी विधानसभा चुनाव 2024 के तहत सभी चुनावी प्रक्रियाओं को साफ-स्वच्छ, निष्पक्ष एवं निर्भीक होकर संपन्न कराने की बात कही। साथ ही उन्होंने कहा कि सभी पदाधिकारी से अपेक्षा की जाती है कि उन्हें मतदान केंद्र तक पहुंच मार्ग, मतदान केंद्रों का भौतिक सत्यापन, चुनावी प्रबंधन, मतदान प्रक्रिया, ईवीएम, वीवीपैट की कार्य प्रणाली,आदर्श आचार संहिता, मीडिया कोषांग की भूमिका, कानून व्यवस्था आदि का ज्ञान रहे। इसलिए सभी बातों को अच्छी तरह से समझ ले। बैठक में

उपायुक्त ने चुनाव के मद्देनजर गठित विभिन्न कोषांगों के वरीय पदाधिकारियों से विचार विमर्श किया तथा चुनाव को सफलतापूर्वक संपन्न कराने के उद्देश्य से जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने कार्मिक कोषांग को चुनाव के दौरान कार्य करने वाले पदाधिकारियों एवं कर्मियों से संबंधित डाटा बेस तैयार करने का निर्देश दिया। चुनाव के दौरान इस्तेमाल की जाने वाली सामग्रियों से संबंधित सूची जल्द से जल्द सामग्री कोषांग को उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया। इसके अलावे बैठक में उपायुक्त ने मतदान के समय मतदान कर्मियों को सेक्टर व बूथ तक पहुंचाने के लिए छोटी-बड़ी वाहनों का आकलन करते हुए वाहन की उपलब्धता सुनिश्चित करने का निर्देश संबंधित कोषांग पदाधिकारी को दिया। उपायुक्त ने कहा कि आगामी चुनाव को सफलतापूर्वक संपन्न कराने हेतु यह बहुत जरूरी है कि चुनाव में कार्य कर रहे अधिकारियों व कर्मियों को विभिन्न चरणों में प्रशिक्षण दिया जाए। इसके लिए उपायुक्त ने वरीय पदाधिकारी प्रशिक्षण कोषांग को कार्य योजना तैयार करते हुए प्रशिक्षण संबंधित आवश्यक दिशा निर्देश दिया।

चौपारण में लाखों रुपये नगद के साथ एक व्यक्ति गिरफ्तार

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

चौपारण : आचार संहिता लगते ही चौपारण सीओ संजय यादव व प्रभारी थाना प्रभारी पु अ नि बिंदेश्वरी मेहता द्वारा बड़ी कारवाई की गई। इस सम्बंध में प्रेस विज्ञप्ति जारी कर चौपारण पुलिस ने बताया कि आगामी झारखण्ड विधानसभा चुनाव 2024 के मद्देनजर आदर्श आचार सहिता के दौरान दिनांक-16/10/24 को समय करीब 08.30 बजे चौपारण थाना गेट के सामने अंचल अधिकारी संजय कुमार यादव चौपारण एंव प्रभारी थाना प्रभारी पुअनि बिन्देश्वर महतो एंव अन्य बलो के साथ सयुंक्त वाहन चेकिंग के दौरान महारानी बस सं बीआर 02 पी सी -0351 में एक व्यक्ति के पास से एक बैग में रखे थैला से कुल नगद राशि कुल 6,22,970/-(छः लाख बाईस हजार नौ सौ सतर रु) बरामद हुआ। जाँच करने पर पकड़ाये व्यक्ति कमलेश प्रसाद शर्मा पिता-गया प्रसाद शर्मा पता-बरन्डी थाना बाराचट्टी जिला गया बिहार द्वारा सही जानकारी एंव कैश से संबधित कोई कागजात प्रस्तुत नहीं किया गया। तत्पश्चात वरीय पदाधिकारी एंव एफ० एस० टी० टीम के दण्डाधिकारी प्रदीप कुमार पासवान को सूचित किया गया, जिनके द्वारा विधिवत बरामद राशि का जप्ती सूची बनाकर जप्त किया गया। जप्त रुपए एंव पकड़े गये व्यक्ति को अग्रतर कार्रवाई हेतु एफ० एस० टी० टीम के दण्डाधिकारी को सौंपा गया।

संक्षिप्त समाचार

विधानसभा चुनाव की घोषणा होते ही कई प्रत्याशियों की हुई धड़कने तेज

चरही : झारखंड में विधानसभा चुनाव की घोषणा होते ही चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशियों की धड़कने तेज हो गई है। मांडू विधानसभा में दूसरी चरण में यानी कि 20 नवंबर चुनाव की तारीख का घोषणा किया गया है। 28 नवंबर को चुनाव का मतगणना होना है , जिसको लेकर राज्य में आचार संहिता लागू हो गया है। इधर सत्ता दल या विपक्ष अपने-अपने तैयारी में जुट गये है, प्रत्याशियों की सीट कंफर्म करने के लिए कोशिश लगातार जारी है , क्षेत्र के विभिन्न जगहों पर चुनावी चर्चा लगभग सभी के लबों पर है, जो डमी कैंडिडेट है वो क्षेत्र में झूठे आशवासन और लंबे-लंबे सपना दिखाकर कई मतदाता लोगों को भ्रमित करने का काम किया जा रहा है। इधर मांडू विधानसभा क्षेत्र में कई वर्षों से विधायक रहे क्षेत्र में उपलब्धियां बताने के लिए घूम रहे हैं। इस चुनाव में कई नयें चेहरे को देखने को मिल रहा है, उन लोगों का भी सोच होगा कि बहती गांगा में डुबकी लगाने का मनसा साफ झलक रहा है।

कांग्रेस नेता डॉ आरसी मेहता ने किया सदर प्रखण्ड का दौरा

हजारीबाग : सदर विधानसभा के कांग्रेस नेता सह उप विजेता डॉ आरसी मेहता के नेतृत्व में कांग्रेस कार्यकताओं के साथ सदर प्रखंड के डेमोटांड़, मोरांगी, हत्यारी इत्यादि दर्जनों गांवों में जनसंपर्क अभियान चलाया। क्षेत्र भ्रमण के दौरान डॉ मेहता ने कहा की झारखंड सरकार गरीबों एवं आदिवासी मूलवासी झारखंडियों सरकार है। झारखंड सरकार ने महिलाओं के आत्मनिर्भरता हेतु मइयां सम्मान योजना का शुरूआत किए हैं, जो पूरे भारत में चर्चित है। बच्चियों के पढाई के लिए 6000 सालाना जिससे देश का बहुचर्चित अब वह आवाज जिसे अन्य राज्य अनुकरण कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त अन्य कई झारखंड सरकार द्वारा लाभकारी योजना चलाया जा रहा है। क्षेत्र के जनसंपर्क में डॉ० मेहता के साथ कई कांग्रेसी जन शामिल रहे।

महिलाओं ने मेहन्दी लगाकर मतदान को लेकर चलाया जागरूकता अभियान

चौपारण : विधानसभा चुनाव की घोषणा होते ही मतदान प्रतिशत बढ़ाने को लेकर महिलाएं भी बढ़चढ़कर भाग ले रही है। इसी क्रम में चौपारण की महिला ने मेहन्दी लगाकर मतदान को लेकर जागरूकता अभियान चलाया गया। चौपारण में कुल 136711 मतदाताओं की संख्या है ,जिसमें पुरूष 70249 मतदाता और महिला 64828 मतदाता की है। मतदाताओं को जागरूक करने के लिए महिलाओं ने अपने हाथों में मेहंदी और रंगोली सजाकर मतदाता जागरूकता का संदेश दिया। इस अवसर पर लोगों को अपने मताधिकार का प्रयोग करने की शपथ दिलाई गई। साथ ही महिलाओ द्वारा आकर्षक रंगोली बनाकर मतदाता जागरूकता का संदेश दिया। शपथ के मौके पर रिंकू देवी, खुशबू कुमारी, पिंकी देवी, ज्योति देवी इत्यादि कई महिलाएं उपस्थित हुई।

आजसू पार्टी के जिला यूथ सचिव बने किशून महतो, किया गया भव्य स्वागत

चरही : आजसू पार्टी हजारीबाग के जिला यूथ सचिव किशुन महतो को नियुक्त किया गया है। वे हजारीबाग के ग्राम कारूखाप, प्रखंड चुरचू - जिला हजारीबाग निवासी हैं , इन्हें प्रदेश कमिटी के निर्देश अनुसार 15 नवम्बर को जिला अध्यक्ष परमेश्वर महतो ने लिखित रूप से मनोनीत किया है। श्री महतो ने कहा है कि हजारीबाग जिला यूथ सचिव का जो पद दिया गया है यह पार्टी द्वारा बड़ी जिम्मेदारी दिया गया है । अभी वर्तमान में चुनाव को देखते हुए पार्टी के कार्यकताओं से मिलकर पार्टी की सदस्यता को और आगे बढ़ाना है ताकि इससे इस चुनाव में प्रत्याशियों के लिए सहायता मिले। इधर नव नियुक्त जिला यूथ सचिव किशून महतो को चरही पहुंचने पर कार्यकताओं के द्वारा फूल माला पहनाकर भव्य स्वागत किया गया।

राजनीतिक दलों को 24 घण्टे के अंदर बैनर-पोस्टर हटाने का निर्देश

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

चौपारण : राजनीतिक पाटीयों को 24 घण्टे के अंदर बैनर पोस्टर हटाने का निर्देश प्रखण्ड विकास पदाधिकारी सह निर्वाचन पदाधिकारी ने दी है। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी ने प्रखण्ड अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी, प्रखण्ड अध्यक्ष, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी, प्रखण्ड अध्यक्ष, झारखण्ड मुक्ति मोर्चा पार्टी, प्रखण्ड अध्यक्ष, आम आदमी पार्टी, अन्य सभी राजनीतिक पार्टी के प्रखण्ड अध्यक्ष, चौपारण को पत्र लिखकर निर्देश दी है। प्रासंगिक पत्र के आलोक में कहा गया है कि विधान सभा आम निर्वाचन 2024 हेतु निर्वाचन की घोषणा के साथ ही चौपारण प्रखण्ड अंतर्गत दिनांक 15.10.2024 से आदर्श आचार संहिता प्रभावी हो गयी है। इस संबंध में आयोग से प्राप्त निर्देश के आलोक में चौपारण प्रखण्ड क्षेत्रांतर्गत सार्वजनिक एवं निजी संस्थानों तथा अन्य सार्वजनिक स्थान यथा बस स्टैण्ड, रोड, पुल, पिलर, बिजली/टेलीफोन के पोल, पेट्रोल पंप, एम्बुलेंस इत्यादि स्थानों से अपने-अपने राजनीतिक पार्टी से संबंधित पोस्टर, बैनर, दिवार लेखन, होर्डिंग, फ्लैक्स, पोलटीसीएन की फोटो, नाम आदि 24 घण्टे के भीतर हटाना / मिटाना/ कवर करने को कहा गया है। तय समय सीमा के बाद यदि आपके राजनीतिक पार्टी से संबंधित पोस्टर, बैनर, दिवार लेखन, होर्डिंग, फ्लैक्स, पोलटीसीएन की फोटो, नाम आदि पाये जाने पर आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन के सुसंगत धाराओं के अनुरूप कानूनी कार्रवाई की जायेगी।

युवा कांग्रेस जिलाध्यक्ष प्रकाश यादव ने कुलपति से की मुलाकात

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

हजारीबाग : युवा कांग्रेस के हजारीबाग जिलाध्यक्ष प्रकाश यादव ने विनोबा भावे विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलपति डॉ पवन कुमार पोद्दार से बुधवार को औपचारिक मुलाकात किया । इस दौरान उन्होंने विश्वविद्यालय से जुड़े विभिन्न शैक्षणिक एवं प्रशासनिक मुद्दों पर चर्चा की। प्रकाश यादव ने कुलपति को अवगत कराया कि विश्वविद्यालय प्रशासन ने आचार संहिता उल्लंघन करते हुए, पांच शिक्षकों का अचानक स्थानांतरण करने का आदेश जारी कर दिया जो उचित नहीं है। तीन पीजी विभाग के विभागाध्यक्ष राजनीति शास्त्र के विभागाध्यक्ष के डॉ सुकल्याण मोइत्रा, इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ विकास कुमार, हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष सह शिक्षक संघ के अध्यक्ष के के गुप्ता , सहायक प्राध्यापक डॉ सुबोध सिंह शिव गीत, सहायक प्राध्यापक डॉ गंगा नाथ झा , का स्थानांतरण होने से विश्वविद्यालय की शैक्षणिक माहौल पर असर पड़ेगा। उन्होंने कहा कि यह स्थानांतरण न केवल आचार संहिता का उल्लंघन है, बल्कि इससे शैक्षणिक व्यवस्था पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसकी शिकायत युवा कांग्रेस द्वारा चुनाव आयोग से की जाएगी। यादव ने विश्वविद्यालय के कुछ पदाधिकारियों पर भ्रष्टाचार में लिप्त होने के गंभीर आरोप लगाए। पदाधिकारियों की मिलीभगत से विश्वविद्यालय को लूटा जा रहा है। कुलपति से इन आरोपों की गहन जांच कर उचित कार्रवाई की मांग की। विश्वविद्यालय प्रशासन और गार्ड सेवाओं पर कई गंभीर सवाल खड़े किये हैं। गार्ड सर्विस के नाम पर विश्वविद्यालय में छल किया जा रहा है। विश्वविद्यालय हर महीने सिक्योरिटी गार्ड सेवाओं पर लगभग 25 लाख रुपये खर्च कर रही है पहले 65 गार्ड रहते थे अब 11 और अचानक बढा दिया गया । यादव ने इस मामले में जांच कराने की मांग की और सेवा में सुधार की मांग की ताकि छात्रों और कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। भ्रष्टाचार पर आवाज को बुलंद करने वाले शिक्षकों का स्थानांतरण वापस नहीं होने पर विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा बड़ा आंदोलन किया जाएगा। मौके पर एलुमनाई एसोसिएशन के सचिव डॉ सनी कुमार मेहता, डॉ अभिमन्यु झारखंड छात्र मोर्चा से सुनील कुमार आदि उपस्थित थे।

जी अनमोल पर अजगजंतरम का वर्ल्ड टीवी प्रीमियर

हजारीबाग : दिल छू लेने वाली कहानियां पेश करने के लिए मशहूर जी अनमोल पर अजगजंतरम का वर्ल्ड टेलीविजन प्रीमियर पेश करने जा रहा है। यह एक ऐसी फिल्म है जो इंसानी जज्बातों को पूरी सच्चाई से दिखाती है। एक चहल-पहल भरे गांव के त्यौहार की पृष्ठभूमि में सेट की गई यह फिल्म दर्शकों की भावनाओं के उतार-चढ़ाव भरे सफर पर ले जाती है।

ऋत्विक कंपनी की मनमानी, चट्टी बरियातू पचड़ा मुख्य सड़क से लोगों का संपर्क काटा

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

केरेडारी : एनटीपीसी केरेडारी कोल माइंस के एमडीओ कंपनी ऋत्विक की पर विस्थापित प्रभावित क्षेत्र के लोगों ने सवाल उठाया है! ऋत्विक कंपनी द्वारा बगैर वैकल्पिक रास्ता का निर्माण के हीं पचड़ा नौवखाप मुख्य सड़क को काट दिया जिस कारण पचड़ा पंचायत और नौवा खाप गांव के हजारों लोगों का प्रखंड मुख्यालय और जिला मुख्यालय से संपर्क कट गया है! घटना बीते रात की है, उक्त घटना से संबंधित क्षेत्र के लोगों में एमडीओ कंपनी के ऊपर भारी आक्रोश पनप उठा हैं! उक्त सड़क पर सफर करने वाले राहगीरों और स्थानीय लोगों ने बताया कि चट्टी बरियातू पचड़ा सड़क को ऋत्विक कंपनी द्वारा बीते रात काट दिया गया है! जिस कारण पचड़ा पंचायत व सिमरिया प्रखंड क्षेत्र आवागमन का सुगम मार्ग बाधित हो गया है! संबंधित क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों ने पूर्व मंत्री योगेंद्र साव के उपस्थिति में चट्टी बरियातू कोल माइंस का माइनिंग और कोल ट्रांसपोर्टिंग कार्य को पूर्ण रूप से बंद करा दिया है! घटना की सूचना पर सदर एसडीओ अशोक कुमार व केरेडारी सीओ रामरतन कुमार वर्णवाल ने भी काटे गए सड़क को पहुंच कर जायजा लिए!

चुनाव को लेकर बैठक, राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि हुए शामिल

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

विष्णुगढ़ : मंगलवार को चुनाव आयोग द्वारा राज्य विधानसभा चुनावों की तिथि घोषित किये जाने के बाद इससे जुड़े सरकारी महकमों की सक्रियता बढ़ गयी है। इसी के मद्देनजर प्रखंड सह अंचल कार्यालय में बुधवार को सहायक निर्वाचक निबंधक सह अंचल अधिकारी नित्यानंद दास के द्वारा बैठक बुलाई गई। बैठक में प्रखंड विकास पदाधिकारी अखिलेश कुमार, पुलिस अवर निरीक्षक सागेन मुर्मू तथा जेएमएम, भाजपा, कांग्रेस, सीपीआई (माले) के प्रतिनिधि शरीक रहे।इनमें भाजपा के किशोर कुमार मंडल, सुशील कुमार महतो, कांग्रेस के अब्बास अंसारी, रामजन्म राय व माले के घनश्याम पाठक समेत अन्य शामिल थे।

एसबीआई ने जीवन ज्योति बीमा के क्लेम के तहत सुदामा देवी को दिया 2 लाख का चेक

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

टाटीझरिया : टाटीझरिया प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत झरपो एसबीआई के शाखा प्रबंधक विवेक कुमार ने प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा का क्लेम राशि मृतिका की बेटी सुदामा देवी को 2 लाख का चेक दिया। बता दे कि टाटीझरिया प्रखंड खैरा पंचायत सिमराढाव निवासी मो चंदवा देवी पति स्व काली सिंह का खाता सीएसपी चंदन कुमार के पास खोला था जिसका एसबीआई द्वारा 436 रुपया का प्रधानमंत्री जीवन बीमा किया गया। कुछ माह पहले चंदवा देवी की प्रति मृत्यु हो गई उसका कोई बेटा नहीं था सिर्फ बेटी थी।बेटी का विवाह चुरचू प्रखंड के नगड़ी गांव में हुआ है शाखा प्रबंधक विवेक कुमार ने चुरचू से बुलवाकर मृतिका की बेटी सुदामा देवी पति दीपनारायण सिंह को बीमा का क्लेम राशि 2 लाख रुपया का चेक दिया शाखा प्रबंधक विवेक कुमार ने बताया कि हर खाताधारक को प्रधानमंत्री ज्योति बीमा बैंक में करवाना चाहिए बीमा करवाने से गरीब परिवार को भविष्य में घर परिवार को बहुत ही मदद हो जाती है बीमा हर खाताधारक को करवाना चाहिए। इस अवसर पर बैंक सखी हेमंती देवी, एकाउंटेंट एम एस मुंडा, क्षेत्रीय प्रबंधक संदीप कुमार सौरभ ,शशि किरण सिंहा,रंजीत कुमार ,आशीष कुमार ,चंदन कुमार , छोटन शर्मा सहित बैंक कर्मी उपस्थित थे।

भाकपा का जिला सम्मेलन संपन्न, मीरा अध्यक्ष और सुनीता बनी सचिव

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

हजारीबाग : भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी जिला इकाई का जिला सम्मेलन मंजूर भवन सीपीआई कार्यालय में हुआ। जहां 21 सदस्यीय महिला मोर्चा का गठन किया गया। जिसमें मीरा देवी को सर्वसम्मति से अध्यक्ष रीता देवी और बिंदु देवी को उपाध्यक्ष, सुनीता कछ्यप को सचिव, मुन्नी देवी को सहसचिव बनाया गया। सम्मेलन का मुख्य अतिथि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के वरिष्ठ नेता सह हजारीबाग के पूर्व सांसद भुवनेश्वर प्रसाद मेहता थे। भुवनेश्वर प्रसाद मेहता ने संबोधन में कहा कि आज देश में महिलाओं के ऊपर कई प्रकार की प्रताड़ना, बलात्कार हत्या किया जा रहा है। इससे लड़ने के लिए महिलाओं को खुद अपने आप में सशक्त होकर एकजुट होकर मुकाबला करना होगा। साथ ही देश की आधी आबादी भी महिलाओं का है, और पुरुषों की तरह महिला भी सरकारी एवं गैर सरकारी सभी विभागों में काम कर रही है। सभी महिलाओं को शिक्षा और समाज की ओर एवं राजनीति की ओर अग्रसर होकर एकजुट होकर संघर्ष करना चाहिए। आज भी महिलाएं रेल में वायु सेवा में थल सेना में एवं सभी सरकारी नौकरियों में भी भागीदारी देकर नौकरी कर रही है। वहीं अंधविश्वास में भी महिलाओं को प्रताड़ित किया जा रहा है। इससे अलग हटकर सभी को एकजुट होना होगा। साथ ही साथ विधायक एवं सांसद के चुनाव में भी महिलाओं की भागीदारी होनी चाहिए, और जनसंख्या के आधार पर आधे आबादी महिलाओं का भी आरक्षण मिलना चाहिए। मौके पर इंद्रमणि देवी, सोनिया देवी, सुनीता कच्छप,रीता देवी, बिंदु देवी, आशा देवी, उर्मिला देवी, पोखनी देवी, मुन्नी देवी, शाहिना खातून, अनवरी खातून, सीता देवी, गुड़िया देवी, मंजू गौतम सहित सैकड़ो महिलाएं शामिल थी।

बैंक ऑफ इंडिया ने ग्राहकों के लिए किया ग्राम सभा का आयोजन

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

हजारीबाग : बैंक ऑफ इंडिया सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत ग्राहकों को जागरूक करने के लिए लगातार ग्राम सभा आयोजन कर रही है। इसी क्रम में बैंक ऑफ इंडिया प्रधान कार्यालय सतर्कता विभाग के दिशानिर्देश पर 14 अक्टूबर को हजारीबाग अंचल में आंचलिक प्रबंधक नरेन्द्र कुमार की अध्यक्षता में विभिन्न शाखाओं में ग्राम सभा का आयोजन किया गया। उन्होंने ग्राहकों को संबोधित करते हुए कहा कि, बैंक ऑफ इंडिया ग्राहकों को बेहतर सेवा देने के लिए कटिबद्ध है। साथ ही अंचल के विभिन्न शाखाओं के द्वारा ग्राहकों के लिए सतर्कता एवं जागरूकता से जुड़ा अभियान समय-समय पर चलाया जाता रहेगा।
इसी क्रम में हजारीबाग अंचल के सतर्कता अधिकारी मुकुन्द झा ने मंगुरा शाखा का दौरा किया। शाखा प्रबंधक विवेक दीक्षित एंव मुकुन्द झा ने ग्राम पंचायत मंगुरा में ग्राहकों को संबोधित किया और ग्राहकों को धोखाधड़ी से बचने के उपायों के उपर विस्तृत जानकारी दी। साथ ही लुन्दरू मध्य विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए भ्रष्टाचार समस्या एवं निदान के उपर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया एवं विजेताओं को बैंक ऑफ इंडिया के अधिकारियों के द्वारा पुरस्कृत किया गया। अंचल के विभिन्न शाखाओं के द्वारा ग्राहकों को वर्तमान में बैंकिंग क्षेत्र के धोखाधड़ी से बचने के लिए अपनाई जाने वाली सावधानियों एंव बैंक के योजनाओं के बारे में अवगत कराया गया। उम्मीद है कि, बैंक ऑफ इंडिया द्वारा चलाए जा रहे सतर्कता कार्यक्रमों के कारण आम ग्राहकों के बीच विश्वास एंव जागरूकता बढ़ेगी एंव बैंकिंग धोखाधड़ी में कमी आएगी।

सांसद के करीबी के घर पर अज्ञात अपराधियों का हमला

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

महुदा : धनबाद सांसद ढुल्लू महतो के करीबी, कांड्रा पंचायत के मुखिया और भाजपा के जिला महामंत्री धनेश्वर महतो के महुदा मोड़ स्थित घर में मंगलवार रात कई अपराधियों ने प्रवेश किया और डकैती का प्रयास किया। जब घर के अंदर सो रहे पूर्व मुखिया धनेश्वर महतो ने आवाज सुनी, तो उन्होंने बाहर आकर देखा कि कई नकाबपोश अपराधी हथियार लेकर घर में घुस आए हैं। उन्होंने तुरंत अपने कमरे का दरवाजा अंदर से बंद कर दिया और पुलिस को सूचित किया। सूचना मिलने के लगभग दस मिनट बाद थाना प्रभारी धीरज कुमार अपनी टीम के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। पुलिस के पहुंचने पर अपराधी दीवार फांद कर भाग गए। थाना प्रभारी ने घर के चारों तरफ जांच की लेकिन कुछ नहीं मिला। पूरी घटना सीसीटीवी में कैद हो गई है। वहीं, सूचना मिलते ही धनबाद सांसद ढुल्लू महतो और उनके प्रतिनिधि शत्रुघ्न महतो भी मौके पर पहुंचे और घटना की जानकारी ली। सांसद ने एसपी धनबाद से फोन पर बात कर अपराधियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग की। यह घटना मंगलवार रात एक बजे की बताई जा रही है।

प्रदेश में डबल इंजन की सरकार होने से विकास तेजी से होता है : मेघवाल

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

धनबाद : भारत के कानून और न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल बुधवार को धनबाद में भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा की बैठक और प्रबुद्ध नागरिक सम्मेलन में शामिल हुए। उन्होंने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि भाजपा चुनावों में गुड गवर्नेन्स और विकास के दो मुख्य एजेंडे के साथ आगे बढ़ती है। उन्होंने यह भी बताया कि जहां डबल इंजन की सरकार होती है, वहां विकास की गति बढ़ती है और अच्छे शासन की स्थिति भी बेहतर होती है। मौजूदा समय में महाराष्ट्र और झारखण्ड में चुनाव हो रहे हैं, और उन्होंने जनता से आग्रह किया कि यदि वे असली विकास चाहते हैं, तो डबल इंजन की सरकार का समर्थन करें। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि जहां डबल इंजन की सरकार नहीं होती, वहां विकास ठप हो जाता है और केंद्र से आने वाले फंड का दुरुपयोग शुरू होता है। झारखण्ड सरकार ने पेंशन योजनाएं बंद कर 'मंइयां सम्मान योजना' लाने का निर्णय लिया है। एक प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि संभवतः मंइयां सम्मान योजना में फंड का दुरुपयोग हुआ हो। उन्होंने यह भी भरोसा दिया कि भाजपा की 'गोगो दीदी योजना' में ऐसा नहीं होगा, और उनकी सरकार बनने पर इस योजना के लिए उचित फंड की व्यवस्था की जाएगी। इसके अलावा, उन्होंने कहा कि यदि उनकी सरकार झारखण्ड में बनती है, तो कोयला चोरी पर नियंत्रण पाया जाएगा और कोयले का उत्पादन भी बढ़ेगा।

ऊर्जा मित्र संघ की महाप्रबंधक और मुख्य अभियंता से हुई सकारात्मक वार्ता

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

धनबाद : झारखंड राज्य ऊर्जा मित्र संघ की बैठक महाप्रबंधक और मुख्य अभियंता के कार्यालय में हुई। इस चर्चा का मुख्य उद्देश्य ऊर्जा मित्रों के बकाया भुगतान, पहचान पत्र, रेट कॉन्ट्रैक्ट और अन्य संबंधित मुद्दों पर विचार करना था। ऊर्जा मित्र संघ के संरक्षक बैभव सिन्हा और संतोष कुशवाहा ने दो दिनों के भीतर बाकी मानदेय का भुगतान, बिलिंग एजेंसी से पहचान पत्र जारी करने, और सभी ऊर्जा मित्रों को रेट कॉन्ट्रैक्ट उपलब्ध कराने की मांग की। उन्होंने कार्य स्थिरता और बेहतर कार्य स्थितियों पर भी बातचीत की। बैठक में सहमति बनी कि 16 अक्टूबर 2024 तक सभी ऊर्जा मित्रों के मानदेय का भुगतान कर दिया जाएगा, और अगले 15 दिनों में पहचान पत्र और रेट कॉन्ट्रैक्ट प्रदान किया जाएगा। इसके अलावा, बिलिंग एजेंसी अगले महीने तक कार्य अनुबंध में सभी सुविधाएं भी मुहैया कराएगी। वैभव सिन्हा ने कहा कि ऊर्जा मित्रों के अधिकारों की रक्षा हर हाल में की जाएगी, और संतोष कुशवाहा ने चेतावनी दी कि यदि कल तक भुगतान नहीं हुआ, तो हड़ताल जारी रहेगी। महाप्रबंधक ने सभी ऊर्जा मित्रों के हितों की सुरक्षा के लिए आवश्यक कदम उठाने और संघ की मांगों को पूरा करने का वादा किया। यह वार्ता सौहार्दपूर्ण माहौल में हुई, और सभी पक्षों ने मिलकर समस्याओं के समाधान के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। इस बैठक में प्रमुख रूप से महाप्रबंधक अशोक कुमार सिंह, सीएनआर प्रभाकर कुमार, अधीक्षण अभियंता एस के कश्यप, और ऊर्जा मित्र संघ के सदस्य उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

स्वांग कोलियरी में कोयला चोरी पर बीटीपीएस पुलिस और सुरक्षा विभाग की छापेमारी

कथारा : सीसीएल के कथारा क्षेत्र स्थित स्वांग कोलियरी में मंगलवार देर रात कोयला चोरी के विरुद्ध बीटीपीएस पुलिस और क्षेत्रीय सुरक्षा विभाग ने संयुक्त रूप से छापामारी अभियान चलाया. इस अभियान में 4 मोटरसाइकिल और 16 साइकिलें जब्त की गईं, जिन्हें मौके पर ही क्षतिग्रस्त कर दिया गया.कथारा क्षेत्रीय सुरक्षा पदाधिकारी सुनील कुमार गुप्ता ने बताया कि यह छापामारी अभियान सीसीएल कथारा क्षेत्र के महाप्रबंधक के निर्देश पर संचालित किया गया. अभियान का नेतृत्व क्षेत्रीय सुरक्षा पदाधिकारी ने किया, जिसमें बोकारो थर्मल थाना के पुलिस प्रशासन, क्षेत्रीय गश्ती दल, और स्वांग कोलियरी गश्ती दल की संयुक्त भागीदारी रही.अभियान के दौरान गश्ती दल को देखकर कोयला चोर मौके से फरार हो गए. बरामद कोयला को स्वांग कोलियरी के स्टॉक में वापस गिरा दिया गया, जिसका अनुमानित वजन लगभग 3.5 टन है.इस कार्रवाई से कोलियरी में सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने और कोयला चोरी पर लगाम लगाने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति होने की उम्मीद है।

पीके रॉय कॉलेज के संस्थापक के इकलौते बेटे प्रो.बिद्युत कुमार रॉय के निधन पर शोक

धनबाद : पीके रॉय कॉलेज के संस्थापक भोला नाथ रॉय के इकलौते बेटे प्रोफेसर बिद्युत कुमार रॉय का निधन हो गया, जिससे धनबाद में शोक की लहर दौड़ गई है। प्रो. रॉय ने अपनी अंतिम सांस धनबाद के 99 साल पुराने पारिवारिक निवास रॉय विला में ली। उनकी अंतिम यात्रा आज हिरापुर के पी.के. रॉय रोड से शुरू हुई।वह पी.के. रॉय कॉलेज में जूलॉजी के प्रोफेसर थे और अपने करियर में कभी किसी छात्र से ट्यूशन फीस नहीं ली। वह छात्रों के पसंदीदा प्रोफेसर रहे, और उनके कई शिष्य आज भारत के विभिन्न उच्च संस्थानों में देश की सेवा कर रहे हैं। उनका इलाज भी उनके छात्रों द्वारा किया गया था।प्रो. रॉय ने अपनी पत्नी और दो बेटों को पीछे छोड़ दिया है। उनके छोटे बेटे ने 36 देशों में भारत का प्रतिनिधित्व किया है और वर्तमान में डिजिटल इंडिया के साइंटिफिक एडवाइजर के रूप में कार्यरत हैं। उनके परिवार में भी शोक का माहौल है।

रेखा देवी मौत मामले में पुलिस ने गैर इरादतन हत्या का मामला किया दर्ज

बाघमारा : बाघमारा थाना क्षेत्र में हरिणा-गोमो रोड पर स्थित मंडल क्लीनिक के एक प्राइवेट प्रैक्टिशनर के खिलाफ रेखा देवी की मृत्यु के मामले में पुलिस ने भारतीय दंड संहिता के तहत गैर इरादतन हत्या का मामला दर्ज किया है। मृतका के बेटे रोहित कुमार दास ने बाघमारा पुलिस को एक लिखित शिकायत सौंपी थी। रोहित के आरोप के अनुसार, उनकी माँ रेखा देवी को बवासीर के दर्द के चलते मंडल मेडिकल में भर्ती कराया गया था। प्रैक्टिशनर एनके मंडल ने ऑपरेशन के दौरान अत्यधिक मात्रा में दवा और इंजेक्शन देकर लापरवाही दिखाई, जिसके कारण ऑपरेशन के बाद वह कई घंटों तक बेहोश रहीं। स्थिति बिगड़ने पर एनके मंडल ने इलाज को बंद कर दिया और वहां से भाग गया। इसके बाद रेखा देवी को कतरास के नर्सिंग होम ले जाया गया, जहां चिकित्सक ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

सिल्वर मेडल विजेताओं को बोकारो थर्मल पहुंचने पर किया गया सम्मानित

बोकारो थर्मल: झारखंड के रजरप्पा स्टेडियम में आयोजित दो दिवसीय 18वीं झारखंड राज्य जूनियर एथलेटिक्स चैंपियनशिप में बोकारो थर्मल का शानदार प्रदर्शन रहा जिसमें ममता कुमारी भाला फेक में द्वितीय स्थान प्राप्त कर सिल्वर मेडल हासिल की। माही कुमारी वर्ग 14 में ट्रायथलॉन में तृतीय स्थान प्राप्त कर ब्रोंज मेडल हासिल की। मुस्कान कुमारी 20 वर्ग में 5000 में तृतीय स्थान प्राप्त कर ब्रॉन्ज मेडल हासिल की। बैजनाथ राम वर्ग 16 में लंबी कूद में सिल्वर मेडल हासिल किया। मिलीं उपलब्धि से बोकारो थर्मल डी बी सी के उप महाप्रबंधक बीजी होलकर विवेकानंद स्टेडियम पहुंचकर सभी मेडल विजेता खिलाड़ियों को गर्मजोशी से स्वागत करते हुए सभी विजेता खिलाडियों को मिठाई खिलाकर बच्चों को उज्जवल भविष्य की कामनाएं करते हुए बधाई दिए। इस अवसर पर आशीष रंजन ,राजू प्रजापति मनोज कुमार यादव, कोच शिबू प्रजापति ने बधाई देते हुए सभी बच्चों को उज्जवल भविष्य की कामनाएं की।

खाद्यान्न संकट व उपाय विषय पर एकदिवसीय सेमिनार आयोजित

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

कथारा: बुधवार को राष्ट्रीय सेवा योजना (एन एस एस) एवं आई क्यू ए सी के संयुक्त तत्वावधान में विश्व खाद्य दिवस के अवसर पर बढ़ती जनसंख्या, खाद्यान्न संकट एवं उपाय विषय पर एकदिवसीय सेमिनार का आयोजन प्राचार्य लक्ष्मी नारायण की अध्यक्षता में जंतु शास्त्र सभागार में दीप प्रज्वलित करके किया गया।

प्राचार्य लक्ष्मी नारायण ने कहा विश्व खाद्य दिवस भूखों के लिए खाद्य सुरक्षा व पौष्टिक आहार की आवश्यकता सुनिश्चित कर जागरूकता फैलाने का कार्य किया जाता है।

प्रो इंचार्ज प्रो गोपाल प्रजापति ने कहा भोजन एक बुनियादी व मौलिक मानव अधिकार है। विश्व खाद्य दिवस के अवसर पर संकल्प लेने की जरूरत है कि खाद्यान्न संकट की कमी मानव जाति को न हो पाए।

डा अरुण कुमार रॉय महतो ने कहा यह दिवस महिलाओं और बच्चों को कुपोषण से मुक्ति और एक स्वस्थ भविष्य सुनिश्चित करने के लिए लोगों को जागरूक बनाना है। संतुलित भोज्य पदार्थ अच्छी सेहत के लिए अनिवार्य है।

कार्यक्रम पदाधिकारी एन एस एस डा प्रभाकर कुमार ने कहा किसी भी विकासशील देश के लिए विश्व खाद्य दिवस एक महत्वपूर्ण दिवस है। महत्वपूर्ण इसलिए है कि खाद्य व जनसंख्या के बीच संतुलन ही देश के सही विकास का ग्राफ तय करते हैं।

डा शशि कुमार ने कहा कि विश्व की जनसंख्या में हो रही निरंतर वृद्धि व खाद्य पदार्थों के सीमित भंडार को देखते हुए खाद्यान्य उत्पादन बढ़ाने की जरूरत हर देश शिद्दत से महसूस कर रहा है। मोटे अनाज स्वास्थ्य दृष्टिकोण से लाभकारी है।

एन एस एस के स्वयं सेवकों ने पोस्टर, स्लोगन, भाषण, निबंध के माध्यम से संदेश देने का कार्य किया जिनमें जागृति कुमारी, मिलन कुमार गुप्ता, शहजादी सहगूफा, सुप्रिया कुमारी, आरती कुमारी, सोनू कुमार शर्मा, निधि कुमारी, आकांछा अग्रवाल, अमित कुमार, सुमीत कुमार सिंह आदि रहे। इन्होंने संकल्प लिया कि हम सभी जंक फूड्स, पैकेट्स सामग्री से दूर रहेंगे, संतुलित भोज्य पदार्थों का सेवन करेंगे और अपना स्वास्थ्य अच्छा रखेंगे और समाज में संदेश भी देने का कार्य करेंगे।

मंच संचालन डा प्रभाकर कुमार, धन्यवाद ज्ञापन डा अरुण रंजन ने किया।

ईसीआरकेयू की चुनाव प्रचार समिति ने की बैठक

धनबाद : ईस्ट सेंटर रेलवे कर्मचारी यूनियन की चुनाव प्रचार समिति की बैठक धनबाद शाखा एक में हुई, जिसमें आगामी 4, 5 और 6 दिसंबर को होने वाले चुनाव पर चर्चा की गई। बैठक में निर्णय लिया गया कि तीनों शाखाएँ मिलकर धनबाद क्षेत्र में चुनाव का प्रचार करेंगी। यूनियन के मीडिया प्रभारी एनके खवाश ने बताया कि इसके तहत 17 अक्टूबर, बृहस्पतिवार को सुबह 8:30 बजे क्वहह-1 धनबाद में और 18 तारीख, शुक्रवार को शाम 6:00 बजे क्रू लॉबी धनबाद में ईसीआरकेयू द्वारा जनसंपर्क अभियान शुरू किया जाएगा।

जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने की राजनीतिक दलों के साथ बैठक

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

धनबाद : जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त माधवी मिश्रा ने बुधवार को समाहरणालय में राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक की। इस दौरान आदर्श आचार संहिता, चुनावी खर्च सहित अन्य बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की गई।उपायुक्त ने कहा कि विधानसभा चुनाव 2024 की घोषणा होने के साथ ही आदर्श आचार संहिता के साथ-साथ जिले में भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 163 के तहत निषेधाज्ञा भी लागू है। उन्होंने कहा अब हर कार्यक्रम के आयोजन के लिए राजनीतिक दल को सुविधा पोर्टल पर अनुमति लेना अनिवार्य है। इसके लिए सुविधा पोर्टल पर आसानी से ऑनलाइन आवेदन देकर अनुमति प्राप्त कर सकते हैं। हर कार्यक्रम में वीडियो सर्विलेंस टीम मौजूद रहेगी।उपायुक्त ने कहा कि चुनाव के दौरान किए गए खर्च की सही जानकारी सभी प्रत्याशी व्यय कोषांग को उपलब्ध कराएंगे। उन्होंने सभी से आदर्श आचार संहिता को लेकर सतर्क रहने और भारतीय चुनाव आयोग के निदेर्शों का पालन सुनिश्चित करने का अनुरोध किया।उपायुक्त ने भारतीय चुनाव आयोग के दिशा निदेर्शों से भी राजनीतिक दलों को अवगत कराया।वहीं एडीएम लॉ एंड आर्डर पियूष सिन्हा ने कहा कि कोई भी व्यक्ति या राजनीतिक दल अपने वाहन या मोटरसाइकिल, आवास या कार्यालय के बाहर पार्टी का झंडा या चिन्ह अनुमति लेकर लगाए। वाहनों में लगे विभिन्न पद के बोर्ड हटा लें। किसी आयोजन के लिए समय पर सुविधा पोर्टल पर आवेदन दें। आवेदन मिलने पर पहले आओ पहले पाओ की नीति पर अनुमति प्रदान की जाएगी।बैठक में उपायुक्त माधवी मिश्रा, एडीएम लॉ एंड आर्डर पियूष सिन्हा,वरीय पदाधिकारी व्यय अनुश्रवण कोषांग गालिब अंसारी, नोडल पदाधिकारी व्यय अनुश्रवण कोषांग ध्रुव नारायण राय, जिला आपूर्ति पदाधिकारी प्रदीप कुमार शुक्ला, उप निर्वाचन पदाधिकारी कालीदास मुंडा, जिला जनसम्पर्क पदाधिकारी सुनिल कुमार सिंह, आईटी मैनेजर रूपेश मिश्रा, डीपीओ यूआईडी अमित कुमार, आनंद कुमार,भाजपा के नरेंद्र त्रिवेदी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संतोष कुमार राय,महेंद्र कुमार दुबे, झारखंड मुक्ति मोर्चा के मंटू कुमार चौहान, राष्ट्रीय जनता दल के राजू यादव, आजसू पार्टी के रतिलाल महतो के अलावा बहुजन समाज पार्टी, आम आदमी पार्टी व अन्य दलों के प्रतिनिधि मौजूद थे।

अवैध बालू लदे हाइवा को पुलिस ने किया जब्त

बरोरा : बरोरा पुलिस ने बुधवार को दिवा गश्त के दौरान मुराइडीह चिटाही मुख्य मार्ग पर बंद पड़ी माइनअप कम्पनी के पास एक अवैध बालू से भरे हाइवा (जेएच 10 बीटी 5226) को जब्त किया। जैसे ही चालक ने पुलिस को देखा, वह मौके से भाग निकला। बरोरा पुलिस ने हाइवा को थाने लाकर रखा है।

निर्वाची पदाधिकारी ने सभी राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं के साथ की बैठक

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

तेनुघाट: आज बेरमो अनुमंडल मुख्यालय तेनुघाट में गोमिया निवार्ची पदाधिकारी सह अपर समाहर्ता बोकारो मुमताज अंसारी एवं बेरमो निवार्ची पदाधिकारी सह अनुमंडल पदाधिकारी मुकेश मछुआ के द्वारा संयुक्त रूप से सभी राजनीतिक दलों के स्थानीय कार्यकताओं के बैठक कर आगामी विधानसभा चुनाव के बारे में मुख्य रूप से चर्चा किया गया। इस मौके पर गोमिया निवार्ची पदाधिकारी सह अपर समाहर्ता बोकारो मुमताज अंसारी ने बताया कि मुख्य निर्वाचन आयोग द्वारा चुनाव की घोषणा करते ही राज्य आदर्श आचार संहिता लागू हो चुकी है। उसी के तहत 34 गोमिया, और 35 बेरमो में द्वितीय चरण में चुनाव होना है। जिसे लेकर सभी दलों के कार्यकताओं के समन्वय स्थापित कर निष्पक्ष चुनाव कराकर मजबूत लोकतंत्र स्थापित करना है। अनुमंडल कार्यालय के मुख्य द्वार पर बैरिकेटिंग किया जाएगा। जहां से अनधिकृत वाहन कार्यालय परिसर में प्रवेश नहीं कर सकेगी । नामांकन प्रक्रिया में नामांकन अभ्यर्थी मिलाकर कुल पांच व्यक्ति का ही नामांकन कक्ष प्रवेश का आदेश दिया गया है । नामांकन प्रक्रिया में दो अभ्यर्थी कार्यालय के कॉरिडोर में रह सकते है बाकी अभ्यर्थी प्रतीक्षालय में अपनी बारी आने का इंतजार करेंगे । नामांकन प्रक्रिया मंगलवार से प्रारंभ हो जाएगी।गोमिया और बेरमो विधानसभा नक्सल प्रभावित क्षेत्र से संबंधित पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि संभवत नक्सल प्रभावित मुद्दा लगभग समाप्त हो चुका है। अभी कुछ ही दिनों पूर्व लोकसभा को उदाहरण उन्होंने बताया किसी प्रकार की घटना दुर्घटना नहीं घटी और न हीं किसी बूथों पर दोबारा मतदान करने की स्थिति उत्पन्न हुई है। मौके पर गोमिया प्रखंड विकास पदाधिकारी महादेव महतो, अंचल अधिकारी गोमिया एम डी आफताब आलम, अंचल अधिकारी पेटरवार अशोक राम, कसमार अंचल अधिकारी प्रवीण कुमार सहित कई अधिकारी शामिल थे ।

बोकारो में 14,87,103 मतदाता करेंगे प्रत्याशियों के भाग्य का निर्णय, मतदान 20 नवंबर को

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

बोकारो : भारत निर्वाचन आयोग ने विधानसभा आम चुनाव 2024 की घोषणा कर दी है। इसके अनुसार 34 गोमिया, 35 बेरमो, 36 बोकारो एवं 37 चंदनकियारी विधानसभा क्षेत्र के लिए दूसरे चरण में 20 नवंबर को मतदान होना है। चुनाव की अधिसूचना 22 अक्टूबर, नाम निर्देशन की अंतिम तिथि 29 अक्टूबर, नाम निर्देशन प्रपत्रों की स्क्रूटनी 30 अक्टूबर, अभ्यर्थिता वापस लेने की तिथि 01 नवंबर, मतदान की तिथि 20 नवंबर एवं मतगणना की तिथि 23 नवंबर निर्धारित की गई है। उक्त बातें जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त विजया जाधव ने कहीं। वह समाहरणालय सभागार में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में विभिन्न प्रिंट एवं ईलेक्ट्रानिक मीडिया प्रतिनिधियों को संबोधित कर रही थी। मौके पर सभी आरओ व अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

उन्होंने बताया कि सभी विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत कुल मतदाताओं की संख्या 14,87,103 है। जिसमें पुरुष मतदाताओं की संख्या 76,50,24 एवं महिला मतदाताओं की संख्या 72,20,46 है। वहीं, ट्रांसजेंडर मतदाताओं की संख्या 33 है। जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने बताया कि 27 अगस्त 2024 से अब तक सभी विधानसभा क्षेत्रों में कुल 15,904 नये मतदाताओं को जोड़ा गया है। लोकसभा क्षेत्र अंतर्गत दिव्यांग मतदाता 18,731 एवं 85 प्लस मतदाताओं की संख्या 4,700 है।

डीसी ने बताया कि जिला अंतर्गत सभी 04 विधानसभा क्षेत्रों में कुल 828 भवनों में कुल मतदान केंद्रों की संख्या 1581 है। जिसमें 34 गोमिया विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत 206 भवनों में 341 मतदान केंद्र, 35 बेरमो विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत 213 भवनों में 355 मतदान केंद्र, 36 बोकारो विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत 204 भवनों में 588 मतदान केंद्र, 37 चंदनकियारी विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत 205 भवनों में 297 मतदान केंद्र बनाएं गए हैं।

मौके पर उप विकास आयुक्त गिरजा शंकर प्रसाद, सामग्री कोषांग की नोडल पदाधिकारी मेनका, निर्वाची पदाधिकारी गोमिया सह अपर समाहर्ता मो. मुमताज अंसारी, निर्वाची पदाधिकारी बोकारो सह एसडीओ चास सुश्री प्रांजल ढांडा, निर्वाची पदाधिकारी सह डीसीएलआर प्रभाष दत्ता, निर्वाची पदाधिकारी बेरमो सह एसडीओ बेरमो मुकेश मछुआ, ईवीएम कोषांग के नोडल पदाधिकारी मनोज कुमार, स्वीप कोषांग के नोडल पदाधिकारी शक्ति कुमार, सहयोगी पदाधिकारी मीडिया कोषांग सह सहायक जनसंपर्क पदाधिकारी अविनाश कुमार सिंह, सहयोगी पदाधिकारी पंकज दूबे, विभिन्न प्रिंट एवं ईलेक्ट्रानिक मीडिया के प्रतिनिधि आदि उपस्थित थे।

मतदान प्रतिशन बढ़ाने को लेकर आर्मस बैंड का लोकार्पण

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

बोकारो : विधानसभा आम चुनाव 2024 में मतदान प्रतिशत बढ़ाने को लेकर समाहरणालय सभागार में डीईओ सह डीसी श्रीमती विजया जाधव ने आर्मस बैंड का लोकार्पण किया। बैंड में मतदान करने से संबंधित संदेश लिखा था। डीईओ सह डीसी ने कहा कि जिले का मतदान प्रतिशत संतोषजनक नहीं है। विशेषकर शहरी क्षेत्रों में, इस दाग को इस बार जिलावासियों को मिटाना है, उन्होंने जिले के मतदाताओं से मतदान प्रतिशत बढ़ाने का अपील किया, सभी को अपने मताधिकार का इस्तेमाल करने एवं दूसरों को भी मतदान करने का अपील करने को कहा। डीईओ सह डीसी ने इस अवसर पर भारत निर्वाचन आयोग केविभिन्न एप (वोटर हेल्पलाइन, सी विजिल, डायल 1950, सक्षम एप, केवाईसी आदि) के संबंध में विस्तार से बताया। उन्होंने उपस्थित सभी को मतदान करने के संदेश वाले आर्मस बैंड बांधने का अपील किया।

मौके पर उप विकास आयुक्त गिरजा शंकर प्रसाद, सामग्री कोषांग की नोडल पदाधिकारी मेनका,निवार्ची पदाधिकारी गोमिया सह अपर समाहर्ता मो. मुमताज अंसारी, निवार्ची पदाधिकारी बोकारो सह एसडीओ चास सुश्री प्रांजल ढांडा, निवार्ची पदाधिकारी सह डीसीएलआर प्रभाष दत्ता, निवार्ची पदाधिकारी बेरमो सह एसडीओ बेरमो मुकेश मछुआ, ईवीएम कोषांग के नोडल पदाधिकारी मनोज कुमार, स्वीप कोषांग के नोडल पदाधिकारी शक्ति कुमार, सहयोगी पदाधिकारी मीडिया कोषांग सह सहायक जनसंपर्क पदाधिकारी अविनाश कुमार सिंह, सहयोगी पदाधिकारी पंकज दूबे, विभिन्न प्रिंट एवं ईलेक्ट्रानिक मीडिया के प्रतिनिधि आदि उपस्थित थे।

आर्या फ्युल्स फैक्टरी के विरोध में ग्रामीण हुए गोलबंद

बेरमो: बेरमो अनुमंडल के नावाडीह प्रखंड स्थित पेंक - नारायणपुर थाना अंतरगर्त बरई पंचायत अवस्थित आर्या फ्युल्स प्राइवेट लिमिटेड फैक्टरी में अवैध रूप से हो रहे कोयला की पौड़ा के बिरोध बरई के ग्रामिणों द्वारा आवाज उठाते हुए पुलिस प्रशासन से बंद करने की मांग दुसरे दिन भी गोलबंद हुए ,लेकिन व्यवसायों के समक्ष अबतक पुलिस की तंत्र बोना पड़ा हुआ है। आखिर बरई के ग्रामीण किसकी शरण में जाय कि न्याय मिल सकेगा। सबसे दुःखद की बात यह है कि बुधवार को ज्योहीं ग्रामिण गोलबंद होकर कॉल फैक्टरी बिरोध करने पहुँचें तो प्रशासन के समक्ष ही कुछ लोगों को कोयला व्यवसायों ने चिन्हित करते हुए जान से मारने की धमकी दे दिया और पुलिस मौन होकर सुनती रही। आपको बता दें कि मंगलवार को जब ग्रामिणों ने फैक्टरी के बिरोध आवाज उठायी तो स्थानिय थाना प्रभारी अनिल लिण्डा ,अंचलाधिकारी अभिषेक कुमार ,खनन निरीक्षक सीताराम टुडू सहित अन्य पुलिस दल पहुँचकर 415 टन कोयला की जब्त किया और ग्रामिणों जॉचोपरांत फैक्टरी के बिरोध कर्रवाई करने की अश्वासन दिया गया था ,लेकिन इन बिंदुओं को अहवेलना कर सात घंटे के अंदर ही ट्रक लगाकर कर जब्त कोयला को व्यवसायों द्वारा लोडिंग की जाने लगी ,जिससे ग्रामिणों में काफी रोष बढ़ गयी और समाचार लिखे जाने तक डटे रहे है, इस दौरान खनन विभाग के अधिकारी आये और देखकर चलते बने हैं।

राजनीतिक पार्टी के प्रतिनिधियों के साथ जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने की बैठक

गुमला- जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी की अध्यक्षता में आज राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों (अध्यक्ष,सचिव) के साथ एक आवश्यक बैठक नए समाहरणालय भवन में हुई। बैठक में सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को झारखंड विधानसभा आम निर्वाचन, 2024 के निमित्त लागू आदर्श आचार संहिता की जानकारी दी गयी और आदर्श आचार संहिता के अनुपालन संबंधी निर्देश दिए गए। आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन किये जाने व इसके अंतर्गत की जाने कार्रवाई के बारे बताया गया। सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को मतदान केंद्र, मतदाताओं की संख्या, मतदान केंद्र की स्थिति, न्यूनतम मूलभूत सुविधाओं आदि की जानकारी दी गयी। जिला में प्रत्याशियों के नामांकन, नामांकन की स्क्रूटनी, नाम वापसी, मतदान की तिथि व मतगणना की तिथि से अवगत कराया गया। बैठक में अपर समाहर्ता, एसडीओ सदर/ बसिया/ चैनपुर, जिला उप निर्वाचन पदाधिकारी, सभी राजनीतिक दलों के अध्यक्ष/सचिव/प्रतिनिधि उपस्थित थे।

डुमरी में धुमधाम से मनाया गया करमा पूजा, करम डाईर हुई विसर्जित

डुमरी (गुमला) - सरना समाज डुमरी के द्वारा गांव में करम पूजा पर्व धूमधाम से मनाया गया। दूसरे दिन सुबह करम डाली को नाच गान करते हुए घर घर घुमाया गया। अंत में बैगिन के घर में ले जाया गया। जहां बैगिन ने पूजा पाठ, दान दक्षिणा देकर करम राजा डाली को विदा किया। उसके बाद महिला पुरुष नाच गान करते हुए करम राजा डाली को बासानदी में विसर्जन कर दिया। इसके पूर्व छोटकु बैगा द्वारा करम पेड़ से डाली काट कर अखरा लाया गया। जिसको बाद में बैगा द्वारा अखरा में स्थापित कर पूजा अर्चना की गयी। उसके बाद बैगा द्वारा करमा धर्मा की कहानी सुनाई गई। बैगा ने बताया कि करम धर्मा को करम डाली को अखरा से उखाड़कर फेकने से कैसे कैसे विपत्तियों का सामना करना पड़ा था, विपत्तियों से छुटकारा पाने के लिए फिर से करम डाली को स्थापित कर पूजा अर्चना किया गया

तब सभी पीड़ित परिवार को विपत्तियों से छुटकारा मिला। इसके लिए करम डाली की पूजा अर्चना कर सेवा करना चाहिए। ताकि सभी परिवार, जीव जंतु, फसल आदि को रोगों से छुटकारा और सभी लोग सुख शांति से रह सके। उसके बाद पर्वतीयों ने करम राजा की पूजा अर्चना कर अपने और परिवार की सुख शान्ति के लिए कामना की गई गांव के महिला पुरुष रात भर मांदर,नगाड़े की थाप नाचते गाते रहे उसके बाद शाम तक खान पान और मेहमान नवाजी का दौर चलता रहा।

आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन करने पर होगी कार्रवाई

गुमला - भारत निर्वाचन आयोग के द्वारा दिनांकः 15.10.2024 के द्वारा विधान सभा चुनाव-2024 की घोषणा के पश्चात् आदर्श आचार संहिता पूर्ण रूप से प्रभावी हो गई है। एवं सम्पूर्ण गुमला जिला में भारतीय न्याय संहिता की धारा 163 (द्धक्ष्र 144) के तहत निषेधाज्ञा भी जारी कर दिया गया है। निषेधाज्ञा के अनुसार कोई भी व्यक्ति या राजनैतिक दल या संगठन के द्वारा चुनाव प्रचार-प्रसार के लिए आपत्तिजनक, भ्रामक या विधि-विरुद्ध संदेश का वाट्सअप, एस0एम0एस0, फेसबुक, ट्विटर या अन्य सोशल मिडिया अथवा अन्य इलेक्ट्रोनिक माध्यम से आदान-प्रदान किया जाना वर्जित होगा। साथ ही रात्रि 10-00 बजे से प्रातः 6-00 बजे के बीच सोशल मिडिया के माध्यमों से एवं डोर-टू-डोर चुनाव प्रचार-प्रसार भी आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन माना जायेगा।आदेश का उल्लंघन करने वाले संबंधित व्यक्तियों पर विधि-सम्मत् कार्रवाई सुनिश्चित की जायेगी।

उपायुक्त ने स्वीप कोषांग के साथ की समीक्षात्मक बैठक, दिए आवश्यक निर्देश

गुमला- जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी ने स्वीप कोषांग के पदाधिकारियों एवं कर्मियों के साथ बैठक किया। बैठक में जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने चुनाव के मद्देनजर शहरी क्षेत्रों में ज्यादा से ज्यादा जागरूकता कार्यक्रम चलाने के संदर्भ में कोषांग के पदाधिकारियों को निर्देशित किया। इस क्रम में चुनावी प्रक्रिया में लोगों की भागीदारी बढ़ाने के लिए निर्वाचन आयोग के दिशानिर्देश के अनुसार कई तरह के जागरूकता कार्यक्रम संचालित करने की दिशा में व्यापक स्तर पर कार्य करने का निर्देश दिया। ताकि आगामी विद्यानसभा चुनाव में वोट प्रतिशत को बढ़ाया जा सकेंउपायुक्त ने निर्देश दिया कि स्वीप कैलेंडर के अनुसार विधानसभा चुनाव 2024 में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम चलाए जाएं। जिसमें लोगों को वोट के प्रति जागरूक करने के लिए विभिन्न स्टेक होल्डरर्स के साथ समन्वय व भागीदारी बढ़ाए जाए।।उन्होंने कहा कि कार्य योजना बनाकर मतदाता जागरूकता कार्यक्रम को आयोजित किया जाए। ताकि आमजनों को मताधिकार के महत्व को बताया जाए। उपायुक्त ने स्कूल, कॉलेज में स्वीप के तहत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करने को कहा जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा कि मतदान केंद्रों के सौंदरीकरण पर भी विशेष ध्यान देने का निर्देश दिया। इस दौरान स्वीप कोषांग के जिला स्वीप नोडल पदाधिकारी, प्रभारी पदाधिकारी एवं कर्मी मौजूद रहें।

बाईक से नेतरहाट घुमने जा जा रहे तीन दोस्तों को माइंस ट्रक ने रौंदा, दो की मौत,एक गंभीर रूप से घायल

बिशुनपुर (गुमला)- बिशुनपुर थाना क्षेत्र के चिंगरी एवं चिपरी गांव के बीच मुड़टंगवा मोड़ के समीप बॉक्साइट से लदा ट्रक ने बाइक सवार युवकों को रौंद डाला। जिससे दो युवकों की घटनास्थल पर ही दर्दनाक मौत हो गई। जबकि 22 वर्षीय गुदेश्वर साहू नामक युवक गंभीर रूप से घायल है। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बिशुनपुर में प्राथमिक उपचार के बाद उसे बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल गुमला भेजा दिया गया है। घटना के संबंध में मिली जानकारी के अनुसार भरनो थाना क्षेत्र के परवल निवासी गुदेश्वर साहू एवं उसके दो अन्य दोस्त बाइक में सवार होकर नेतरहाट जा रहे थे। तभी वे लोग मूड़टंगवा मोड़ के समीप पहुंचे और विपरीत दिशा से बॉक्साइट लेकर आ रहे एक ट्रक ने बाइक सवार युवकों को अपनी चपेट में लेकर रौंद डाला। जिससे दो युवक की दर्दनाक मौत घटनास्थल पर ही हो गई। जबकि बुद्धेश्वर साहू नामक युवक गंभीर रूप से घायल है। खबर लिखे जाने तक मृतक युवकों की पहचान नहीं हो पाई है। इधर घटना के बाद ट्रक चालक फरार हो गया है। पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर मामले की छानबीन में जुट गई है।

गुमला में तेज रफ्तारका कहर

तेज रफ्तारहाइवा ने बाइक सवार तीन लोगों को रौंदा, हादसे में पति, पत्नी और बहन की मौत

गुमला- जिला मुख्यालय से 7 किलोमीटर दूर टैंसेरा स्कूल के समीप एक तेज रफ्तार हाइवा ने बाइक सवार तीन लोगों को अपनी चपेट में ले लिया। इस हादसे में बाइक सवार मुरकुंडा ढिढौलीटोली निवासी सालो देवी, पोढ़ा टोली निवासी शनिचर चिक बड़ाइक औरउसकी पत्नी रोहिता देवी की मौत हो गई। सालो और शनिचर भाई-बहन थे। घटना की सूचना पर पुलिस की टीम घटनास्थल पर पहुंची और दोनों शव को अपने कब्जे में लिया। बताया जा रहा है कि सालो देवी अपने भाई शनिचर चिक बड़ाइक के घर पोढाटोली मेहमानी गई थी। जहां से लौटने के दौरान टैंसेरा मोड़ के पास एक स्कूटी से बाइक

की हल्की टक्कर हुई। जिससे अनियंत्रित होकर बाइक सवार तीनों रोड पर जा गिरे। इसी दौरान पीछे से आ रही एक तेज रफ्तार हाइवा ने तीनों को रौंदते हुए निकल गई। घटना से आक्रोशित ग्रामीणों ने करीब 2 घंटे तक गुमला राउरकेला मार्ग को जाम कर दिया। प्रशासन द्वारा आश्वासन के बाद शाम करीब 6-30 बजे जाम खुला। वही पुलिस पूरे मामले की छानबीन कर रही है।

जिला भूमि संरक्षण पदाधिकारी ने भरनो में किया धान-बीज उत्पादन का निरीक्षण

गुमला - बुधवार को कृषि विज्ञान केंद्र गुमला विकास भारती बिशुनपुर द्वारा भरनो फार्म पर धान बीज उत्पादन का जिला भूमि संरक्षण पदाधिकारी गुमला आशीष कुमार द्वारा निरीक्षण किया गया द्य इस निरीक्षण क्रम में श्रीकुमार ने बताया कि कृषि विज्ञान केंद्र के द्वारा भरनो बीज उत्पादन फार्म पर धान प्रभेद रूञ्-1010 का 4 एकड़ में प्रजनक बीज से आधार बीज का उत्पादन किया जा रहा है जिससे आने वाले दिनों में गुमला जिले के किसानों को उन्नतशील धान का बीज कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से प्राप्त हो सकेगा जिससे किसानों के उत्पादन में वृद्धि होगी द्य किसान इस प्रभेद का उपयोग चार से पांच साल तक आसानी से कर सकते है द्य इस प्रसिद्ध भ्रमण के दौरान केंद्र के वैज्ञानिक श्री अटल बिहारी तिवारी ने बताया कि यह प्रभेद 100 से 110 दिन में तैयार हो जाती है साथ ही साथ इस प्रभेद की उत्पादन क्षमता 20 से 24 कुंतल प्रति एकड़ है द्यइस बीज उत्पादन फार्म पर भ्रमण के दौरान केंद्र के वैज्ञानिक अटल बिहारी तिवारी, राजीव कुमार सिंह के साथ-साथ सी के शर्मा भी उपस्थित थे

पुलिस अधीक्षक ने विधान सभा चुनाव के मद्देनजर अंतर्राज्यीय चेक पोस्ट का किया निरीक्षण

गुमला - आसन्न विधान सभा चुनाव के मद्देनजर गुमला के पुलिस अधीक्षक शंभू कुमार सिंह ने झारखंड- छतीसगढ़ सीमांत स्थित मांझाटोली में चेक पोस्ट का निरीक्षण किया। विधान सभा चुनाव 2024 शांतिपूर्ण, निर्विघ्न एवं भयमुक्त वातावरण में संपन्न कराने के लिए उन्होंने पुलिस अधिकारियों को कई महत्वपूर्ण निर्देश दिये। उन्होंने पोस्ट पर प्रतिनियुक्त पुलिस पदाधिकारी व थाना प्रभारी को अवैध मादक पदार्थों ,अवैध हथियार व अधिक मात्रा में नगद राशि का लेनदेन के संबंध में विशेष जांच करने का निर्देश दिये। इस मौके पर चैनपुर के अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी व रायडीह के थाना प्रभारी भी उपस्थित थे। इधर पुलिस ने वाहन जांच अभियान शुरू कर दिया गया है। वाहनों की गहनतापूर्वक तलाशी ली जा रही है।

स्वीप कार्यक्रम के तहत आजीविका महिला ग्राम संगठन की सदस्यों ने ली शपथ

डुमरी (गुमला) - डुमरी प्रखंड अंतर्गत नवाडीह पंचायत के बर्री गांव में बिर्री आजीविका महिला ग्राम संगठन की सदस्यों ने स्वीप कार्यक्रम के तहत मतदाता शपथ ग्रहण किया। वही संकुल अध्यक्ष सुसरेन लकड़ा ने धर्म, वर्ग, जाति, समुदाय, भाषा अन्य किसी भी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना वोट करने की बात कही। संगीता लकड़ा ने सभी महिलाओं को शपथ दिलाई। मौके पर प्रतिमा कमल कुजुर ,ललिता देवी, रोस नीलिमा मिंज, उत्म बोदरा,महावीर बांस महली सहित ग्राम संगठन की सदस्या उपस्थित थे।

स्वीप गतिविधि के तहत जिले के सभी पुस्तकालयों में चलाया गया जागरूकता अभियान

गुमला- आगामी विधानसभा आम चुनाव 2024 के निमित आज बुधवार को स्वीप गतिविधि के तहत जिले के सभी पुस्तकालयों में स्वीप कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिले के नए एवं युवा मतदाताओं को जागरूक करने के उद्देश्य से जिले के सभी जिला स्तरीय,प्रखंड स्तरीय एवं पंचायत स्तरीय पुस्तकालयों में स्वीप कर्मियों द्वारा जाकर मतदाताओं को जागरूक करने का कार्य किया गया एवं मतदान से जुड़े आवश्यक जानकारियों से सभी को अवगत करवाया गया। इस दौरान जिले के हजारों युवाओं को इस अभियान के माध्यम से जोड़ा गया। जिला स्वीप नोडल पदाधिकारी आरती कुमारी के नेतृत्व में जिले में संचालित स्वीप गतिविधियों से जिले के मतदाताओं को

जागरूक करने का अभियान चलाया जा रहा है। स्वीप कोषांग द्वारा जारी किए गए मासिक कैलेंडर के आधार पर आज सभी पुस्तकालयों में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गई, एवं सभी उपस्थित मतदाताओं ने मतदान करने हेतु शपथ ग्रहण किया।कल गुरूवार को स्वीप गतिविधि के तहत जिले के सभी उच्च विद्यालयों एवं कॉलेजों में रजिस्ट्रेशन कैंप का आयोजन किया जाएगा। जिसमें नए मतदाताओं/ छुटे हुए मतदाताओं का नाम जोड़ा जाएगा एवं मतदाता सूची में सुधार का भी कार्य किया जाएगा।

इस बार झारखंड में पुर्ण बहुमत की सरकार बनायगी भाजपा :अनिमा शोनकर

आरक्षण को कोई नही खत्म कर सकता है। झारखंड में भीमराव अंबेडकर आवास योजना का शुभारंभ वर्ष 2016 में किया गया। इस योजना के माध्यम से अनुसूचित जाति के गरीब परिवारों को पक्के मकान प्रदान किए जा रहे हैं, जिससे उनकी जीवनस्तर में सुधार हो सके। उक्त बातें भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा की राष्ट्रीय सोशल मीडिया प्रभारी अनिमा सोनकर ने कही। श्रीमती सोनकर आज लोहरदगा विधानसभा क्षेत्र में जिला कार्यालय में आयोजित जिला एवं मंडल की संगठनात्मक बैठक के दौरान कही।

उन्होंने कहा कि झारखंड के लिए भारतीय जनता पार्टी ने %पंच प्रण% लिया है। जिसके तहत भाजपा ÷गोगो दीदी योजना÷ शुरू करेगी, जिसके तहत झारखंड की हर महिला के बैंक खाते में हर महीने की 11 तारीख को 2,100 रुपये तक की वित्तीय सहायता हस्तांतरित की जाएगी। भाजपा राज्य में ÷लक्ष्मी जोहार÷ शुरू करेगी , जिसके तहत के सभी घरों में 500 रुपये में एलपीजी गैस सिलेंडर और साल में दो मुफ्त सिलेंडर उपलब्ध कराएगी।भाजपा राज्य में सुनिश्चित रोजगार शुरू करेगी , जिसके तहत झारखंड में युवाओं के लिए 5 साल में 5 लाख स्वरोजगार के अवसर पैदा करेगी। इसके अलावा, 2.87 लाख खाली सरकारी पदों के लिए निष्पक्ष और पारदर्शी भर्ती की जाएगी। इसे सुनिश्चित करने के लिए, पहली कैबिनेट बैठक में ही भर्ती प्रक्रिया शुरू की जाएगी, जिससे नवंबर 2025 तक 1.5 लाख भर्तियां पूरी हो जाएंगी। इसके अलावा, एक वार्षिक कैलेंडर पेश किया जाएगा, जिसमें सभी मौजूदा परीक्षाओं को एक ही परीक्षा में शामिल किया जाएगा।

लोहरदगा विस चुनाव में जनता का आशीर्वाद मिले तो, बदलेंगे क्षेत्र की तस्वीर-अंजू देवी

लोहरदगा। आजसू पार्टी के केंद्रीय महासचिव अंजू देवी एनडीए गठबंधन के तहत लोहरदगा विधानसभा चुनाव में पूरी तरह से अपनी किस्मत आजमाने के उद्देश्य से चुनावी मैदान में कूद चुकी है। इधर जनसंपर्क अभियान चलाते हुए अंजू देवी ने कहा कि झारखंड आंदोलनकारी नेता सह लोहरदगा के पूर्व विधायक स्वर्गीय कमल किशोर भगत जो सपना लोहरदगा के जनता के लिए देखे थे, उसे पूरा करना हमारी प्राथमिकता होगी। उन्होंने कहा कि कमल किशोर भगत हमारे लिए आदर्श थे और हमेशा रहेंगे, उनके आदर्शों पर चलकर लोहरदगा विस क्षेत्र को विकसित क्षेत्र स्थापित करना

लक्ष्य है। अंजू देवी ने कहा कि लोहरदगा विधानसभा क्षेत्र की जनता का आशीर्वाद मिले तो निश्चित रूप से पूरे झारखंड प्रदेश में लोहरदगा की तस्वीर कुछ और होगी। आजसू पार्टी के केंद्रीय महासचिव सह एनडीए गठबंधन की भावी प्रत्याशी अंजू देवी के द्वारा अपने चुनावी दौरा के क्रम में लोहरदगा विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत किस्को प्रखंड के खरकी पंचायत एवं कई गांवों में जाकर चूल्हा प्रमुख और पंचायत कमेटी महिला पदाधिकारी से मिलकर चुनाव में उतरने की तैयारी की जानकारी दी और कहा कि स्वर्गीय कमल किशोर भगत के सपनों को पूरा करने के लिए महिलाओं को संगठित होने की जरूरत है। उन्होंने चुनाव में अपनी जीत सुनिश्चित करने को लेकर मौके पर मौजूद महिला और पुरूषों को मूल मंत्र भी दिया। इस बीच अंजू देवी ने कहा कि पार्टी सुप्रीमो सुदेश कुमार महतो महिलाओं को हमेशा आगे और रोजगार से जोड़ने का काम किए हैं, लोहरदगा में विधायक बनने पर महिलाओं के लिए रोजगार की व्यवस्था की जाएगी। उन्होंने कहा कि महिलाओं को सशक्त बनाने और उन्हें उनका शत-प्रतिशत हक अधिकार दिलाने में हर वक्त अग्रणी पंक्ति में खड़ा रहूंगी। मौके पर बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

चतरा के चौक-चौराहों से सभी राजनीतिक दलों के पोस्टर बैनर को प्रशासन ने हटाया

डीसी ने राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ की बैठक, दिये दिशा निर्देश

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

चतरा : समाहरणालय स्थित सभा कक्ष में जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त रमेश घोलप ने सभी राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधियों व स्टैंडिंग कमेटी की बैठक की। बैठक में जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने बताया कि झारखंड विधानसभा आम चुनाव 2024 को लेकर भारत निर्वाचन आयोग द्वारा चुनाव की घोषणा 15 अक्टूबर को कर दी है। जिले में आदर्श आचार संहिता लागू है। आदर्श आचार संहिता लागू होने के 24 घंटे एवं 72 घंटे के भीतर किए जाने वाले आवश्यक कार्रवाई के संबंध में आवश्यक जानकारी दी गई। जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा कि आदर्श आचार संहिता लागू होने के पश्चात सभी सरकारी योजनाओं एवं राजनीतिक पार्टियों से संबंधित बैनर, पोस्टर हटाया जा रहा है, जिसमें सभी राजनीतिक पार्टियों के सहयोग की अपेक्षा है। राज्य में पहले चरण में 13 नवंबर व दूसरा चरण 20 नवंबर को चुनाव होगा। जिसमे चतरा और सिमरिया विधानसभा क्षेत्र में चुनाव 13 नवंबर पहले चरण में होगा। जिसके लिए 18 अक्टूबर 2024 से 25 अक्टूबर 2024 तक उम्मीदवारों का नामांकन, 28 अक्टूबर को नामांकन पत्रों का स्क्रुटनी। वहीं नाम वापसी तिथि 30 अक्टूबर है। मतगणना 23 नवंबर को होगा। उम्मीदवारों का नामांकन निवार्ची पदाधिकारी सह अनुमंडल पदाधिकारी चतरा/सिमरिया के कार्यालय कक्ष में होना है। चतरा विधानसभा क्षेत्र में

कुल 475 मतदान केंद्र हैं। सिमरिया विधानसभा क्षेत्र में कुल 419 वहीं चतरा जिले के 20 मतदान केंद्र बड़कागांव विधासभा क्षेत्र में आता है। जिले में अगर कुल मतदान केंद्रों की बात करें तो कुल 914 मतदान केंद्र हैं। उन्होंने सभी राजनीतिक पार्टियों को आदर्श आचार संहिता का पूर्णता अनुपालन करने एवं चुनाव के दौरान सहयोग करने का अपील किया। जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा कि आदर्श आचार संहिता लागू होने के पश्चात किसी भी राजनीतिक कार्यक्रम के आयोजन से 48 घंटे पूर्व इसकी सूचना निवार्ची पदाधिकारी सह अनुमंडल पदाधिकारी को आवश्यक दें, साथ हीं कार्यक्रम के आयोजन से पूर्व सुविधा एप्प के माध्यम से ऑनलाइन अनुमति लेना अनिवार्य है। स्टार कैपेनर को लेकर जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा कि आदर्श चुनाव प्रचार के लिए आने वाले स्टार प्रचारक की सूचना भी अनुमंडल पदाधिकारी को अवश्य दें, किसी भी सरकारी योजना का प्रचार प्रसार ना करें, ना ही किसी भी प्रकार का योजना से संबंधित फॉर्म भरवाया जाए, किसी भी प्रकार का प्रलोभन देने पर आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन माना जाएगा एवं संबंधित के विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी। किसी भी व्यक्ति के घर में किसी पार्टी का झंडा लगाने से पूर्व घर के मालिक से अनुमति अवश्य लें। सोशल मीडिया पर विशेष सतर्कता बरतने की आवश्यकता है, कोई भी आपत्तिजनक पोस्ट ना करें, जिससे आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन हो, सोशल मीडिया पर पैनी नजर रखी जा रही है। आदर्श आचार संहिता के दौरान राजनीतिक पार्टियों द्वारा छापे गए बैनर पोस्टर आदि मैं पब्लिशर का नाम अवश्य अंकित करें और जो भी सामग्री छापे उसकी एक कॉपी निर्वाचन कार्यालय में जरूर उपलब्ध कराएं। प्रचार प्रसार एवं कार्यक्रम के दौरान चलने वाले वाहनों के लिए भी अनुमति लेना अनिवार्य है, लिए गए अनुमति पत्र को अपने गाड़ी के सामने जरूर चिपकाए।

बैठक में मुख्य रूप से पुलिस अधीक्षक विकास कुमार पांडेय, अपर समाहर्ता अरविंद कुमार, उप निर्वाचन पदाधिकारी वेदवंती कुमारी, अग्रणी जिला प्रबंधक, सभी राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधि एवं अन्य संबंधित पदाधिकारी उपस्थित थे।

पांकी के युवाओं ने विधायक के खिलाफ किया प्रदर्शन

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

पांकी : पांकी विधानसभा क्षेत्र में युवा वर्ग ने बीजेपी विधायक कुशवाहा डॉ. शशिभूषण मेहता के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों का आरोप है कि विधायक ने 2019 के चुनाव में किए गए वादों को पूरा नहीं किया है। उन्होंने कहा कि विधायक ने 101 गरीब लड़कियों की शादी, गांवों को मुख्य सड़कों से जोड़ना और किसानों के लिए डीप बोरिंग जैसी कार्यों का वादा किया था, लेकिन इनमें से एक भी वादा अब तक पूरा नहीं हुआ है।

युवाओं ने शांतिपूर्ण रैली निकालकर विधायक के खिलाफ नारे लगाए, जिनमें ₹विकास विरोधी विधायक होश में आओ₹ और ₹पांच साल का हिसाब दो₹ प्रमुख रहे। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि वे बीजेपी के प्रति अपनी निष्ठा बनाए रखेंगे, लेकिन अगर आगामी चुनाव में पार्टी फिर से कुशवाहा डॉ. शशिभूषण मेहता को टिकट देती है, तो वे पार्टी के खिलाफ मतदान करेंगे। उनका कहना है कि विधायक अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए काम कर रहे हैं और युवाओं के मुद्दों को नजरअंदाज कर रहे हैं।

युवाओं ने चेतावनी दी कि उन्हें एक ऐसा जनप्रतिनिधि चाहिए जो विकास के प्रति गंभीर हो और युवाओं के मुद्दों को प्राथमिकता दे। इस प्रदर्शन ने पांकी क्षेत्र में राजनीतिक हलचल पैदा कर दी है और बीजेपी के स्थानीय नेतृत्व के लिए एक नई चुनौती उत्पन्न की है। अब देखने वाली बात यह होगी कि बीजेपी नेतृत्व इस स्थिति को कैसे संभालता है और क्या आगामी चुनाव में पार्टी इस मुद्दे पर कोई ठोस कदम उठाएगी।

संक्षिप्त समाचार

एसडीएम व सीओ ने अवैध गिट्टी लदा ट्रक किया जब्त

चैनपुर(पलामू): चैनपुर-डाल्टनगंज मुख्य मार्ग पर चैनपुर वन विभाग के नाका के पास एसडीएम सुलोचना मीणा व अंचलाधिकारी चंद्रशेखर कुणाल के नेतृत्व में मंगलवार की रात्रि 12 बजें सघन चेकिंग अभियान चलाया गया। चेकिंग के दौरान अवैध रूप से गिट्टी लदा ट्रक को जब्त किया गया। जानकारी के अनुसार अवैध गिट्टी पत्थर लदा ट्रक सलतुआ के तरफ से डाल्टनगंज की ओर जा रहा था जाने के क्रम में चैनपुर वन विभाग के नाके पर चेकिंग के दौरान पकड़ा गया जिसके पास चालान नहीं था जिसपर एसडीएम सुलोचना मीणा ने बड़ी कार्रवाई करते हुए सीओ चंद्रशेखर कुणाल को अवैध गिट्टी लदा ट्रक मालिक के ऊपर मामला दर्ज कराने का निर्देश दिया।

हरिहरगंज में पुलिस छापेमारी में बोलेरो से अवैध शराब बरामद

मेदिनीनगर : झारखण्ड विधान सभा आम चुनाव 2024 के मद्देनजर, बुधवार को पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर हरिहरगंज थाना के पुलिस पदाधिकारी एवं बल के साथ, हरिहरगंज थाना अंतर्गत सघन छापामारी अभियान चलाया गया। छापामारी के क्रम में बोलेरो वाहन सं0-इफ26अ-7477 में अवैध बीयर बरामद किया गया। इस संबंध में हरिहरगंज थाना काण्ड सं0-141/2024, दिनांक 16.10.2024 दर्ज कर विधिवत कानूनी कार्रवाई की जा रही है। इस अभियान में पु०अ०नि० सतीश कुमार गुप्ता, पु०अ०नि० धनंजय कुमार गोप, म०पु०अ०नि० हेमन्ती बास्की, पु०अ०नि० राकेश कुमार सिंह तथा पुलिस बल शामिल थे। जिसमें निम्न प्रकार में अवैध बीयर बरामद किया गया। बीयर (गार्ड फादर) :- 216 बोतल (650 मिली.) मूल्य-37000/ रू० लगभग। केन बीयर (गार्ड फादर) 48 केन (500 मिली.) मुल्य-7000/रू० लगभग। कुल मूल्य-44,000 रुपए लगभग।

थाना में मध्यस्थता शिविर का आयोजन, कई मामलों का हुआ निष्पादन

चतरा : जिला के प्रतापपुर में जिला विधिक सेवा प्राधिकार के तत्वधान में बुधवार को थाना परिसर में मध्यस्थता शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में थाना क्षेत्र जोगियारा, चन्द्रीगोविंदपुर, एघारा, बरूरा समेत अन्य पंचायतो से जमीन, धरेलू विवाद व मारपीट का मामला आया। शिविर में उपस्थित पुलिस पदाधिकारी व पीएलवी विहारी कुमार ने चार मामले को दोनो पक्षो के बीच मध्यस्थता कर सुलह कराया गया। वही दो मामले को न्यायालय के लिए भेज दिया गया है इस संबंध में पीएलवी विहारी कुमार ने बताया की झालसा के निर्देश पर जिला विधिक सेवा प्राधिकार के तत्वधान में प्रत्येक बुधवार-रविवार को मध्यस्थता शिविर का आयोजन किया जाता है जिसमें जमीन, मारपीट, घरेलू समेत कई सुलहिने मामले को मध्यस्थता कराया जाता है वही न्याय आपके द्वार के तहत कानूनो की जानकारी दिया गया। लोग कानूनी सहायता पाकर अपने हक व अधिकार के लिए लड़ सकते है शिविर में उपस्थित दोनो पक्षो को लोगो ने काफी सराहना किया कहा की इस तरह के मध्यस्थता शिविर के आयेजन से लोग आपस बटवारा व झगड़ा को समझाऊता कर सकते है तथा कोर्ट-कचहरी के चक्कर से बच सकते है इस शिविर में सअनि श्री राम,जुबैरल गुडिया,गौतम कुमार समेत अन्य लोग मौजूद थे।

मछली मारने के क्रम में मारपीट कर जख्मी किया, लूटपाट करने का लगाया आरोप

चैनपुर(पलामू): चैनपुर थाना क्षेत्र के नरसिंहपुर पथरा गांव निवासी राहुल कुमार चौरसिया ने गांव के ही सात लोगों पर मछली मारने के क्रम में मारपीट कर जख्मी कर मारे हुए 50 किलो मछली एवं सोने का चैन लूटने का आरोप लगाते हुए चैनपुर थाना में मामला दर्ज कराया है। चैनपुर थाना प्रभारी श्री राम शर्मा ने बताया कि दिए गए आवेदन किया आलोक में मामला दर्ज कर जांच प्रारंभ कर दी गई है। सोनू चौरसिया द्वारा दिए गए आवेदन के अनुसार नरसिंहपुर पथरा गांव में नीजी आहर में मछली पालन किए थे। मंगलवार के रात एवं बुधवार के अहले सुबह अपने अन्य परिवार के सदस्यों के साथ मछली मार रहे थे। तभी गांव के विश्वनाथ महतो,प्रदीप चौरसिया, राजू चौरसिया विजय चौरसिया, सरोज महतो,लक्ष्मी नारायण चौरसिया, एवं राजेश चौरसिया हरवे हथियार से लैस होकर आये एवं पिता अनिल महतो को टांगी से मारकर जख्मी कर दिए, एवं साथ में आए अन्य लोगों ने हम सभी लोगों को लाठी डंडा से पिटाई कर जख्मी कर दिया।

आदर्श आचार संहिता लगते ही बालूमाथ में पोस्टर-बैनर हटाने का काम शुरू

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

बालूमाथ : झारखंड विधानसभा चुनाव की तारीखों के ऐलान के बाद लातेहार जिला प्रशासन ने आदर्श आचार संहिता को सख्ती से लागू करना शुरू कर दिया है। इसी क्रम में बालूमाथ में बीडीओ सोमा उराँव, अंचल अधिकारी विजय कुमार के नेतृत्व में सार्वजनिक स्थानों से सभी राजनीतिक दलों के पोस्टर, बैनर और झंडों को हटाने का अभियान चलाया। अंचलाधिकारी विजय कुमार ने बताया कि उपायुक्त उत्कर्ष गुप्ता के निर्देशानुसार यह कार्रवाई 24 घंटे के भीतर पूरी की जा रही है। जिसके तहत बालूमाथ प्रखंड मुख्यालय शहीद चौक, पांकी मोड़, मकईयाटांड जैसी जगहों पर लगे सभी राजनीतिक प्रचार सामग्री को हटाया गया। घूम-घूमकर इलाके में लगे पोस्टर और बैनर को हटाया और यह सुनिश्चित किया कि आचार संहिता का पूरी तरह पालन हो। बीडीओ सोमा उराँव ने कहा कि सार्वजनिक स्थानों पर किसी भी राजनीतिक दल द्वारा बिना अनुमति के झंडे या पोस्टर नहीं लगाए जा सकते हैं। यदि किसी राजनीतिक संगठन ने नियमों का उल्लंघन किया, तो उनके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। आदर्श आचार संहिता का पालन करना सभी के लिए अनिवार्य है, और प्रशासन इसकी निगरानी करेगा। गौरतलब है कि मंगलवार को चुनाव आयोग द्वारा झारखंड विधानसभा चुनाव की तारीखों की घोषणा की गई, जिसके अनुसार राज्य में दो चरणों में चुनाव होंगे। लातेहार जिले की दोनों विधानसभा सीटों पर 13 नवंबर को मतदान होगा। इसके मद्देनजर जिले में आदर्श आचार संहिता लागू हो चुकी है और प्रशासन हर गतिविधि पर नजर रख रहा है।

अनुसूचित जाति समाज ने रश्मि प्रकाश का किया सामाजिक और राजनीतिक बहिष्कार

कहा- अंतरजातीय विवाह समाज में डालेगा गलत प्रभाव

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

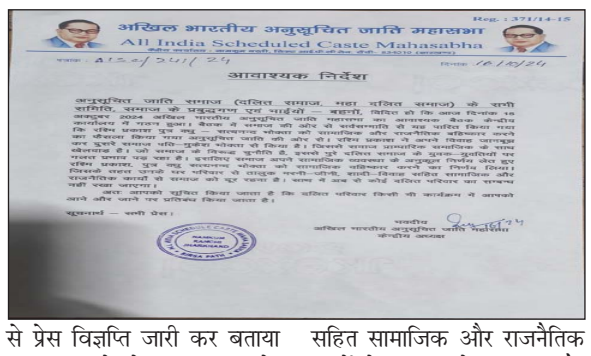

चतरा : मंत्री सत्यानंद भोक्ता की पुत्र वधु रश्मि प्रकाश का अंतरजातीय विवाह को ले इनदिनों सुर्खियों में है। दरअसल अखिल भारतीय अनुसूचित जाति महासभा की बैठक में अनुसूचित जाति की ओर से सर्वसम्मति से रश्मि प्रकाश का सामाजिक और राजनीतिक बहिष्कार करने का निर्णय लिया है। अनुसूचित जाति समाज के द्वारा किया गया बहिष्कार का कारण रश्मि प्रकाश का अंतरजातीय विवाह है, जो समाज के द्वारा इसे समाजिक परंपरा के साथ एक खिलवाड़ माना जा रहा है। साथ ही समाज के विरूद्ध चुनौति बताया जा रहा। अनुसूचित जाति समाज की और से प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया गया कि इससे पुरे दलित समाज के युवक-युवतियों पर गलत प्रभाव पड़ रहा है। इसलिए समाज अपने सामाजिक व्यवस्था के अनुकूल निर्णय लेत हुए रश्मि प्रकाश, पुत्र वधु सत्यनन्द भोक्ता का सामाजिक वहिष्कार करने का निर्णय लेती है। जिसके तहत उनके घर परिवार से मरनी-जीनी, शादी-विवाह सहित सामाजिक और राजनैतिक कार्यों से समाज को दूर रहना है। साथ में अब से कोई दलित परिवार का सम्बन्ध इस परिवार से नहीं रखा जाएगा। साथ ही समाज को सूचित करते हुए कहा गया है कि दलित परिवार के किसी भी कार्यक्रम में हमारे समाज के लोगों को आने और जाने पर प्रतिबंधित किया जाता है।

लातेहार में छह बदमाश धराये, पांच हथियार जब्त

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

लातेहार : एसपी कुमार गौरव को मिली गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस ने छापेमारी कर अपराधियों के एक गैंग का उद्भेदन कर दिया। पुलिस ने गैंग के 6 अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया। इनके पास से चार देशी राइफल एक देसी रिवाल्वर कई गोलियां और नक्सलियों का वर्दी बरामद हुआ है। गिरफ्तार अपराधियों में मनिका के जुंगुर निवासी अपराधी अनिल यादव तथा जावेद अंसारी, सदर थाना के मानिकपुर निवासी सागर यादव, शिवनंदन यादव, लातेहार स्टेशन निवासी अखिलेश यादव तथा बालूमाथ रजवार निवासी मिथिलेश यादव शामिल हैं।

डीएसपी भरत राम ने बुधवार को पत्रकार वार्ता में बताया कि एसपी कुमार गौरव को गुप्त सूचना मिली थी कि मनिका थाना क्षेत्र के जुंगुर गांव का रहने वाला अपराधी अनिल यादव एक अलग प्रतिबंधित क्रियावादी उग्रवादी संगठन बनाकर क्षेत्र में दहशत फैला रहा है। अपराधियों के द्वारा लोगों को डरा-धमकाकर रंगदारी वसूली जा रही है। इस सूचना के बाद एसपी के निर्देश पर पुलिस की एक टीम बनाकर अपराधियों के खिलाफ छापेमारी की गयी।

इस दौरान पुलिस ने जुंगुर गांव के पास जंगल से अनिल यादव को गिरफ्तार कर लिया। अनिल यादव से जब पूछताछ की गई तो उसने अपने संगठन के अन्य सहयोगियों का भी नाम बताया। इसके बाद पुलिस ने अलग-अलग जगहों पर छापेमारी कर गिरोह के सभी 6 अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने अपराधियों की निशानदेही पर लातेहार सदर थाना क्षेत्र के मानिकपुरा गांव में छापेमारी कर अपराधियों के द्वारा छुपाए गए चार देशी राइफल, एक देसी रिवाल्वर, चार गोली, चितकबरा वर्दी समेत कई अन्य समान भी बरामद किया।

गया में ब्रह्मदेव प्रसाद की इनोवा गाड़ी के साथ भीषण हादसा, ड्राइवर की मौत, दो लोग गंभीर

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

मेदिनीनगर : बीती रात करीब 1 बजे एक गंभीर सड़क दुर्घटना में इनोवा गाड़ी की ट्रक से भीषण टक्कर हो गई। यह हादसा गया के पास स्थित ताराचंडी, बाराचट्टी थाना नामक स्थान पर हुआ। जब ओबीसी एकता अधिकार मंच के केंद्रीय अध्यक्ष और बिश्रामपुर विधानसभा के विधायक प्रत्याशी ब्रह्मदेव प्रसाद उर्फ बी.डी. प्रसाद, मंतोष ठाकुर और विजय शर्मा रांची से गया जा रहे थे। गाड़ी को एक तेज रफ्तार ट्रक ने जोरदार टक्कर मारी, जिससे गाड़ी के ड्राइवर विजय शर्मा की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई।

दुर्घटना में ब्रह्मदेव प्रसाद और मंतोष ठाकुर गंभीर रूप से घायल हो गए। मंतोष ठाकुर का हाथ और पैर टूट गया है और उन्हें गंभीर चोटें आई हैं। दोनों को तुरंत गया के रिम्स अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां ब्रह्मदेव प्रसाद की गंभीर स्थिति को देखते हुए उन्हें पटना रेफर कर दिया गया है। उनका इलाज जारी है और स्थिति नाजुक बनी हुई है।

ब्रह्मदेव प्रसाद, जो ओबीसी एकता अधिकार मंच के केंद्रीय अध्यक्ष होने के साथ-साथ बिश्रामपुर विधानसभा के विधायक प्रत्याशी भी हैं, इस क्षेत्र में बड़ा जनाधार है। उनकी लोकप्रियता को देखते हुए इस हादसे ने पूरे क्षेत्र को गहरे शोक में डाल दिया है। उनके समर्थक और स्थानीय लोग इस दुखद घटना के बाद उनके स्वास्थ्य को लेकर बेहद चिंतित हैं और उनके जल्द स्वस्थ होने की कामना कर रहे हैं।

इस हादसे के बाद पूरे क्षेत्र में शोक और चिंता की लहर दौड़ गई है। उनके परिवार और समर्थकों ने सरकार से इस हादसे की गहन जांच और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। विधायक प्रत्याशी के रूप में ब्रह्मदेव प्रसाद की कर्मठता और ओबीसी समुदाय के अधिकारों के लिए उनकी लगातार की गई आवाज ने उन्हें एक मजबूत नेता के रूप में स्थापित किया है।

महिला ने आत्महत्या का किया प्रयास

बालूमाथ : एकीकृत बालूमाथ प्रखंड क्षेत्र के बरियातू ग्राम में अपने सास की डांट से गुस्साई महिला ने फिनायल की गोली खाकर आत्महत्या करने का प्रयास किया । घटना के संबंध में मिली जानकारी के अनुसार महिला नीतू देवी 25 वर्ष पति पंकज शास्त्री ग्राम बारियातु निवासी बालूमाथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में सहिया दीदी में कार्यरत है। बुधबार को नीतू देवी को उसकी सास ने किसी बात को लेकर डांटा था।

लोक गायिका देवी के हिट गीत राजधानी पकड़ के आ जइयो पर जमकर झूमे दर्शक

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

चतरा : जिले के प्रतापपुर में दुर्गा पूजा के मौके पर प्रखंड के हाई स्कूल मैदान में मंगलवार की रात्री में सांस्कृति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रसिद्ध लोक गायिका देवी ने अपने सुपरहीट गाने से श्रोताओ को रातभर खुब झूमाया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि राजद नेत्री रश्मि प्रकाश व विशिष्ट अतिथि जिला अध्यक्ष नवलकिशोर यादव, मंत्री प्रतिनिधी भोला प्रसाद, राजद नेता विनोद भोक्ता, मुकेश भोक्ता, प्रखंड अध्यक्ष खेदु यादव, पूजा महासमिति के अध्यक्ष ऋषि कुमार ने संयुक्त रूप से फीता काट एवं दीप प्रज्जवलित कर शुभारंभ किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि ने कहा प्रतापपुर में भक्ति जागरण के आयोजन से लोगो में भक्ति भाव बढ़ती है पूजा-पाठ करने से धर्म के प्रति जागरूकता बढ़ती है प्रतापपुर में हमेशा इसी तरह के आयोजन होते रहे। दुर्गा पूजा महासमिति के कार्यक्रम को लेकर अभार व्यक्त किया है।

कार्यक्रम में देवी ने माता रानी के नीमिया के डाढ़ मईया भक्ति गीत के साथ शुभारंभ किया। उसके बाद उन्होने आईले मोरे राजा, सजन राजधानी पकड़ के आ जइयो समेत कई सुपरहीट गाने को प्रस्तुत किया। इस दौरान देवी के सुपरहीट गाने पर श्रोता रातभर झूमते तथा जमकर सराहना किया। कार्यक्रम के दौरान राज्य के श्रम नियोजन प्रशिक्षण सह कौशल विकास मंत्री ने कार्यक्रम में शिरकत किया। तथा महासमिति को बधाई दिया। महासमिति के लोगो ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि व अन्य लोगो को माता रानी की चुन्दरी व बुके देकर स्वागत किया। इस मौके पर अरूण यादव, जितेन्द्र सार्थक, राजन गुप्ता, संजय माथुर, आकाश कुमार, दिवाकर भाई, जगदीश यादव समेत महासमिति के सभी सदस्य मौजूद थे।

छह मुहान पर पुलिस ने चलाया सघन वाहन जांच अभियान

मेदिनीनगर : छः मोहान चौक पर सघन जॉच अभियान चलाया गया चार पहिया वाहन एवं दोपहिया तथा टेंपो का जांच किया गया जिसमें 03 ई रिक्शा एवं 01 सीएनजी टेंपो का सवारी गाड़ी तथा 01 मोटरसाइकिल वाहन को जप्त कर सुरक्षा हेतु शहर थाना में रखा गया है। और नो एंट्री में 04 ट्रैकों का फाइन हेतु परिवहन कार्यालय डाल्टनगंज भेजा गया है। आज परिवहन कार्यालय डाल्टनगंज पलामू से 02 ई रिक्शा सवारी गाड़ी टेंपो का चलन फाइंड राशि 4300एवं 01 टेंपो सीएनजी सवारी गाड़ी का चालान फाइन राशि3150 रुपया आया है । आज दिनांक 16 10.2024 को टोटल चालान फाइंड राशि 7450 रुपया आया है।

पर्व को ध्यान में रखते हुए प्रथम चरण के मतदान की तिथि को बदला जाए : राकेश पासवान

पलामू : मुख्य निर्वाचन आयुक्त नई दिल्ली से झारखंड जनक्रांति मोर्चा (ज) के राष्ट्रीय अध्यक्ष राकेश पासवान उपरोक्त विषय के संदर्भ में कहा है कि माह अक्टूबर एवं नवंबर त्योहारों से भरा पड़ा है। दिनांक 31 अक्टूबर को दीपावली, 2 नवंबर गोवर्धन पूजा, 3 नवंबर को भाई दूज एवं चित्रगुप्त पूजा,5 नवंबर से लेकर 8 नवंबर तक आस्था का महापर्व छठ पूजा, 13 नवंबर को प्रकाश पर्व, 15 नवंबर को गुरु पूर्णिमा मनाया जाता है। इस दौरान सभी लोग काफी अस्त-व्यस्त रहते हैं। आस्था का महापर्व होने की वजह से उपयुक्त परिस्थितियों को मद्देनजर रखते हुए आग्रह होगा कि झारखंड विधानसभा के प्रथम चरण के मतदान की तिथि को आगे बढ़ाने हेतु पुनः विचार किया जाए।

जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने सभी कोषांग को तेजी से कार्य पूरा करने का दिया निर्देश

धनबाद। जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त माधवी मिश्रा की अध्यक्षता में समाहरणालय स्थित सभागार में आगामी विधानसभा चुनाव-2024 की तैयारियों को लेकर सभी कोषांग के वरीय पदाधिकारी एवं नोडल पदाधिकारी के साथ बैठक की गई।बैठक के दौरान उन्होंने सभी कोषांग के वरीय एवं नोडल पदाधिकारी से आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियों से संबंधित जानकारी ली। साथ ही सभी कार्य को तेजी से पूरा करने का निर्देश दिया।उन्होंने कहा कि सभी कोषांग के पदाधिकारी अपने अपने कोषांग के कर्मियों के साथ बैठक कर कोषांग से संबंधित कार्यों एवं दायित्वों पर विशेष फोकस करें।वही कार्मिक कोषांग को मैनपावर की आवश्यकता विधानसभा वार तैयार करने, जिस मतदान केंद्र में 1200 से अधिक वोटर है वहां अतिरिक्त पोलिंग ऑफिसर की प्रतिनियुक्ति करने, प्रशिक्षण शेड्यूल तैयार करने, मेडिकल बोर्ड का गठन करने, ईवीएम रेंडमाइजेशन,डिस्पैच, काउंटिंग, पोस्टल बैलट,वाहनों की आवश्यकता, मटेरियल,

एक्सपेंडिचर मॉनिटरिंग, ऑब्जर्वर सेल सहित अन्य विषय पर आवश्यक दिशा निर्देश दिए।जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने मेडिकल कोषांग को सेक्टर ऑफिसर, जोनल मजिस्ट्रेट, बीएलओ तथा मतदान केंद्रों के लिए मेडिकल किट तैयार कर मटेरियल कोषांग को समय पर सुपुर्द करने का निर्देश दिया।मौके पर उप विकास आयुक्त सादात अनवर, नगर आयुक्त रविराज शर्मा, 38 सिंदरी विधानसभा के निर्वाची पदाधिकारी सह अपर समाहर्ता विनोद कुमार, 39 निरसा विधानसभा के निर्वाची पदाधिकारी सह एडीएम सप्लाई जियाउल अंसारी, 40 धनबाद विधानसभा के निर्वाची पदाधिकारी सह एसडीओ राजेश कुमार, 41 झरिया विधानसभा के निर्वाची पदाधिकारी सह एडीएम लॉ एंड ऑर्डर पीयूष सिन्हा, 42 टुंडी विधानसभा के निर्वाची पदाधिकारी सह एलआरडीसी दिलीप कुमार महतो, 43 बाघमारा विधानसभा के निर्वाची पदाधिकारी सह निदेशक डीआरडीए राजीव रंजन, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी सुनील कुमार सिंह, राज्य कर उपायुक्त धनबाद प्रमंडल ग़ालिब अंसारी, जिला आपूर्ति पदाधिकारी प्रदीप शुक्ला, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी अनिता कुजूर समेत विभिन्न कोषांग के वरीय पदाधिकारी मौजूद रहें।

एम जी एम स्कूल बोकारो के खिलाड़ियों को दी गई सरकार द्वारा 3,60,000 रुपये का छात्रवृत्ति

बोकारो। एम जी एम स्कूल बोकारो के खिलाड़ियों ने पिछले साल छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में में हुए एस जी एफ आई नेशनल प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन कर एक सिल्वर पदक के साथ 6 ब्रोंज पदक अपने नाम किया, जिसमें झारखंड की नई खेल नीति 2022 के तहत खिलाड़ियों को झारखंड सरकार के द्वारा स्कॉलरशिप प्रदान की गईद्य स्कॉलरशिप प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों के नाम है - साक्षी श्रीवास्तव कक्षा 12वीं छात्रवृत्ति की राशि 60,000, जेबा नाज कक्षा 12वीं छात्रवृत्ति की राशि 50,000 ,प्रियांशु राज सिंह कक्षा 11वीं छात्रवृत्ति की राशि 50,000 ,हर्षित कुमार कक्षा 12वीं छात्रवृत्ति की राशि 50,000, वेदांत भरद्वाज कक्षा दसवीं छात्रवृत्ति की राशि 50,000, तृप्ति झा कक्षा दसवीं छात्रवृत्ति की राशि 50,000 एवं एंजेल रानी कक्षा दसवीं छात्रवृत्ति की राशि 50,000

स्कॉलरशिप के रूप में दी गई द्य स्कॉलरशिप मिलने पर खिलाड़ियों ने झारखंड सरकार के प्रति प्रसन्नता जाहिर करते हुए इसे एक सराहनीय कदम एवं खिलाड़ियों के मनोबल को बढ़ाने के लिए सही बताया एम जी एम स्कूल के खेल शिक्षक राजीव सिंह ने बताया कि इस बार भी एम जी एम स्कूल से जुडो एवं गतका खेल में 21 खिलाड़ियों का चयन एस जी एफ आई नेशनल चैंपियनशिप के लिए हुआ है और प्रशिक्षक ने उम्मीद जताई कि खिलाड़ी पिछले बार से भी ज्यादा बेहतर करेंगेद्य इस मौके पर स्कूल के प्राचार्य फादर डॉक्टर जोशी वर्गीस ने खिलाड़ियों के इस प्रदर्शन और उनके स्कॉलरशिप मिलने पर खुशी जताई द्य वहीं स्कूल के उपप्राचार्या रेखा बनर्जी और एकेडमिक डायरेक्टर जॉर्ज जोसेफ एवं हेडमिस्ट्रेस सपना जोशी ने खिलाड़ियों के उज्जवल भविष्य के लिए ढेर सारी शुभकामनाएं दी द्य

10 दिवसीय तारकेश्वर महतो ग्रामीण फुटबॉल प्रतियोगिता 18 से 27 अक्टुबर तक

ऊपरघाट(बेरमो)। नावाडीह प्रखंड के ऊपरघाट पिलपिलो में 39 वां तारकेश्वर महतो ग्रामीण फुटबॉल प्रतियोगिता 18 अक्टुबर से 27 अक्टुबर तक होगी। उद्घाटनकर्ता पैंक थाना प्रभारी अनिल लिंडा,स्थानीय मुखिया ललिता देवी, किंग कोबरा सुप्रीमो श्याम सुंदर महतो,पूर्व उपमुखिया संतोष महतो,उपमुखिया सुनीता देवी,उमेश कुमार उजागर,संजय गिरि,रामचंद्र कुमार अंजना, किशोर कुमार महतो, कमल प्रसाद महतो, प्रेमचंद महतो, बीरेंद्र महतो,भैरो महतो, देवनारायण महतो, निर्मल महतो,जितेंद्र महतो,डॉ.कुलेश्वर महतो, गणेश महतो, शंभु महतो,शिवदयाल महतो, इंद्रदेव महतो, भीम कुमार महतो,रोहित महतो,मुरारी महतो,राज कुमार महतो, खेमलाल महतो, सिंटू कुमार,कुलेश्वर महतो,सुरेश महतो, दीपेश महतो,तुलसी डीपी किंग, एवं अन्य होंगे। इस प्रतियोगिता के आयोजक मनोज कुमार महतो ने बताया कि पिछले 38 वर्षों से ग्राम पिलपिलो (ऊपरघाट) में ग्रामीण फुटबॉल प्रतियोगिता एवं महिला फुटबॉल खेल तथा झारखंडी भाषा संस्कृति को बचाने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन लगातार किया जा रहा है। जिसमें आप सबों की सहभागिता होती है। यह फुटबॉल प्रतियोगिता प्रत्येक वर्ष अक्टुबर माह में आयोजित होती है। प्रथम विजेता व उपविजेता टीम को 21 हजार नगद एवं बड़ा कप एवं 15 हजार नगद तथा छोटा कप देकर सम्मानित किया जाएगा। इस प्रतियोगिता का प्रवेश शुल्क 11 सौ रुपए मात्र रखा गया है। इस प्रतियोगिता के नियम एवं शर्तें। यह खेल 20- 20 मिनट का होगा, और इस खेल में शुट- बुट होना अनिवार्य है। इस खेल में रेफरी का निर्णय सर्वमान्य होगा। और खेल में फीफा का सभी नियम लागु है। इस खेल में चोट घाट लगने पर कमिटी जिम्मेदार नहीं होगा। यह खेल चार ग्रुप ,क्ष्ट,ष्ठ में होगा। तथा खेला हुआ खिलाड़ी अन्य टीमों से नही खेल सकता है।

चोरी के मामले में दो युवक गिरफ्तार

बोकारो। बालीडीह थाना पुलिस ने गोविंद मार्केट स्थित किराना की दुकान से चोरी करने वाले दो युवकों को गिरफ्तार किया है। साथ ही चोरी गए समानो को भी बरामद करने में सफलता मिली है। गिरफ्तार दोनों युवक बलीडीह थाना क्षेत्र के रहने वाले बताए जा रहे हैं। बताया जाता है कि संबंधित थाना क्षेत्र निवासी सोनालाल साव की गोविन्द मार्केट स्थित एक किराना कि दुकान है जिसमें विगत दिनों अज्ञात चोरों द्वारा चोरी की घटना को अंजाम दिया गया था। जिसकी प्राथमिक की संबंधित थाने में सोनेलाल साव ने दर्ज कराई थी। पुलिस ने इस मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए अपने सूचना तंत्र के आधार पर दोनों चोरों को गिरफ्तार करने में सफलता मिली है। गिरफ्तार दोनों चोरों का पुराना आपराधिक इतिहास रहा है।

झारखंड पार्टी 20 सीटों पर लड़ेगी चुनाव, पांच उम्मीदवारों की घोषणा

संवाददाता रांची । झारखंड पार्टी राज्य के 20 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ेगी। पार्टी प्रमुख एनोस एक्का ने बुधवार को पांच सीटों के लिए उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है। रांची के कार्निवाल बैंक्वेट हॉल में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में बताया कि मनोहरपुर से महेंद्र जमुदा, सिमडेगा से आयरिन एक्का, चाईबासा से कोलंबस हांसदा, कांके से अनिल कुमार पासवान और कोलेबिरा से संदेश एक्का का उम्मीदवार बनाया गया है।

एनोस एक्का ने कहा कि झारखंड पार्टी जल, जंगल, जमीन के मुद्दों पर ही शुरू से राजनीति करती रही है। उन्होंने बताया कि दो दिनों के बाद बचे हुए सीटों पर उम्मीदवारों की घोषणा कर दी जाएगी। उन्होंने कहा कि झारखंड के हित की बात करने वाले और समान विचारधारा वाले दलों से भी गठबंधन किया जाएगा। जो भी नई सरकार बनेगी, उसमें झारखंड पार्टी की भूमिका अहम होगी। झारखंड पार्टी राज्य में पलायन, पेयजल, रोजगार सहित दूसरे मुद्दों का निदान करेगी।

वहीं दूसरी ओर कार्निवाल बैंक्वेट हॉल में आयोजित कार्यक्रम में पूर्व विधायक स्वर्गीय रमेश सिंह मुंडा के बड़े पुत्र राजकुमार मुंडा ने अपने समर्थकों के साथ झारखंड पार्टी में शामिल हुए।

पीएम मोदी आज अंतर्राष्ट्रीय अभिधम्म दिवस समारोह में होंगे शामिल

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 17 अक्टूबर को विज्ञान भवन नई दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय अभिधम्म दिवस और पाली को शास्त्रीय भाषा के रूप में मान्यता देने के समारोह में भाग लेंगे। प्रधानमंत्री मोदी अभिधम्म दिवस के महत्व, पाली भाषा के महत्व और बुद्ध धम्म की समृद्ध विरासत के संरक्षण और प्रोत्साहन के लिए सरकार के प्रयासों पर अपने विचार रखेंगे। इस समारोह को केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत विशेष रूप से संबोधित करेंगे। संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू भी इस समारोह में मौजूद रहेंगे। अभिधम्म दिवस, अभिधम्म की शिक्षा देने के बाद भगवान बुद्ध के दिव्य लोक से अवतरण की याद दिलाता है। हाल ही में पाली सहित पांच भाषाओं को शास्त्रीय भाषा के रूप में मान्यता मिलने से इस वर्ष के अभिधम्म दिवस समारोह का महत्व बढ़ गया है क्योंकि अभिधम्म पर भगवान बुद्ध की शिक्षाएं मूल रूप से पाली भाषा में उपलब्ध हैं। भारत सरकार और अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय अभिधम्म दिवस समारोह में 14 देशों के शिक्षाविदों और भिक्षुओं तथा भारत भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों से बुद्ध धम्म पर महत्वपूर्ण संख्या में युवा विशेषज्ञ भाग लेंगे। बीते 5 अक्टूबर को भिक्खु संघ के सदस्यों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात करके पाली को शास्त्रीय भाषा के रूप में मान्यता देने के लिए आभार जताया था। इस दौरान बौद्ध नेताओं ने पाली में कुछ छंद भी पीएम मोदी को सुनाए थे। पाली भाषा बौद्धों के लिए पवित्र भाषा है। यह थेरवाद बौद्ध धर्म ग्रंथों की भाषा है, जिसे पाली कैनन के रूप में जाना जाता है। इसमें बुद्ध की मुख्य शिक्षाएं शामिल हैं। यह बौद्ध धर्म के अनुयायियों को ऐतिहासिक जड़ों से जोड़ता है। इससे उन्हें अस्थायित्व, दुख और स्व जैसी प्रमुख अवधारणाओं की समझ मिलती है। बुद्ध ने अपने उपदेश पाली में दिए और उनके अनुयायियों ने इसका इस्तेमाल दुनिया भर में उनकी शिक्षाओं को फैलाने के लिए किया।

शहरिया को हराकर बेलरगडा की टीम बनी विजेता

ऊपरघाट(बेरमो)। नावाडीह प्रखंड ऊपरघाट कंजकीरो पंचायत स्थित पिपराडीह में दो दिवसीय 15 वां रेवतलाल महतो डे नाइट फुटबॉल टूर्नामेंट का समापन मंगलवार को हो गया।मैच का उद्घाटन कंजकीरो पंचायत मुखिया ललिता देवी, मनोज कुमार महतो, भीम महतो, सीताराम उर्फ बादल ने खिलाडियों से परिचय प्राप्त कर तथा फुटबॉल पर किक मार कर मैच का शुरुवात किया। प्रतियोगिता का फाइनल मैच शहरिया बनाम बेलरगड़ा के बीच खेला गया। 30 मिनट के इस फाइनल खेल में दोनों टीमों की खिलाडियों ने खेल में अच्छा प्रदर्शन करते हुए बराबरी पर रही। पेनाल्टी शूटआउट में बेलरगाड़ा की टीम 4-3 से विजय हुई। पुरस्कार स्वरूप विजेता टीम को हीरो स्पलेंडर बाइक व उपविजेता टीम को हीरो एचएफ डीलक्स बाइक देकर सम्मानित किया। वही पर सेमीफाइनल में हारने वाली टीमों को 7-7 हजार देकर सम्मानित किया गया। मुखिया ललिता देवी ने कहा कि फुटबॉल खेल में असीम संभावनाएं हैं। युवाओं नशे से दूर रहकर खेल के प्रति अपना रुचि बढ़ाएं। वही पर इस टूर्नामेंट के आयोजन कर्ता रेवतलाल महतो ने कहा कि खेल हमारे जीवन में अनुशासन और समर्पण का विकास करता है। युवा खिलाड़ियों को अपने लक्ष्य के प्रति निरंतर प्रयासरत रहना चाहिए, क्योंकि सफलता केवल मेहनत और समर्पण से ही प्राप्त होती है। इस तरह के टूर्नामेंट नई पीढ़ी के खेल कौशल को निखारने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। मौके पर संतोष महतो, प्रदीप महतो, श्याम सुंदर महतो, निर्मल महतो,अशोक महतो, दीपनारायण महतो, रीतलाल महतो, योगेंद्र महतो, रोहित प्रजापति, छत्रुराम महतो,जितेंद्र महतो, डालेश्वर महतो,नारायण प्रजापति, चंद्रदेव महतो समेत हजारों खेल प्रेमी मौजूद थे।

एनएफडीबी के अधिकारियों ने किया तिलैया डैम का भ्रमण

केज कल्चर से मत्स्यपालन का लिया जायजा

रांची। राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड (एनएफडीबी) के अधिकारियों के दल ने बुधवार को हजारीबाग के तिलैया डैम का भ्रमण किया। टीम में शामिल एनएफडीबी के वैज्ञानिक एके बोहरा, विपिन चन्द्र नौटियाल व डिप्टी डायरेक्टर संजय गुप्ता ने तिलैया डैम में मत्स्य पालकों द्वारा किए जा रहे केज कल्चर से मत्स्य पालन का जायजा लिया। मौके पर एनएफडीबी के अधिकारियों ने मत्स्य पालकों को अधिक से अधिक मछली उत्पादन करने के गुर बताए और उनका उत्साहवर्धन किया। एनएफडीबी के अधिकारियों के साथ हजारीबाग के जिला मत्स्य पदाधिकारी प्रदीप कुमार भी मौजूद थे। गौरतलब है कि प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के अंतर्गत झारखंड में

संचालित विभिन्न योजनाओं की अद्यतन स्थिति से अवगत होने और मत्स्य पालकों को अधिक से अधिक मछली उत्पादन के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से एनएफडीबी के अधिकारियों द्वारा झारखंड के विभिन्न स्थलों का दौरा जारी है। वहीं, मत्स्य निदेशालय (झारखंड) के निदेशक डॉ. एचएन द्विवेदी के नेतृत्व में झारखंड को मछली उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के निरंतर प्रयास जारी हैं। विभागीय सूत्रों के मुताबिक डॉ.द्विवेदी व अन्य अधिकारियों द्वारा मत्स्य कृषकों को राज्य व केंद्र संपोषित योजनाओं का शत-प्रतिशत लाभ दिलाने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया जा रहा है।

दिल्ली सरकार ने बिजली कनेक्शन के लिए डीडीए से एनओसी लेने की अनिवार्यता खत्म की

नई दिल्ली, एजेंसी। राजधानी दिल्ली की 1731 कच्ची कॉलोनियों में रहने वाले लोगों को दिल्ली सरकार की तरफ से बड़ी राहत दी गई है। बिजली कनेक्शन पाने के लिए अब उन्हें डीडीए अधिकारियों के चक्कर नहीं काटने होंगे। दिल्ली सरकार ने बिजली कनेक्शन के लिए डीडीए से एनओसी लेने की अनिवार्यता को खत्म कर दिया है। इसकी जानकारी बुधवार को मुख्यमंत्री आतिशी ने दी। उन्होंने कहा कि इसे लेकर सभी बिजली कंपनियों को निर्देश जारी कर दिए गए हैं। मुख्यमंत्री आतिशी ने कहा कि अनाधिकृत कॉलोनियों में रहने वाले लाखों लोग पहले सरकार की प्राथमिकता में नहीं थे। उन्हें सुविधाएं देने में सरकार पीछे रहती थी। लेकिन दिल्ली में अरविंद केजरीवाल की सरकार बनने के बाद से सभी कच्ची कॉलोनियों में जमकर विकास कार्य किए गए हैं। दिल्ली सरकार ने कच्ची कॉलोनियों में सड़कें बनवाई, स्वच्छ पानी पहुंचाने के लिए पाइप लाइन बिछाई और सीवर कनेक्शन के लिए पाइप लाइन बिछाई। दिल्ली सरकार ने यह प्रयास किया कि उन्हें परेशानी न हो। आतिशी ने कहा कि पिछले कुछ समय से इन 1731 कच्ची कॉलोनियों में रहने वाले लोगों को बिजली कनेक्शन लेने में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

अजीज शाह बाबा (रहम) का 87वां वार्षिक उर्स चादरपोशी के साथ हुआ शुरू

लोयाबाद। लोयाबाद में कौमी एकता के प्रतीक हजरत सैयद अब्दुल अजीज शाह बाबा (रहम) का 87वां वार्षिक उर्स बुधवार को चादरपोशी के साथ धूमधाम से शुरू हुआ। इस सालाना आयोजन में विभिन्न संप्रदायों के लोग एकत्रित होकर जुलूस में शामिल हुए, जो लोयाबाद मोड स्थित मुस्लिम कमेटी के नेतृत्व में निकाला गया। जुलूस में कमिटी के अध्यक्ष इम्तियाज अहमद और महामंत्री मो असलम मंसूरी ने बाबा की चादर को श्रद्धापूर्वक अपने सिर पर रखा और समारोह में भाग लिया। जुलूस के दौरान ÷गौस का दामन नहीं छोड़ेंगे÷, ÷ख्वाजा का दामन नहीं छोड़ेंगे÷, ÷अजीज बाबा का दामन नहीं छोड़ेंगे÷ जैसे नारों से पूरा क्षेत्र गूंज उठा। जुलूस लोयाबाद मोड़ से शुरू होकर लोयाबाद 6 नंबर होते हुए बाबा

की मजार पर पहुँचा, जहाँ भक्तों ने जोश-खरोश से चादरपोशी की। फातेहा खानी के बाद, देश और राज्य की एकता, अखंडता, तरक्की, और सलामती के लिए सामूहिक दुआ भी मांगी गई। सरकारी चादरपोशी के साथ उर्स मेला भी शुरू हुआ, जिसका उद्घाटन लोयाबाद परियोजना पदाधिकारी नारायण प्रसाद ने किया। उन्होंने बताया कि बाबा के प्रति उनकी श्रद्धा है और वे नियमित रूप से इस दरबार में आते रहते हैं, साथ ही कोयलांचल के मजदूरों की भलाई की कामना की। छह दिवसीय मेले में आकर्षक झूलों और मीना बाजार के अलावा, 18 और 20 अक्टूबर को शानदार कव्वाली कार्यक्रम की भी योजना है।मौके पर बिजेंदर पासवान, जय जयप्रकाश पांडे, रमाशंकर महतो,मुकेश पासवान, गणेश शाह, मनोज कुशवाहा,निसार अहमद, गुलाम जिलानी,अनवर हुसैन, मोहम्मद आजाद अंसारी, बशीर बाबा समेत अन्य लोग शामिल थे।

देशी कट्टा और कारतुस के साथ एक युवक गिरफ्तार

शांति और निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए पुलिस प्रशासन तैयार : मनोज स्वर्गीयारी

बोकारो ÷ सिटी थाना पुलिस ने गस्ती के दौरान एक युवक को देसी कटा व दो जिंदा कारतूस के साथ गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। इस घटना की पुष्टि करते हुए जिले के नए पुलिस कप्तान मनोज स्वर्गीयारी ने प्रेस वार्ता के माध्यम से बताया कि संध्या गस्ती में भ्रमणशील सिटी थाना के पुअनि0 बिरेन्द्र खाखा को गुप्त सुचना मिला कि को-ऑपरेटिव मोड़ के आसपास एक काला रंग का टी-शर्ट पहना हुआ व्यक्ति अपने कमर में एक देशी कट्टा लेकर घुम रहा है। जो कभी भी अप्रिय घटना को अंजाम दे सकता है। सुचना पर त्वरित कार्रवाई करते हुए पुलिस उपाधीक्षक नगर बोकारो के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया। गठित टीम के द्वारा उक्त व्यक्ति का खोजबीन एवं गिरफ्तारी हेतु को-ऑपरेटिव स्थित शराब दुकान के

पास पहुंचे तो देखे कि शराब दुकान के पास खड़ा एक व्यक्ति जो काला रंग का टी-शर्ट एवं जिन्स पहने हुये है। पुलिस बल को अपने तरफ आते देखकर तेजी से सेक्टर 2 ए की तरफ भाग रहा है। सशस्त्र बल एवं गठित टीम के पदाधिकारी के द्वारा उस व्यक्ति को खदेड़कर पकड़ा गया। पकड़ा गया व्यक्ति से पूछताछ करने पर अपना नाम प्रमोद शर्मा पिता स्व0 योगेश्वर शर्मा पता सेक्टर 02/बी0 आवास संख्या 2 डैस 412 का रहने वाला बताया जा रहा है। पकड़े गये व्यक्ति की तलाशी लेने पर उसके कमर के दाहिने साईड के पैन्ट में खोसा हुआ एक देशी कट्टा, जिसके बैरल में 8 एमएम का जिन्दा कारतूस एवं बाये पैकेट से 8 द्वद्व के दो जिन्दा कारतूस एवं 8 एमएम के मिस फायर दो कारतूस बरामद किया। इस छापामारी दल में पुअनि विरेन्द्र खाखा,पुआनि गुलटन मिस्त्री, सआनि उमेश कुमार सिंह के अलावा कई अधिकारी शामिल थे.

सात्विक प्रोडक्शन प्राइवेट लिमिटेड रांची झारखंड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक निभा रंजन सुमन द्वारा ग्राउण्डड फलोर, कुशवाहा कॉम्पलेक्स, बूटी मोड़, रांची से प्रकाशित तथा शिवासाई पब्लिकेशन प्राईवेट लिमिटेड कांटीटांड, नियर टेंडर बगीचा, रातु, रांची - 835222 झारखंड से मुद्रित। **संपादकः** निभा रंजन सुमन **रिपोर्टिंग-** 70337 77771 **विज्ञापन-** 9546277001, मनोज कुमार कपरदारः 977117 7585, फोन नंबर 0651 2913184 ईमेल : rexpressadvt@gmail.com, ranchiexpresshindi@ gmail.com(पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार) सभी प्रकार के विवादों का निपटारा रांची व्यवहार न्यायालय के क्षेत्राधिकार के अधीन किया जाएगा। आर एन आई नं. 4244/ 63